# जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का पाक्षिक मुखपत्र

नवम्बर २०१७ द्वितीय पक्ष पृष्ठः ५२ मूल्यः ७:०० रुपये


परस्परोपग्रहो जीवानाम्

जैन दिवाकर पूज्य श्री चौथमल जी महाराज साहब
स्मृति दिवस २७ नवम्बर

राष्ट्रसंत पूज्य आचार्य श्री आनन्द ऋषि जी म.सा.
दीक्षा दिवस २६ नवम्बर

युवाचार्य पूज्य श्री मिश्रीमल जी म. सा. 'मधुकर'
जन्म दिवस २ दिसम्बर

पूज्य उपाध्याय श्री कन्हैया लाल जी म.सा. 'कमल'
स्मृति दिवस ८ दिसम्बर

मेवाड़ प्रवर्तक पूज्य श्री अम्बालाल जी म.सा.
दीक्षा दिवस २६ नवम्बर

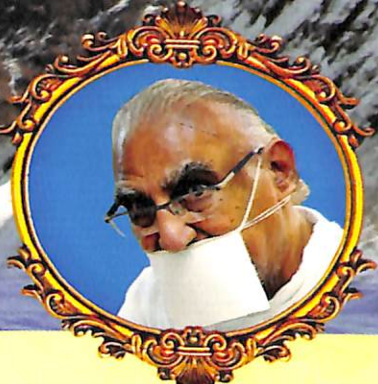

श्रमण संघीय महामंत्री पूज्य श्री सौभाग्य मुनि जी 'कुमुद'
जन्म दिवस २९ नवम्बर

इन दिव्य विभूति संतों ने उपकार किया हम पर इतना,
जितना की हिमालय है ऊँचा, सागर जल गहरा है जितना।
हम इनके गुण गाकर "जय-जय" से, दशों दिशाऐं गुंजा दें,
यह श्रद्धा भाव अलौकिक रख, सोचो सुख पाऐंगे कितना?

## मानवता के हिम शिखर पूज्य प्रवर महासंतों को शत्-शत् प्रणाम

# श्रमण संघ एवं जैन कॉन्फ्रेंस की धार्मिक सामाजिक सचित्र गतिविधियाँ

हैदराबाद में पू. उपाध्याय श्री प्रवीणऋषि जी म.सा. के सान्निध्य में जैन कॉन्फ्रेंस के पदाधिकारीगण

अहमदाबाद में लोकमान्य संत पू. श्री रूपचन्द्र जी म. सा. 'रजत' की सुखसाता पूछते हुए जैन कॉन्फ्रेंस के पदाधिकारीगण

बैंगलोर में पू. उपाध्याय डॉ. विशाल मुनि जी म.सा., तपस्वी श्री सुमतिप्रकाश जी म. आदि ठाणा के सान्निध्य में जैन कॉन्फ्रेंस के पदाधिकारीगण

पू. प्रवर्तक श्री कुन्दन ऋषि जी म. सा. के सान्निध्य में पू. श्री प्रशांतऋषि जी का सम्मान करते हुए जैन कॉन्फ्रेंस के पदाधिकारी

पू. महासती श्री मधुरा देवी जी म. की पुण्य तिथि पर आयोजित में जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलाल जी चोपड़ा व अन्य

श्रमण संघीय मंत्री पू. श्री कमलमुनि जी म. 'कमलेश' आदि ठाणा की विहार यात्रा एवं राजकीय अतिथि सम्मान

पूना में राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. अशोक पगारिया जी की 'यश गाथा' का लोकार्पण करते हुए जैन कॉन्फ्रेंस के पदाधिकारीगण

राहता महाराष्ट्र में पू. श्री परागमुनि जी म. आदि ठाणा के सान्निध्य में 'सरित सुगन्धा' जीवनी का लोकार्पण

# जैन प्रकाश

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस का पाक्षिक मुखपत्र

श्रमणसंघ निर्देशः जैन धर्म प्रचारकः, समाजोन्नतये नित्यं, जैन प्रकाश उद्यतः।
स्थानकवासिजैनानां कॉन्फ्रेंसनामविश्रुता, समाजोत्थानकार्येषु संस्थेयमस्ति तत्परा।।

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

वर्ष-60 अंक-22 नवम्बर 2017 द्वितीय पक्ष 23-24 नवम्बर मूल्य एक प्रति 7 रुपये



प्रधान सम्पादक

अशोककुमार एन. पगारिया जैन

सम्पादन सहयोगी

शेर सिंह जैन

बालचंद खरवड़ जैन

केन्द्रीय कार्यालय

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस नई दिल्ली

जैन भवन

12, शहीद भगत सिंह मार्ग
गोल मार्केट, नई दिल्ली-110 001

दूरभाषः 011 - 23363729, 23365420

फैक्स : 011 - 23344380

E - mail
aissjc1906@gmail.com

Website
www.jainconference.org


*जैन कॉन्फ्रेंस की आजीवन सदस्यता हेतु शुल्क*

| | |
|---|---|
| संस्थागत | रु. 750/- |
| व्यक्तिगत | रु. 1000/- |
| पति-पत्नी के लिए | रु. 1500/- |
| जैन प्रकाश हेतु आजीवन सदस्यता | |
| 12 वर्ष | रु. 1000/- |

## अनुक्रमणिका


| | | |
|---|---|---|
| सम्पादकीय | श्री अशोककुमार एन. पगारिया जैन | 07 |
| अध्यक्षीय उद्गार | श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन | 09 |
| चातुर्मासिक प्रतिक्रमण | आचार्य सम्राट पू. डॉ. शिवमुनि जी म. | 10 |
| पारस पत्थर कहा है? | पू. श्री रवीन्द्र मुनि जी म. | 11 |
| चातुर्मास की सफलता ... | पू. श्री शिरीष मुनि जी म. | 13 |
| अठारह पाप और परिणाम | पू. श्री जितेन्द्र मुनि जी म. | 14 |
| भाई की दक्षिणा | पू. श्री पुष्पेन्द्र मुनि जी म. | 15 |
| एक अमिट व्यक्तित्व ... | पू. श्री विजयश्री जी म. 'आर्या' | 16 |
| धर्म प्रचार का सुलभ ... | श्री अविनाश चोरड़िया जैन | 17 |
| हमारे प्रिय गुरुदेव ... | श्री बालचंद खरवड़ जैन | 19 |
| GST वस्तु एवं सेवा कर ... | डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन | 21 |
| युग निर्माता दो महापुरुषों ... | श्री पारस मोदी जैन | 22 |
| जैन मुनि चर्या ... | श्री शेर सिंह जैन | 24 |
| जन्मजात साधुत्व से ... | श्री मोहनलाल बी. लोढ़ा जैन | 26 |
| मृत्यु को महोत्सव ... | श्री लादूलाल बाफना जैन | 28 |
| श्रद्धा ही सही कसौटी | श्री अतुल जैन | 29 |
| जैन दिवाकर जी ... | श्री वीरेन्द्र कुमार धाकड़ जैन | 30 |
| आचार्यश्री वृद्धिवादी ... | श्री हुकमचंद जैन 'मेघ' | 31 |
| वास्तु एवं पर्यावरण ... | श्री मनोज जैन | 33 |
| समाचार प्रकाश | | 34 |
| शोक समाचार | | 49 |



**सम्पादक एवं जैन कॉन्फ्रेंस का लेखक के विचारों से सहमत होना अनिवार्य नहीं है। कृपया मौलिक विचार ही प्रेषित करें। किसी लेखक या पुस्तक से ली गई सामग्री का आभार अवश्य प्रकट करें। लेख एक पृष्ठ तक सीमित रखें तथा अपना नाम, पता एवं मोबाईल नंबर अवश्य लिखें। समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र नई दिल्ली होगा।**

# श्रमण संघीय पदाधिकारी मुनिराजों के नाम

**श्रमण संघ के चतुर्थ पट्टधर युग प्रधान, आगम अतिधन्वा, आचार्य सम्राट् डॉ. श्री शिवमुनि जी महाराज**

**युवाचार्य श्री महेन्द्र ऋषि जी महाराज**

**उपाध्याय मण्डलः** श्री विशाल मुनि जी महाराज 'वाचनाचार्य'
श्री मूलचंद जी महाराज
श्री रमेश मुनि जी महाराज
श्री जितेन्द्र मुनि जी महाराज
श्री प्रवीण ऋषि जी महाराज
श्री रवीन्द्र मुनि जी महाराज

**प्रवर्तक मण्डलः** श्री रूपचंद जी महाराज 'रजत'
श्री रमेश मुनि जी महाराज
श्री कुन्दन ऋषि जी महाराज
श्री सुमन मुनि जी महाराज
श्री रतन मुनि जी महाराज
श्री मदन मुनि जी महाराज
श्री प्रकाश मुनि जी महाराज 'निर्भय'
डॉ. श्री राजेन्द्र मुनि जी महाराज

**महामंत्री -** श्री सौभाग्य मुनि जी महाराज 'कुमुद'

**मंत्री मण्डलः** श्री शिरीष मुनि जी महाराज (शिवाचार्य मुख्य सचिव)
श्री आशीष मुनि जी महाराज
श्री कमल मुनि जी महाराज 'कमलेश'

**सलाहकार मण्डलः** श्री सुमतिप्रकाश मुनि जी महाराज
श्री सहज मुनि जी महाराज
श्री सुकन मुनि जी महाराज
श्री सुरेश मुनि जी महाराज 'शास्त्री'
श्री तारक ऋषि जी महाराज
श्री रमणीक मुनि जी महाराज
श्री दिनेश मुनि जी महाराज
श्री विनय मुनि जी महाराज 'भीम'
श्री राम मुनि जी महाराज 'निर्भय'

**प्रवर्तिनी मण्डलः** श्री ज्ञानप्रभा जी महाराज
श्री चंदना जी महाराज
श्री सुधा जी महाराज
श्री सुप्रभा जी महाराज
श्री सरिता जी महाराज

# श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली

## विश्वस्त मण्डल (2011-2017)

1. श्री केसरीमल बुरड़ जैन, बैंगलोर - चेयरमैन
2. श्री कांतिलाल जैन, मुंबई - सदस्य
3. श्री नेमीचंद चोपड़ा जैन, पाली - सदस्य
4. श्री राजेन्द्र कीमती जैन, हैदराबाद - सदस्य
5. श्री राजेन्द्र प्रसाद कोठारी जैन, बैंगलोर - सदस्य
6. श्री शेर सिंह जैन, दिल्ली - सदस्य
7. श्री चन्दनमल चोरड़िया जैन, इन्दौर - सदस्य
8. श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन, नासिक - सदस्य
9. श्री पारस छाजेड़ जैन, मुंबई - सदस्य
10. श्री रमेश चंद जैन (काहनी), दिल्ली - सदस्य

पदेन सदस्य -

11. श्री अविनाश चोरड़िया जैन, दिल्ली - पदेन सदस्य
12. श्री बालचंद खरवड़ जैन, मुंबई - पदेन सदस्य
13. श्री नेमनाथ जैन, इन्दौर - पदेन सदस्य
14. श्री रमेश भण्डारी जैन, इन्दौर - पदेन सदस्य
15. डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन, पुणे - पदेन सदस्य

## श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के पदाधिकारीगण ( वर्ष 2016-2018 )

| | एस.टी.डी. | दूरभाष कार्यालय | दूरभाष निवास | मोवाइल | फैक्स |
|---|---|---|---|---|---|
| **राष्ट्रीय अध्यक्ष :** | | | | 09423962818 | |
| **श्री मोहनलाल चोपड़ा जैन,** नाशिक | 0253 | 2461546, 2465569 | 2460026, 2461546 | 09423963100 | 2461546 |
| **निवर्तमान अध्यक्ष :** | | | | | |
| **श्री नेमनाथ जैन,** इंदौर | 0731 | 401157, 4011111 | | 09303232777 | 4011110 |
| **चेयरमैन विश्वस्त मण्डल :** | | | | | |
| **श्री केसरीमल वुरड़ जैन,** बैंगलोर | 080 | 25475895, 25478567 | 25475901, 25475695 | 09844152853 | 41250211 |
| **पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षगण :** | | | | | |
| **श्री जे. डी. जैन,** गाजियाबाद | 0120 | 2706100 | 2750100 | 09810006462 | |
| **श्री नेमीचन्द चोपड़ा जैन,** पाली | 02932 | 280898,280899 | 222125,325125 | 09829025729 | 222125 |
| **श्री सुवालाल बाफना जैन,** धुले | 02562 | 232033, 233133 | 235544, 235555 | 09422296155 | |
| **प्रमुख मार्गदर्शक :** | | | | | |
| **श्री कान्तिलाल एच. जैन,** मुंबई | 022 | 26398752 | 26352434 | 09821033225 | 26356983 |
| **श्री अविनाश चोरड़िया जैन,** दिल्ली | 011 | 43573099,43573499 | | 09313813899 | 23346899 |
| **श्री रामकुमार जैन,** लुधियाना | 0161 | 2449493, 2447538 | 2448714, 4413040 | 09814002335 | 2449957 |
| **श्री चंदनमल चोरड़िया जैन,** इन्दौर | 0731 | 2540914 | 2540900 | 09826022621 | |
| **राष्ट्रीय उपाध्यक्ष :** | | | | | |
| **श्री विलास लोढा जैन (वरिष्ठ),** अहमदनगर | | | | 09960666065 | |
| **श्री बालचंद खरवड़ जैन,** मुंबई | 022 | 29255921, 29250508 | 25222104 | 09821668548 | 29200223 |
| **श्री भंवरलाल डी. वोहरा जैन,** मोलेला (राज.) | | | | 09324556349 | |
| **श्री औंकारसिंह सिरोया जैन,** उदयपुर | 0294 | 2414033 | 2410374, 7023907574 | 09414167574 | |
| **श्री बालासाहेव चोरड़िया जैन,** मुंबई | 022 | 26367681 | 26367381 | 09324122233 | |
| **श्री तनसुख झामड़ जैन,** औरंगाबाद | 0240 | 2337015, 2324811 | 2480979 | 09822659910 | |
| **श्री रमेश भण्डारी जैन,** इंदौर | 0731 | 460069 4070069 | | 09302103817 | 2460069 |
| **श्री विमलप्रकाश जैन,** जालंधर | 0181 | 5001111, 5019611 | | 09815184311 | |
| **श्री भंवरलाल भण्डारी जैन,** हैदराबाद | | | | 09440897417 | |
| **श्री बी. शांतिलाल पोखरना जैन,** बैंगलोर | | | 9845155799 | 09342535887 | |
| **श्री जगदीश चन्द्र जैन,** पानीपत | 0180 | 4009181 | | 09896200081 | |
| **राष्ट्रीय महामंत्री :** | | | | | |
| **डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन,** पुणे | 020 | 46703433 | 09422036831 | 09028736831 | |
| **राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष :** | | | | | |
| **श्री महेन्द्र वोकरिया जैन,** दिल्ली | 011 | 43573099, 43573499 | | 09868125710 | 23346899 |
| **राष्ट्रीय मंत्री :** | | | | | |
| **श्री विमल जैन,** अम्बाला | | 7027131008 | 09216701008 | 09466701008 | |
| **श्री संजय जैन, 'निशा'** लुधियाना | 0161 | 2621237 | | 09417253101 | |
| **श्री कंवरलाल सूर्या जैन,** भीलवाड़ा | 01482 | 236641 | 239104 | 09414113056 | |
| **श्री सोहनलाल भण्डारी जैन,** नाशिक | | | | 09823079708 | |
| **श्री ललित मोदी जैन,** नाशिक | 0253 | 2599400 | 2599500 | 09422246500 | |
| **श्री जयकुमार जैन,** दिल्ली | 011 | 27372290 | | 09810672111 | |
| **श्री विजय डागा जैन,** मुंबई | 022 | 28470384 | 28398165 | 09821095976 | |
| **श्री पारस दुग्गड़ जैन,** धुले | 02562 | 278519 | | 09423193447 | |
| **श्री सुशील जैन,** गाजियाबाद | | | | 09810078214 | |
| **श्री आनंद कोठारी जैन,** बैंगलोर | 080 | 28538338 | | 09341234176 | |
| **श्री प्रसन्नकुमार संचेती जैन,** चेन्नई | | | | 09035010666 | |
| **श्री सागर सांखला जैन,** भोसरी | | | | 08888090999 | |

## श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस, नई दिल्ली के पदाधिकारीगण (वर्ष 2016-2018 )

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **राष्ट्रीय कानूनी सलाहकार मंत्री** | | | | | |
| **श्री दिनेश एम. सुराणा जैन,** दिल्ली | 011 | 27296131 | | 09310054428 | |
| **राष्ट्रीय प्रचार - प्रसार मंत्री :** | | | | | |
| **श्री सुभाष जैन 'लिली',** मंगलदेश (पंजाब) | | | | 09814699393 | |
| **श्री रिखवलाल सांखला जैन,** मुंबई | | | | 09820668898 | |
| **राष्ट्रीय युवा शाखा :** | | | | | |
| अध्यक्ष- **श्री शशिकुमार कर्नावट जैन 'पिन्टू',** मालेगांव | | | | 09823955515 | |
| महामंत्री- **श्री रवि मदनलाल लोढ़ा जैन,** औरंगाबाद | 0240 | | 2338224 | 09822276008 | |
| **राष्ट्रीय महिला शाखा :** | | | | | |
| अध्यक्षा - **श्रीमती रुचिरा ललित सुराणा जैन,** मुंबई | | | 09423966963 | 09820004079 | |
| महामंत्री - **श्रीमती विनिता राजेन्द्र ओरड़िया जैन,** सूरत | | | | 09426115241 | |
| **जीवन प्रकाश योजना :** | | | | | |
| अध्यक्ष - **संजय बोथरा जैन,** घोटी | | | | 09822596781 | |
| मंत्री - **श्री लादुलाल बाफना जैन,** मुंबई | | | | 09833866852 | |
| **जीव दया योजना :** | | | | | |
| अध्यक्ष - **श्री प्रकाश सिंघवी जैन,** सूरत | | | | 09879550981 | |
| मंत्री - **श्री छितरमल रांका जैन,** सूरत | | | | 08980018801 | |
| **मानव सेवा योजना :** | | | | | |
| अध्यक्ष - **श्री महेश डाकोलिया जैन,** इंदौर | 0731 | 2531066 | 2970666 | 07773866000 | 531066 |
| मंत्री - **श्री राजेन्द्र लोढ़ा जैन,** इन्दौर | 0731 | 28753681 | 2780090, 2785232 | 09425062147 | |
| **ज्ञान प्रकाश योजना :** | | | | | |
| अध्यक्ष - **श्री भंवरलाल पगारिया जैन,** बैंगलोर | 080 | 22383557 | | 09448238429 | |
| मंत्री - **श्री अशोक कुमार धोका जैन,** बैंगलोर | 080 | 41221890 | 41223853 | 09844058123 | |
| **वैय्यावच्च समिति :** | | | | | |
| अध्यक्ष - **श्री कांतिलाल चोपड़ा जैन,** नाशिक | 0253 | 2575799 | | 09422944800 | |
| मंत्री - **श्री महावीर नाहर जैन,** वड़गांवशेरी, पुणे | | | | 09822285538 | |

## :: सम्माननीय प्रांतीय अध्यक्ष मण्डल ::

| | |
|---|---|
| श्री आनन्दमल छल्लानी जैन (तमिलनाडु) | मो. : 098410 30035 |
| श्री महावीरचंद अलिजार जैन (आंध्र प्रदेश) | मो. : 094924 44444 |
| श्री सुरेशचन्द छल्लाणी जैन (कर्नाटक) | मो. : 093412 32573 |
| श्री अतुल जैन (दिल्ली) | मो. : 098110 75336 |
| श्री विनय जैन (हरियाणा) | मो. : 086075 00001 |
| श्री राकेश जैन 'लक्की' (पंजाब) | मो. : 098150 20661 |
| श्री मनमोहन जैन (उत्तर प्रदेश) | मो. : 098370 67082 |
| श्री विमल तातेड़ जैन (मध्य प्रदेश) | मो. : 098260 62838 |
| श्री नेमीचंद धाकड़ जैन (राजस्थान) | मो. : 094220 74172 |
| डॉ. गुमानसिंह पीपाड़ा जैन (पश्चिम बंगाल) | मो. : 098300 30774 |
| श्री सतीश नारायणदास लोढ़ा जैन (महाराष्ट्र) | मो. : 094222 22138 |
| श्री कांतिलाल बोथरा जैन (मुंबई-पुणे) | मो. : 094223 05755 |
| श्री चन्द्रेश आर. कच्छारा जैन (गुजरात) | मो. : 095958 91111 |

## :: सम्माननीय प्रांतीय महामंत्री मण्डल ::

| | |
|---|---|
| श्री महावीरचन्द वोहरा जैन (तमिलनाडु) | मो. : 096772 47246 |
| श्री दिलीप कुमार धारीवाल जैन (आन्ध्र प्रदेश) | मो. : 098480 54130 |
| श्री मनोहरलाल लुकड़ जैन (कर्नाटक) | मो. : 098806 28555 |
| श्री जसवंत जैन (दिल्ली) | मो. : 098104 35108 |
| श्री राजेन्द्र जैन (हरियाणा) | मो. : 099963 33388 |
| श्री अरुण जैन (पंजाब) | मो. : 098155 66885 |
| डॉ. रश्मिकांत जैन (उत्तर प्रदेश) | मो. : 098083 79242 |
| श्री संजय नवलखा जैन (मध्य प्रदेश) | मो. : 094251 01230 |
| श्री बलवंत सिंह हींगड़ जैन (राजस्थान) | मो. : 098297 85197 |
| श्री आनंद मेहता जैन (पश्चिम बंगाल) | मो. : 098302 49151 |
| श्री मनोजकुमार एम. सेटिया जैन (महाराष्ट्र) | मो. : 094222 21511 |
| श्री रविन्द्र रमनलाल लुकड़ जैन (मुंबई-पुणे) | मो. : 098231 29411 |
| श्री दिनेश संचेती जैन (गुजरात) | मो. : 093769 01329 |

# सम्पादकीय

## सुरक्षित हो साधु-संतों का विहार प्रयास रहे हमारा सबका बारम्बार !

- **डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन,** राष्ट्रीय महामंत्री, जैन कॉन्फ्रेंस

E-mail : ashokpagariyaandco@gmail.com

प्रिय पाठक भाईयों / बहनों

सादर जय जिनेन्द्र !

चातुर्मास 2017 संपन्न हुआ और चातुर्मास संपन्न करके गुरु भगवंतों का साध्वियों का विहार शुरु हो चुका है। अब इस ओर हमारी सबकी जिम्मेदारी बढ़ गई है, क्योंकि संत-सतियों के विहार के दौरान होने वाली दुर्घटनाओं को रोकने के लिए या प्रतिबंध करने हेतु हमें सजग रहना चाहिए। हम सभी जानते है कि इससे पूर्व में साधु-साध्वियों जी महाराज के विहार के समय कई दुर्घटनाएं घटित हो चुकी है और हमारे परम आदरणीय, परम श्रद्धेय संत-सतियों का ऐसी दुर्घटनाओं में निधन हुआ है।

इसीलिए विहार व्यवस्था को हमें गंभीरता से लेकर संत-सतियों की सुरक्षा पर ध्यान देने की आवश्यकता है। संत-सतियाँ हमारे लिए ईश्वर के समान है। उनका इसी तरह दुर्घटनाओं में कालवश होना यह बात हमारे लिए शर्मनाक है। इसलिए मैं जैन कॉन्फ्रेंस के सभी पदाधिकारियों, सदस्यों, युवा साथियों एवं महिला बहनों को करबद्ध होकर निवेदन करता हूँ कि विहार में साधु-साध्वियों जी महाराज की साता रखने हेतु उन्हें सुरक्षा देने का प्रयास करें, विहार में सम्मिलित होने का प्रयास करें।

**सुरक्षित हो साधु-संतों का विहार।**
**प्रयास रहे हमारा सबका बारम्बार।।**

दूसरी अहम बात यह है कि हमारे परम श्रद्धेय साधु-साध्वियों जी महाराज के शिथिलाचार के बारें में व्हाट्सअप पर या अन्य सोश्यल मीडिया के साधनों पर हम पढ़ते है, देखते है। मेरा सभी से अनुरोध है कि किसी भी संदेश को फारवर्ड करने से पहले इस संदेश की सत्यता, छानबीन करने की हमारी जिम्मेदारी है। क्योंकि संत-साध्वियों जी महाराज पर कीचड़ उछालने के पहले हमें अपने अंदर झाँकना चाहिए और यह देखना चाहिए कि हमें यह नैतिक अधिकारी सही मायने में है या नहीं?

हमारा यह कर्त्तव्य बनता है कि ऐसी बातों को आचार्यश्री जी के सामने लाकर उनके आदेश का पालन करें। हमारे समाज की, श्रमण संघ की गरिमा, एकता एवम् अखंडता कायम रखने हेतु प्रयास करना यह हमारी धार्मिक एवम् नैतिक जिम्मेदारी हैं।

तीसरी महत्वपूर्ण बात हमारे सभी व्यापार एवं उद्योग जगत में अपना कारोबार संभालने वाले हमारे व्यापारी एवम् उद्योजक सदस्य की कर लेखा परीक्षाण करके प्राप्ति कर विवरण दाखिल करने की अंतिम तिथि 07 नवंबर 2017 थी। इसलिए आप सभी उसमें व्यस्त रहे होंगे। जी. एस. टी. में काफी बदलाव किये गये है। जिससे संबंधित सामग्री आपकी जानकारी के लिए इसी अंक में हमने प्रकाशित की है।

इस पखवाड़े में परम पूज्य आचार्य सम्राट् श्री आनंदऋषि जी म. की दीक्षा जयंती है। आचार्यश्री

जी केवल जैन समाज के लिए ही नहीं अपितु जैनेत्तर समाज के लिए भी बहुत बड़ी देन है। आपको हम ईश्वर के समान मानते है, आपने जीवनभर श्रमण संघ की अखंडता एवं एकता कायम रखने हेतु प्रयास किया। आपकी दीक्षा जयंती के शुभ अवसरपर अभिवादन करते हुए कहना चाहूंगा कि -

**आप केवल एक फूल नहीं, पूरा उद्यान हो,**
**आप केवल बादल नहीं, करुणा के अवदान हो।**
**आप एक सितारा नहीं, स्वयं आसमान हो,**
**आप केवल संत नहीं, साक्षात भगवान हो।।**

मेवाड़ प्रवर्तक परम पूज्य श्री अम्बालाल जी महाराज का दीक्षा दिवस मनाने जा रहे हैं, ऐसे महान गुरु भगवंतों के त्यागी जीवन से हम सबको प्रेरणा प्राप्त कर स्वयं को कृतार्थ करना चाहिए।

वहीं जैन दिवाकर परम पूज्य श्री चौथमल जी म., उपाध्याय प्रवर परम पूज्य श्री कन्हैयालाल जी म. 'कमल' का स्मृति दिवस, महामंत्री परम पूज्य श्री सौभाग्य मुनि जी म. का जन्म दिवस, प्रथम युवाचार्य पू. श्री मिश्रीमल जी म. 'मधुकर' का जन्म दिवस हम सभी आदर के साथ मनाना हैं। ऐसे परम पूज्य त्यागी गुरु भगवंतों के चरणों में जैन कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से वंदन नमन् ! ✧✧

## जैन कॉन्फ्रेंस की योजनाओं में उदारमना होकर दें सहयोग

आप जैन कॉन्फ्रेंस के आदरणीय सदस्य हैं, इस बात पर आपको गर्व होना चाहिए। क्योंकि जैन कॉन्फ्रेंस विगत एक शताब्दी से अधिक समय से लगातार स्थानकवासी जैन समाज को एकता के सूत्र में बांधे हुए मानव हितैषी कार्यों में लगी हुई है। हमारा एक विशाल केन्द्रीय कार्यालय है, लेकिन कार्यालय से चलने वाली गतिविधियों में जैन कॉन्फ्रेंस की योजनाएं ऐसी प्रमुख गतिविधी है, जिस पर हमारे समाज को अत्यंत गर्व है। अनेक वर्षो से हमने अपने साधर्मिक भाई-बहनों की सेवा के साथ-साथ मूक पशुओं और प्राणियों के लिए भी जीव दया एवं सहयोग का अभियान चलाया हुआ है। इसलिए हमारी आपसे विनम्र अपील है कि जैन कॉन्फ्रेंस की योजनाओं में उदारमना होकर सहयोग प्रदान करें।

◆ **जीवन प्रकाश योजना :** इस योजना के अंतर्गत साधर्मी जैन भाई-बहनों की उच्च शिक्षा और चिकित्सा में जैन कॉन्फ्रेंस अपना योगदान करती है। यह योगदान हमारे दानशील समाजसेवियों, श्रावक-श्राविकाओं से ही प्राप्त होता है।

◆ **जीव दया योजना :** इस योजना के अंतर्गत मूक प्राणियों की सेवा में जीव दया की भावना से योगदान दिया जाता है।

◆ **मानव सेवा योजना :** यह योजना अपने ही समाज के अभावग्रस्त परिवारों को उनके मान-सम्मान का ध्यान रखते हुए सहयोग देने की योजना है।

◆ **ज्ञान प्रकाश योजना :** स्वाध्याय मानव जीवन की ऐसी गतिविधि हैं जो हमें उभरने एवं उत्तरोत्तर आगे बढ़ने में सहयोग करता है। ज्ञान प्रकाश योजना इसी की विशिष्ट प्रस्तुति है।

◆ **वैय्यावच्च समिति :** वैय्यावच्च समिति योजना न होकर हमारे त्यागात्माओं की संयम यात्रा में सेवा और सहायता का विशिष्ट अभियान है।

**आओ इन योजनाओं के महत्व को समझें और अपनी श्रमनिष्ठ आय से उदारमना होकर दान-सहयोग करें।**

**- प्रधान सम्पादक**

# अध्यक्षीय उद्‌गार

## विचार करें समाज कि कैसे बढ़े हमारा यश !

**– मोहनलाल चोपड़ा जैन,** राष्ट्रीय अध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस

E-mail : chopdagroup@gmail.com

सम-सम्माननीय बन्धुओं, बहनों

सादर जय जिनेन्द्र !

संपूर्ण देश में हाल ही में चातुर्मास भव्यता व दिव्यता से संपन्न हुए। अनेक स्थानों पर मुझे भी प्रवचन, दर्शन, सेवा आदि का लाभ प्राप्त हुआ। पूज्य प्रवर, महासंत एवम् महासाध्वी मण्डल ने अपने-अपने विचार रखते हुए जैन कॉन्फ्रेंस से अनेक प्रकार की अपेक्षाएं रखी। अनेक ऐसे मुद्दे सामने आए जो हमारे संघ, समाज के हित में हैं और उन पर व्यापक दृष्टि से विचार करना अत्यावश्यक है।

निवेदन मेरा यह है कि कोई भी प्रगतिशील कदम या परम्परागत गुण संरक्षण हम तभी कर पाएंगे जब हमारा संयुक्त प्रयास होगा। एक पक्ष कार्य करें और दूसरा पक्ष आलोचना में लगें यह बात हम सबके लिए शोभनीय नहीं है। हमें अपने संघ के हित में जो भी निर्णय लेना है वह सामूहिक लेना है और सबके सहयोग से लेना है।

मैं तो लम्बे समय से सहकारिता आंदोलन से जुड़ा हुआ व्यक्ति हूँ। मैंने देखा है कि असंभव से असंभव कार्य भी जब संगठन की शक्ति से जुड़ते हैं तो उत्तम से उत्तम परिणाम सामने आते हैं। मेरे आदर्श, मेरे प्रेरणासोत्र, मेरे आराध्य गुरुदेव पूज्य श्री आनंदऋषि जी म. सा. से मैंने यही सीखा है कि समस्या कोई भी बड़ी नहीं होती। समस्या के समाधान के लिए इच्छाशक्ति और प्रयास बहुत महत्व रखता है। आचार्य भगवन् यह भी कहा करते थे कि कोई किसी को छोटा न समझें, सबके योगदान से ही समाज चलता है, समाज विकास करता हैं।

मैं इसी विचार के आलोक में निवेदन करना चाहता हूँ कि वर्तमान समय में कतिपय घटनाएं व आचार शैथिल्य की सुनने में आ रही है। एक ऐसी छवि बन रही है, मानों सब कुछ गलत या खराब हो रहा है। जबकि वस्तु स्थिति ऐसी नहीं हैं। मानसिक विकारों के कारण कुछ घटनाएं घटती हैं और हम सभी को गहरा अफसोस करा देती हैं। अब हमारा यह कर्त्तव्य है कि हम स्वयं अपने चरित्र से, अपने कार्य व्यवहार से समाज के समक्ष आदर्श उपस्थित करें, क्योंकि जब तक श्रावक समुदाय धर्म परम्परा के संबंध में, आचरण के संबंध में, जागरुक नहीं होगा तब तक त्यागी वर्ग के बारें में किसी सुधार की अपेक्षा करना उचित नहीं होगा।

कुछ विद्वान लोगों ने आचार्यश्री जी के समक्ष कुछ प्रश्न उपस्थित किए है, वे चाहते हैं कि समाज में आदर्श परंपरा का निर्वाह होता रहे। अतः मेरा निवेदन है कि आचार्यश्री जी की आज्ञानुसार व्यवस्थाओं का संचालन, सुपालन हो। मैं स्पष्ट रूप से कहना चाहता हूँ कि जैन कॉन्फ्रेंस अपने जन्म काल से ही एक आग्रह करती आई है कि कैसे हमारा यश बढ़े! कैसे हमारा धर्म संघ आदर का पात्र बनें! कैसे हमारी धर्म परम्परा त्याग, तप, सादगी, सेवा से निखरकर दूसरों के लिए भी उदाहरण बनें! मैं आशा करता हूँ कि इस दिशा में सभी लोग सामूहिक प्रयास करेंगे और संघीय गुणवत्ता को प्राथमिकता देते हुए अपने योगदान से सफल बनाएंगे।

✧✧

# चातुर्मासिक प्रतिक्रमण व विहार का महत्व

**- युग प्रधान आचार्य सम्राट पू. डॉ. शिवमुनि जी म.**

वर्षाकालीन चातुर्मास समापन व शीतकालीन चातुर्मास में प्रवेश पर साधक आत्म निरीक्षण करें कि चातुर्मास का लक्ष्य क्या था? चातुर्मास क्यों किया जाता है? उसमें मेरी आत्मिक साधना में कितनी प्रगति हुई? अथवा सामाजिक कार्यक्रमों में व्यस्त होकर मैं कहीं अपनी साधना को गौण तो नहीं कर गया! कहीं कर्त्ता भाव में आकर प्रमादी तो नहीं बन गया!! कहीं मर्यादाओं का उल्लंघन तो नहीं हुआ!

सत्कार-पुरस्कार आदि अनुकूल परीषहों में स्वयं के प्रति कितना जागरुक रहा, क्या मैं एक साधु की तरह प्रवेश कर पुदगल स्पर्शना पूर्ण करके साधु की तरह विहार कर रहा हूँ या कहीं आश्रव का निमित्त तो नहीं बना? आत्मार्थी साधना में इन सभी विषयों पर चिन्तन कर शारदीय चातुर्मासिक प्रतिक्रमण करें।

शीतकालीन चातुर्मास में प्रवेश करते समय भी अपने विहार के उद्देश्य को समक्ष रखें। मैं अपनी साधना के विकास के लिये प्रतिकूल परिस्थितियों में वीतराग भाव में रहकर विशेष कर्म निर्जरा के लिये विहार कर रहा हूँ। मोह कर्म को क्षय करने के लिए, सुकुमालता को तोड़ने के लिए विहार कर रहा हूँ। दशवैकालिक सूत्र में फरमाया है -

**आयावयाही चय सोग मल्लं, कामे कमाही, कमियं खु दुःखं, छिंदाही दोष विणएज्जं रुग एवं सुही हो होसी से पराए।**

आतापना लेने से, सुकुमालता छोड़ने से, कामनाएं समाप्त होती हैं, जो दुःख का कारण हैं। **अतः साधक को द्वेष का छेदन कर, राग को त्यागकर ही सुख प्राप्त हो सकता है।** ये अवसर विहार में प्राप्त होते है अतः विहार भी साधना का ही भाग है। **शीतकालीन चातुर्मास में विहार करते हुए एक भी नवीन कर्म का बंधन न हो, इसके प्रति जागरुक रहना ! एक आत्मार्थी साधक का लक्षण है।**

चतुर्विध संघ का प्रत्येक सदस्य संघ तीर्थ के प्रति समर्पित रहकर परस्पर कर्म निर्जरा के लिये सेवा में संलग्न हो। सेवा, साधना में अभिवृद्धि हेतु सत्संग करें। **अपने सत् को न भूलें ! क्षण भर का सत्संग आपके जीवन की दिशा बदल सकता है।**

पंचम आरे में मुक्त होने के लिए किसी आत्मज्ञानी को ढूंढ़कर उसकी आज्ञा का पालन कर लें तो निश्चित जीवन मुक्ति का, अनंत सुख का अनुभव इसी जीवन में हो सकता है।

**धम्मो मंगल मुक्कीट्ठं, अहिंसा संजमो तवो,**
**देवा वितं नमंसंति जस्स धम्मेसया मणुओ।**

वस्तुतः धर्म से मंगल ही होता है। उत्कृष्ट धर्म, आत्म धर्म की प्राप्ति होती है। अहिंसा महाव्रत अणुव्रत का पालन करते हुए पांचों इन्द्रियाँ व छठे मन पर संयम करने पर बाह्य व अन्तर तप से वर्तमान में अनंत सुख, शाश्वत सुख का अनुभव होता है। मिथ्यात्व वश देह व देह से जुड़े साधनों में सुख ढूंढ़ रहे थे यह भ्रम टूटेगा। **इसके लिए आने वाले शीतकालीन सत्र में आत्म ज्ञान व ध्यान साधना को महत्व दें। स्व-पर कल्याण के निमित्त बनते रहें। यही मंगल भावना।**

✧✧

**दूसरों का जो आचरण तुम्हें पसंद नहीं, वैसा आचरण दूसरों के प्रति न करो।**

# पारस पत्थर कहां है?

- उपाध्याय पू. श्री रवीन्द्र मुनि जी म.

दुनिया में एक ऐसे पत्थर की कल्पना प्राचीन काल से चली आ रही है। जिसे छूने से लोहा, सोना बन जाता है। इस पत्थर को 'पारस' कहते हैं। अनेक किवदंतियाँ इसके संबंध में रहीं हैं। कोई कहता है कि यह पहाड़ों पर कहीं होता है, पहाड़ी चरवाहे बकरियों के खुरों में लोहे के नाल ठोक देते हैं ताकि कभी पारस के ऊपर होकर निकल जाए तो लोहे के नाल सोने के हो जाएं। कथाकारों ने इस संबंध में कई कहानियाँ गढ़ी हैं। राजा चंदेल के यहां पारस था, ऐसा कहा जाता है। लेकिन इन सब बातों में कितना सत्य है यह जानना कठिन है पर इतना निर्विवाद रुप से कहा जा सकता कि इस युग के विज्ञान खोजियों को अभी तक इस प्रकार की किसी वस्तु का संसार भर में पता नहीं लगा है। जिसे छूने से लोहा सोना हो जाता हो।

बहुत से लोग पारस पत्थर या इसी प्रकार की किसी वस्तु की तलाश में रहते हैं। जिसके द्वारा वे आसानी से पर्याप्त सुख सामग्री पा सके।

असल में ऐसा पत्थर परमात्मा ने सबको दे रखा है। इसका उपयोग करना न करना अपनी कुशलता पर निर्भर है। **दृढ़ विचार, आत्म-संयम, कर्म निष्ठा और जिज्ञासा ऐसे गुण हैं, जिनके मिलने पर व्यक्ति स्वयं पारस पत्थर बन जाता है।** इन चारों गुणों के मिलने से जो बुध्दि बनती है वह ऐसी होती है कि जो उसे छू ले वहीं सोने का हो जाए। अमेरिका का धनकुबेर जॉनएस्टर एक गरीब आदमी था। उसने थोड़े से रुपयों से चमड़े का व्यापार शुरू किया, इसी सिलसिले में वह अपनी नाव को उत्तरी ध्रुव तक ले पहुंचा और अपनी कर्म निष्ठा के बल पर कुछ ही दिनों में विपुल सम्पति का स्वामी बन गया।

फोर्ड मोटर का संसार प्रसिद्ध निर्माता हैनरी फोर्ड बड़ी कठिनाई से मोटरों का कारखाना खोल सका था, किन्तु अपनी दूरदर्शिता और अध्यवसाय से उसने कारोबार को इतना ऊंचा बढ़ा लिया कि वह संसार का सर्वोच्च धनपति समझा जाने लगा। प्रसिद्ध तेल व्यवसायी जॉन केलर बचपन में एक तेली के यहां नौकर था और तेल बेचकर अपना पेट भरता था। उसका मन इसी तेल के व्यापार में इस तरह घुसा कि इस संबंध के गूढ़ रहस्यों को उसने जाना। जो कुछ पैसे उसने बचाये थे उन्हीं को लेकर उसने तेल का व्यापार आरंभ कर दिया। अंतिम समय में उसके पास इतनी सम्पत्ति थी कि तेली **अपनी विपुल सम्पति में से 26 करोड़ रुपया हर साल धर्म पुण्य में खर्च करता रहता था। क्या आप समझते हैं कि इतनी सम्पदा बिना पारस पत्थर के कमाई जा सकती है? निश्चय ही पारस का मूल हर एक आदमी के अंदर है ! और अगर वह चाहे तो उसे खोज कर निकाल सकता है।** वैसे तो लोग स्वयं को बहुत होशियार और चालाक बनते हैं अपने को सुखी और कमाऊ पूत समझते हैं, परंतु यह होशियारी उस बंदर जैसी है जो चने के दाने देखकर हाथ में रखी हुई रुपयों की थैली को एक ओर पटक देता है और चने खाने के लिए दौड़ पड़ता है।

आराम से पड़े रहना, अच्छा खा पहन लेना, मौज शौक की चीजों में मन बहलाना आदि को पाकर हम समझते हैं कि जीवन धन्य हो गया और सब कुछ पा लिया जितना हम जानते हैं उसी पर घमण्ड करते हैं और आगे की बात जानने की कोई जरुरत नहीं समझते। अपने **आस-पास के किसी थोड़े से जानकार को देखिये वह अपनी योग्यता पर बहुत ऐंठा हुआ मिलेगा, इससे ज्यादा सीखने की उसे जरुरत ही महसूस न होती होगी क्योंकि हर आदमी चाहता है कि कम परिश्रम में ज्यादा नफ़ा हो जाए। बिना जोखिम में पड़े छप्पर फाड़ कर खजाना टपक पड़े।**

**भला कहीं ऐसा हो सकता है?** जो लोग थोड़ा सा उत्साह दिखाते हैं वह जरा सी कठिनाई आने पर उसे छोड़ देते हैं और एक चीज़ से दूसरी पर भटकते हैं, फलस्वरुप उन्हें किसी भी काम में सफलता नहीं मिलती और वे अपने भाग्य को कोसकर रह जाते हैं।

बंधुओं! जो अपने लोहे को सोना बनाना चाहते हो, जिन्हें पारस पत्थर की तलाश हो, वह इन चार वस्तुओं को प्रचुर मात्रा में इकट्ठा करें जिनके मिलने से पारस जैसी सिद्धता प्राप्त हो सकती है। स्मरण रखो!- दृढ़ विचार, आत्म संयम, कर्म निष्ठा और जिज्ञासा चार वस्तुओं के मिल जाने से सोना बनाने वाली पारस स्पर्शी बुद्धि बनती है, वह जिधर भी झुक पड़ती है उधर ही सोने के पहाड़ खड़े कर देती है।

**जितना जानते हो उससे अधिक जानने की हर घड़ी कोशिश करते रहो, इन्द्रियों के गुलाम मत बनों और न आलस्य को ही अपने पास फटकने दो। काम को देखकर घबराओं मत, उसे पूरा करने के लिए मशीन की तरह जुट जाओं जितना अधिक काम करो,** उतनी ही अधिक प्रसन्नता का अनुभव करो। काम का तरीका ठीक रखो। ऐसा न हो कि जाना है पूर्व और पश्चिम को दौड़ पड़ो। अपनी बात पर मजबूत रहो, अपने काम पर श्रद्धा और विश्वास रखो, बार-बार विचारों को मत बदलो।

यदि अपनी कार्य पद्धति सच्ची मालूम पड़ती है तो उस पर दृढ़ रहो, किसी भी कठिनाई के आने पर मत डिगो। यह गुण जैसे-जैसे बढ़ते जाएंगे, वैसे ही वैसे भाग्य निर्माण होता जायेगा।

उपयुक्त साधन, पथ प्रदर्शन और कठिनाईयों का हल अपने आपको प्राप्त होता जायेगा। मोटी और स्थूल बुद्धि, खराब भाग्य, ऐसी तेजी और सुन्दरता के साथ बदलने लगेंगे मानो किसी ने जादू कर दिया हो। कुछ ही दिनों में आप अनुभव करोगे कि तुम खुद एक पारस पत्थर हो, जिसे छूते हो उसे ही सोना बना देते हो। साधुवाद भरी शुभकामनाएं !

✧✧

## जैन कॉन्फ्रेंस के सभी सदस्यों से निवेदन

# जैन भवन केन्द्रीय कार्यालय में निम्नलिखित पदों पर नियुक्ति : -

| POST | AGE | QUALIFICATION | PAY SCALE | EXPERIANCE |
|---|---|---|---|---|
| 1. Manager | Above 55 Years | Graduate | Negotiable | Minimum 10 Year |
| 2. Accountant | Above 25 Years | Graduate | Negotiable | Minimum 5 year |

**नोट :** 1. मैनेजर के लिए हिन्दी, अंग्रेजी, मारवाड़ी व अन्य भाषाओं की जानकारी आवश्यक । सरकारी एवं बैंक कर्मचारी पद से रिटायर्ड हुए व्यक्ति को प्राथमिकता दी जाएगी । जैन समाज के उम्मीदवार को प्राथमिकता। 2. जैन कॉन्फ्रेंस के सदस्यों की जानकारी वाले अन्य समाज के उम्मीदवार (शाकाहारी) पर भी विचार किया जाएगा । आवास, भोजन (स्वयं एवं परिवार सहित) की व्यवस्था। 3. Application and Bio-Data को लिखित रूप में दिए गए पते पर डाक द्वारा भेजें, योग्य उम्मीदवार का ही चयन किया जाएगा ।:-

(क) डॉ. अशोकक्कुमार एन. पगारिया जैन : 1, सागर प्लाजा, प्रथम तल, नासिक फाटा, कासारवाड़ी, पुणे - 411 034 (महाराष्ट्र) **या**

(ख) श्री सुनील मोहनलाल चोपड़ा जैन : अर्हम, चोपड़ा स्टेट, गंगापुर रोड़, नासिक - 422 002 (महाराष्ट्र)

- प्रधान सम्पादक

# चातुर्मास की सफलता का रहस्य

**– श्रमण संघीय प्रमुख मंत्री पू. श्री शिरीष मुनि जी म.**

अरिहंत परमात्मा के एक संदेश के आत्मसात् से मेरा चातुर्मास आध्यात्मिक बन गया। "प्रभु से प्रश्न पूछा चातुर्मास के लिये संदेश, प्रभु ने फ़रमाया- **"एक साधु की तरह प्रवेश करो, पुद्गल फरशना करके विहार कर जाओ, किसी भी आश्रव के कार्य में नहीं पड़ना।** तुम्हारे करने से कुछ नहीं होता, तुम अपनी साधना को मुख्यता दो। जो आवश्यक होगा, वह हो जायेगा।"

मैंने इस संदेश को आत्मसात् करने का पुरुषार्थ किया अपनी साधना को मुख्यता दी, तो मेरा पूरा चातुर्मास आध्यात्मिक रहा। हर पल, हर क्षण, ये संदेश गूंजता रहता, **"स्व को स्व में स्थित रखना है।"** केवली सम जीना है। परिणाम स्वरूप सिद्ध जैसा जीव सिद्ध बनने का पुरुषार्थ कर रहा है।"

इंदौर चातुर्मास में अनेकानेक कार्यक्रम व्यवस्थित चलते रहे, त्रय महापुरुषों की उपस्थिति से जन-मानस में समग्र समाज में अपूर्व उत्साह रहा। सब कुछ व्यवस्थित चलता रहा।

नगर में विचरण, चातुर्मास प्रवेश, धर्म चक्र तप, नवकार जाप, आत्म ध्यान योग, प्रार्थना प्रवचन, दर्शनार्थी आगमन आत्म ध्यान शिविर, बेसिक, एडवांस 1, 2, 3, 4, चार दिवसीय, सात दिवसीय, 11 दिन के गंभीर आत्म ध्यान शिविर चातुर्मास का केन्द्र बिन्दु रहे। जिसमें पूरे देशभर से आये 5000 हजार के आसपास साधकों ने आत्मबोध पाकर अपनी समकित को परिपक्व किया।

वहीं दान, शील, तप, भावना का व्यवस्थित यज्ञ चला, जीव दया, मानव सेवा, संत सेवा आदि प्रकल्पों के लिए धनराशी वितरण, स्कूल, कॉलेज के विद्यार्थियों को ध्यान प्रशिक्षण आदि कार्यक्रम चले प्रतिदिन समवसरण में कोई न कोई कार्यक्रम, महिला मंडलों की प्रस्तुति, महासमिति का योगदान सभी सहज चलता रहा **इसका मूल कारण था शिवाचार्य भगवन् की साधना से प्राप्त सरलता, कृतज्ञता, विनय गुण से सब कुछ सहज हुआ निष्कर्ष यही की प्रत्येक साधक** आत्मार्थ को महत्व दे।

जीवन में संयम साधना को अपनावें, कर्त्ता छोड़ दृष्टा बनें जीवन सफल होगा। चातुर्मास आध्यात्मिक होगा, आगामी शीतकालीन विहार एवं साधना का समय है आप और हम अनुकूल प्रतिकूल परिस्थितियों में सम्भाव में रहकर निर्जरा करें। कोई अपना न था, नहीं है, नहीं हो सकता, इस एकत्व का पोषण हो। जीवन में शिकायत भाव का मिथ्यात्व छूटे, आत्मार्थी बनकर, उदयकर्म के अधीन विचरे। ✧✧

## शिवाचार्य भगवन् की दृष्टि ...

**'स्व' को जान जीया जब 'स्व' को रोम-रोम से फूटी 'मुक्ति',**
**सफल हो गई सकल साधना, गुरु प्रेरणा बन गई 'युक्ति'।**
**शिवाचार्य भगवन की दृष्टि, नई सृष्टि को रचा गई तो-**
**शब्द आपके आप्त हो गए, हर स्वर में गूंजी एक सुक्ति।।**

# अठारह पाप और परिणाम

- शिवाचार्य शिष्य पू. श्री जितेन्द्र मुनि जी म.

मानव भव में प्रमादवश अनेक ऐसे पाप हो जाते हैं, जिनका परिणाम जन्म-जन्मांत्तर तक भुगतना पड़ता है। जीव का संसार भ्रमण या अन्य-अन्य योनियों में भटकना इन्हीं पापों का परिणाम है। शास्त्रकारों ने इन अठारह पापों की जो व्याख्या की है, मैं उसे यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ : -

## अठारह पाप के फल

| | इस भव में | | अगले भव में। |
|---|---|---|---|
| 1. | हिंसा करे तो | : | अल्पायु, (भ्रूण में ही मरें)। |
| 2. | झूठ बोले तो | : | गूंगा, बधिर, दु:स्वर बने। |
| 3. | चोरी करे तो | : | बिना हाथ पैर का (अपंग) बने। |
| 4. | बलात्कार करें तो | : | नपुंसक बने, लिंगछेद हो। |
| 5. | एक पैसा भी दान न दे तो | : | भिखमंगा, दरिद्री बने। |
| 6. | अति क्रोध करें तो | : | सिंह, सर्प, बंदर आदि बने। |
| 7. | अति मान करें तो | : | दास? भेडिया, बकरा आदि बने। |
| 8. | अति माया करें तो | : | स्त्री बने, काराग्रह में जावे। |
| 9. | अति लोभ करें तो | : | व्यापार में घाटा हो जावे। |
| 10. | झूठा राग करें तो | : | तिर्यंच योनी, कुत्ता, सुअर आदि बने। |
| 11. | झूठा द्वेष करें तो | : | नीच परिवार मिले। |
| 12. | कलह करें तो | : | क्लेशी, कुटुम्ब दुर्जन आदि मिले। |
| 13. | कलंक देवें तो | : | सांसारिक अपवाद झेलना पड़ें। |
| 14. | निंदा करें तो | : | कोढ़ी, कुरुप बने। |
| 15. | चोरी चुगली करें तो | : | चील, शिकारी से कष्ट होते। |
| 16. | व्याभिचार करें तो | : | जंगल में भील बनें। |
| 17. | माया मृषा करें तो | : | चील कौआ आदि बनें। |
| 18. | कुदेव कुगुरु को मानें तो | : | ऊंट, गधा, पाड़ा आदि बनें। |

✧✧

## ।।जीवन दर्शन।।

काल को मन में ध्यान रखरकर शुभ विचारों को करने से पापवृति से बचा जा सकता है। जन्म मरण के दु:खों के विचार करने से मनुष्य पाप करने से बचेगा। जीवन के अटल नियम जन्म, मृत्यु, जस, व्याधि के दु:खों को बार-बार मन में विचार करोगे तो सांसारिक भोग-विलासों से वैराग्य उत्पन्न होगा और पाप पीछे छूटेंगे। भोग-विलास में डूबा मनुष्य ही पाप-पुण्य में भेद करने में असमर्थ होता है, और पाप करने को प्रवृत्त होता है। पाप के संस्कार जल्दी पीछा नहीं छोड़ते। बिना सोचे-समझे विवेक वैराग्य उत्पन्न नहीं हो सकता। अतः काल को सिर पर रखकर हमेशा ईश्वर का चिंतन करो। काल को याद रखोगे तो पापवृत्ति का उद्‌भव नहीं होगा। ✧✧

# भाई की दक्षिणा

- पू. डॉ. श्री पुष्पेन्द्र मुनि जी म.

महाराष्ट्र के पेशवा शासक प्रारंभ से ही विद्वानों और शिक्षा को प्रोत्साहन देने वाले शासक रहे हैं। इन्हीं के राज दरबार में प्रकांड विद्वान रामशास्त्री को दरबार में प्रमुख स्थान प्राप्त था। उन्हें दानाध्यक्ष का पद भी दिया गया था। वे प्रत्येक व्यक्ति की योग्यता और क्षमता के साथ-साथ आवश्यकता को देखते हुए अपने हाथों से दान दिया करते थे। दान देने के दौरान वे पात्रता का खास ध्यान रखते थे। ऐसा कोई मौका नहीं आने देते थे जिससे उनके व्यवहार से पक्षपात या दुर्भावना का कोई स्थान दिखाई दें, साथ ही कोई गुणी व्यक्ति उपेक्षित महसूस करें।

एक बार की बात है शास्त्रीजी विद्वानों को दक्षिणा दे रहे थे। संयोगवश उन विद्वानों में उनके दूर के एक भाई भी शामिल थे। नाना फड़नवीस रामशास्त्री जी के भाई को देखकर उनसे धीरे से बोले, 'यह तो आपके संबंधी हैं। मेरे विचार में आपको उन्हें अन्य लोगों से अधिक दक्षिणा देनी चाहिए।' नाना की बात में छिपे व्यंग को समझते हुए रामशास्त्री जी बोले, 'मेरे भाई भी अन्य दक्षिणा प्राप्त विद्वानों की तरह ही हैं। अतः जो दक्षिणा या दान उपहार औरों के लिए तय है, वही इन्हें भी दिया जाएगा। अतः मेरे भाई को अधिक दक्षिणा क्यों दी जाए? जवाब पूरी तरह न्यायोचित था। अतः हास्य-परिहास में किया गया व्यंग भी नीतिगत शुचिता को दर्शाने वाला बन गया।

नाना फड़नवीस पुनः बोले, 'भई वाह रामशास्त्री, अत्यंत उच्च विचार हैं तुम्हारे। तुम्हारा निष्पक्ष व्यवहार हमारे हृदय को छू गया। हमें गर्व हो रहा है कि एक अत्यंत योग्य व्यक्ति दरबार में महत्वपूर्ण पद पर सुशोभित है।'

इस तारीफ पर रामशास्त्री जी मुस्करा दिए। दक्षिणा का कार्य संपन्न होने के बाद उन्होंने सभी विद्वानों को सम्मानपूर्वक विदा किया, लेकिन अपने भाई को अपने साथ घर ले गए और वहां उनका यथोचित सत्कार किया। उनके व्यवहार से गदगद भाई ने कहा, 'आप निष्पक्ष ही नहीं, विवेकवान भी हैं। हर व्यक्ति को उपयुक्त सम्मान देना कोई आपसे सीखे। आपने दरबार में विद्वानों की मर्यादा रखी तो मेरे रिश्ते का मान रखने में भी पीछे नहीं रहे। मुझे इस बात का गर्व है कि मैं आप जैसे नीतिवान व्यक्ति का भाई हूँ। मैं भी प्रयास करूंगा कि जीवन भर आपके आदर्शों का अनुशरण करता रहूं।'

इस प्रसंग में एक बात सर्वसाधारण के लिए महत्व रखती है कि यदि हम किसी पद पर योग्यता को देखते हुए आसीन किए गए हैं तो हमें उस पद की गरिमा रखते हुए योग्य व्यवहार करना चाहिए।

यदि अधिकारी ही समान दृष्टि न रखते हुए नैतिकता से परे पक्षपात करेंगे तो निश्चित रूप से समाज में अव्यवस्था फैलेगी, राज-काज में तो भ्रष्टाचार भी इसी प्रकार से पनपा हैं। अस्तु! जब भी हम किसी पद पर बैठें तो उस पद के अनुरुप नियम-कायदों और नैतिकता का ध्यान रखते हुए कार्य करें, यही यथोचित हैं। ✧✧

**!! मुफ्त सलाह !!**
**दुश्मन बनाने के लिए,**
**जरुरी नहीं कि लड़ा जाएं।**
**आप थोड़े से कामयाब हो जाओ,**
**हजारों दोस्ते होंगे तो पचास दुश्मन भी।।**

महाश्रमणी पू. श्री कौशल्यादेवी जी म. की 25वीं पुण्य तिथि पर

# एक अमिट व्यक्तित्व : पूज्या गुरुजी

– पू. डॉ. विजयश्री जी म. 'आर्या'

श्रमण- संस्कृति के नभ पर अपनी ज्योर्तिमयी आभा बिखरने वाली, अध्यात्मयोगिणी महाश्रमणी के नाम से सुविख्यात पूज्या गुरुणी जी श्री कौशल्या देवी जी म. का नाम लेते ही एक सादगीमय सहज जीवन जीने वाली शांत-प्रशांत छवि आँखों के समक्ष उभर आती है। पूज्या गुरुणी जी यद्यपि आज साक्षात संदेश विद्यमान नहीं है किन्तु दिव्य आत्मा की उपस्थिति उनके स्थूल देह से ही नहीं वरन् उनके भूमण्डल पर आज भी प्रसरित शुभ गुणोंसे अपने आस-पास दिखाई देती है। उनसे पावन हुए परमाणु पुंजों के द्वारा वे हमारे मध्य आज भी हैं। उनके चरणों में जिनकी आस्था एवं निर्मल श्रद्धा है। उन्हें आज भी उनका साक्षात् परिचय होता है, वे उन्हें अमुक प्रकार की प्रेरणा एवं संदेश भी देते हैं। संकेत करके वे उन्हें भविष्य में सावधान रहने का निर्देश भी करते हैं।

पूज्या गुरुणी जी ने जीवन-पर्यन्त अखण्ड आत्म-साधना करके त्याग और वैराग्य के उत्तरोत्तर चढ़ते गुण स्थानों का स्पर्श कर अध्यात्मिक जीवन जीया था। इसी कारण वे सबके मुख से 'अध्यात्मयोगिनी' के नाम से पुकारे जाते थे। उन्होंने ज्ञान-दर्शन चारित्र और तप रुप धर्म चतुष्टय की उत्तम रीति से आराधना की और मोक्षमार्ग को प्रशस्त किया, अतः उन्हें श्रमणी ही नहीं 'महाश्रमणी' कहते हैं। उन्होंने निष्कलंक भाव से शास्त्रज्ञानं का स्वाध्याय कर उसके गहन तत्व का नवनीत हम शिष्यावृंद को दिया। अतः हमारे द्वारा वे 'गुरुजी' के नाम से सम्बोधित हुए। उनकी शांतमुद्रा एवं कषाय रहित भावों से भरपूर सौम्यता चतुर्दिक प्रसरित थी, जो कोई उनको देखता उनकी शांत सौम्यमुद्रा से प्रभावित हो जाता था। इसीलिए लोग उन्हें **'चौथे आरे की बानगी'** के रुप में पहचानने लगा। पूज्य गुरुणी की स्थिरबुद्धि, संतुलित वाणी और गुप्ति समिति युक्त भगवान महावीर के वचन उनमें मूर्तिमंत प्रगट थे।

पूज्या गुरुणी सागर के समान अच्छा बुरा सब कुछ पचा लेने की प्रचण्ड श्रमता वाली थी। उन्हें अपने गुणगान करने वाले से कोई मोह था, न अनादर या अपमान करने वाले के प्रति कोई क्षोभ। ऐसे अवसरों पर उनके मुख की एक रेखा भी बदली हुई नहीं होती, उनके दिल पर अपमान का भाव कभी होता ही नहीं था, क्योंकि वे अपमान को भी फूल के प्रहार की तरह झेल लेती थी। अतः वे 'समतामूर्ति' कहलाते थे। गुरुजी का परिचय हम चार पंक्तियों में इस प्रकार दे सकते हैं:

**जन-जन के उर भर गए, गुण की मधुर सुवास,**
**नहीं किसी के द्रोही बने वे, नहीं किसी के खास।**
**ऐसी दुर्लभ दिव्य मूर्ति थे, श्रद्धा केन्द्र हमारे**
**देते हैं आशीष प्रेरणा, हमको है विश्वास।**

✧✧

**शिक्षा एक अंतहीन आकाश ...**

**शिक्षा, शिक्षा, केवल शिक्षा ! यूरोप के शहरों का भ्रमण करते समय वहाँ के गरीबों के भी आराम और शिक्षा का जब मैंने निरीक्षण किया, तो उसने मेरे देश के गरीबों की स्थिति की याद जगा दी और मेरी आँखों से आंसू गिर पड़े। इस अन्तर का कारण क्या है? उत्तर मिला, 'शिक्षा'। शिक्षा से उनमें आत्मविश्वास पैदा हुआ जिससे स्वाभाविक ब्रह्मभाव उनमें जागृत हो रहा है।**

**– स्वामी विवेकानंद**

# धर्म प्रचार का सुलभ आधार पूज्य संत-साध्वी जी का विहार

- **अविनाश चोरड़िया जैन,** राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक, जैन कॉन्फ्रेंस

चातुर्मास सानंद सम्पन्न हो चुके हैं। विहार यात्राएं प्रारंभ हो चुकी हैं। क्योंकि जैनागमों में 'ईर्या-समिति को साध्वाचार का प्रमुख लक्षण बताया गया है। जन-जन के बीच जाकर धर्म प्रचार करना, अहिंसा, क्षमा, दया, सेवाभाव को प्रमुखता देना हमारे त्यागी वर्ग का मुख्य लक्ष्य है। इसी हेतु से हमारे पूज्य साधु-साध्वी जी म. सा. संयम का श्वेत बाना पहन कर, त्याग-तप की समाचारी को अंगीकार करके अपना जीवन दांव पर लगाया करते हैं। अतः हम पद यात्रा का महत्व समझें और अध्यात्म प्रहरी मूल्यवान जीवन की रक्षा सुरक्षा पर ध्यान दें।

**वर्तमान समय संत-साध्वी जी के अमूल्य जीवः-**

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इस गंभीर विषय पर गहन चिन्तन हेतु हमारे गुरु भगवंत व अग्रणी श्रावकगण गहन विचार मंथन करें। इससे पूर्व भी कई बार कई संतों व विद्वानों ने इस पर अपने विचार संघ के समक्ष रखे, लेकिन वे लम्बी चर्चा का विषय नहीं बन पाये। अनेक प्रतिक्रियायें मिलीं मौखिक व लिखित रुप में, जिनमें सहमति और असहमति, दोनों का मिश्रण था, लेकिन समाधन के उपाय नहीं थे। जबकि यह विषय अत्यधिक गंभीर भी है व संवेदनशील भी। वाहन प्रयोग खोला जाये या नहीं, खोला जाये तो किन शर्तों पर व कितनी मात्रा में? अगर नहीं खोला जाये तो सड़क दुर्घटनाओं व असामाजिक तत्वों द्वारा संतो से, विशेषकर साध्वियों के साथ दुर्व्यवहार से बचने का स्थाई उपाय क्या है?

इस विषय में पहल तो संघ के अग्रणी श्रावक-श्राविकाओं को ही करनी पड़ेगी, कारण कि जंगम तीर्थ रक्षा का दायित्व श्रावक समाज का है, लेकिन दुख होता है कि ऐसे विषयों पर संघ के अग्रणीजन अपना व्यक्तिगत मत प्रकट करते हुए भी हिचकिचाते हैं व बचते रहते हैं। पदों पर रहते हुए भी संस्थागत मत, बिना संघ/ समाज/ संस्था में चर्चा किये प्रकट भले ही कर दें, **लेकिन अपनी शुद्ध व्यक्तिगत सोच को अभिव्यक्त नहीं कर सकते हैं?**

धर्म में निरंतरता व प्रगति हेतु परंपराओं में समयानुसार परिवर्तन व सुधार द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव के कारण करना ही चाहिए और यह प्राचीन काल से होता भी रहा है।

करीब पाँचवी शताब्दी में जैन धर्म के अति महत्वपूर्ण पर्वों में भी परम्परा परिवर्तन हुए, अतः आवश्यक कारणों से होने वाले परिवर्तन पर ध्यान देकर सुरक्षा को विहार प्राथमिकता देना चाहिये।

परमात्मा ऋषभदेव के समय में अचेल-नग्नता व पांच महाव्रत के विधान को अजितनाथ से पार्श्वनाथ तक परिवर्तित करके सचेल-सवस्त्र व चार महाव्रत का विधान किया, जिसे पुनः परमात्मा महावीर ने अचेल-नग्नता व पांच महाव्रत में परिवर्तित किया। आचार्य आर्यरक्षित ने देशकालानुसार भिक्षुओं के लिए एक पात्र की जगह दूसरे पात्र का भी विधान किया। भिक्षु को दिन के तीसरे पहर में एक पहर की निद्रा में परिवर्तन, आज स्पष्ट परिलक्षित है। लेखन कार्य हेतु देवसर्द्धिगणी क्षमाश्रमण ने आगम रक्षार्थ कलम पकड़ी, जो आज तक धड़ा-धड़ छपने में परिवर्तित हो गयी है। ये तो धर्म की मूल परम्पराओं व सिद्धांतों में तीर्थंकरों से लेकर आगमों तक के परिवर्तन के कुछ ही उदाहरण है वही सामाजिक परिवर्तन की तो कोई थाह ही नहीं है। जब जिनेश्वर परमात्मा द्वारा निर्धारित नियम में व

आगमिक सिद्धांतों में भी द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव के अनुसार परिवर्तन हो सकता है तो स्थापित नियमों में आज के संदर्भ में परिवर्तन क्यों नहीं हो सकता? यह विचारणीय है।

परमात्मा महावीर के उपदेशों को विश्वव्यापी व जन साधरण के लिए उपयोगी बनाने हेतु आवश्यक सभी कायदों को यथावत रख, अनावश्यक का पूर्ण त्याग करते हुए प्राणीमात्र के कल्याणार्थ कार्य करना चाहिए।

**जिन शासन का प्रथम उदाहरण**

मरुदेवी माता को श्वेताम्बर परंपरानुसार हाथी के हौदे पर बैठे-बैठे केवलज्ञान व मोक्ष प्राप्त हो गया। न पशु की सवारी का त्याग, न राजसिक वस्त्रों का त्याग, न ही परिषह सहन करने की आवश्यकता अर्थात् न उग्र तपस्या, न उग्र विहार। मात्र हृदय की सरलता व चित्त शुद्धि से मोक्ष प्राप्त हो गया।

मेरे लिखने का यह अर्थ न लगाया जाये कि तप और त्याग अनावश्यक है। मेरा तात्पर्य यह है कि भावना, मन व चित्त की शुद्धि सर्वोपरि है व निःसंदेह निरंतर तप और त्याग इसमें बहुत अधिक सहायक होते हैं।

लेकिन सड़क के किनारे कंकड पत्थर होने से नंगे पांव चल रहे संत-साध्वी प्रायः फुटपाथ पर न चल सड़क पर चलते हैं, जिसके कारण सड़क दुर्घटना की संभावना बढ़ जाती हैं। शुद्ध आचरण के कारण संतों के चरणों में हमारा मस्तक होता है। उन चरणों को वर्तमान के दूषित वातावरण में शुद्ध व सुरक्षित स्थान उपलब्ध कराना भी हमारा कर्तव्य है। ये संघ का पूज्य कर्त्तव्य हैं।

हमें यह ध्यान रखना होगा कि जैन धर्म में दीक्षा लेने वाला कभी भी सुविधा पसंद नहीं होता, न ही कष्टों और परिषहों से घबराने वाला। ये आत्माएं तो हर हाल में सहज रहती हैं व स्व-नियंत्रण को अंगीकार कीये रहती हैं। ऐसे में उन पर किसी तरह का संदेह किया जाना अनुचित है। वास्तव में मुख्य मुद्दा यही है कि हम स्वयं सहायता करें नहीं और बात-बात पर शिथिलाचार की चर्चा करें। ये दोनों चीजें एक साथ चलने वाली नहीं हैं। हमें सोचना ही होगा कि हम श्रावकों द्वारा विहार के समय जितनी सेवा, समय व श्रम किया जाना चाहिए, वो तो नहीं होता मगर तर्जनी तुरंत उठती है, क्यों? यह मानसिकता हमें बदलनी होगी।

यह बात सही है कि वाहन प्रयोग से संतों की प्रतिष्ठा गिरेगी। संत की क्या, हम श्रावकों की प्रतिष्ठा पर भी प्रश्न-चिन्ह लगेगा, **मगर यदि विहार क्षेत्र में शुद्ध व सुरक्षित स्थान हमारे संतों को नहीं मिलता व उन्हें दुर्व्यवहार का शिकार होना पड़ता है तो प्रतिष्ठा अप्रतिष्ठा से अधिक आवश्यक बिन्दु सुरक्षा व उपयोगिता का है।**

गुरुओं के प्रति पूर्ण सम्मान व विश्वास रखते हुए व उनकी धार्मिक शुद्धता व क्रियाओं को करीब-करीब यथावत रखते हुए गहन चिन्तन कर अगर आवश्यक समझें तों प्रचण्ड अभियान चला कर संतों को वाहन प्रयोग न करने के लिए मनाया जाना चाहिए, लेकिन बदलाव तो इस बिन्दु में अवश्यंभावी है। यह मानवीय प्रकृति है कि हर बदलाव का विरोध होता है, फिर धीरे-धीरे यह विरोध तटस्थता में बदल जाता है और अंत में सामयिक स्वीकृति भी मिल जाती है।

**निष्कर्ष यह कि - 'इंदौर साधु-सम्मेलन' में निर्णित समाचारी के आवश्यक भाग आचरण को अंग बनाते हुए केवल आलोचना नहीं समाधान का मार्ग सुनिश्चित हो। संघ समाज विहार मार्ग में सहायक बनें। सुरक्षा और संवाद को प्राथमिकता दी जाएं। ईर्या समिति, धर्म-प्रचार, समाचारी और मूल्यवान जीवन का रक्षण हो। श्रावक-श्राविका समाज अपनी सेवा सजगता में बढ़ोत्तरी करें।** ✧✧

# हमारे प्रिय गुरुदेव का अक्षय सौभाग्य

- **बालचंद खरबड़ जैन,** राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, जैन कॉन्फ्रेंस

हमारे आराध्य गुरुदेव पू. श्री सौभाग्य मुनि जी म. 'कुमुद' के जीवन और योगदान पर चर्चा करते हुए मैं कहना चाहता हूँ कि आकोला, अहमदाबाद से लेकर कड़िया तक की कथा जन-जन में इतनी विश्रुत है कि कई-कई किवदंतियाँ सुनने में आती है, लेकिन आपकी संघीय सेवाओं का इतिहास इतना सबल है कि हर्ष से नयन भीग जाते हैं। ये इतिहास सबको जानना आवश्यक है। जो प्रेरक भी है तो प्रभावशाली भी है।

आपश्री प्राकृतिक वैराग्य से मंड़ित महात्मा हैं। आपने स्वयं के लिए कभी कोई पद नहीं मांगा, मगर बिना किसी दबाब या प्रभाव के सर्वोच्चतम पद आपको पाकर सुशोभित हुए। सर्वप्रथम मैं वि. सं. 2036 की श्रावण शुक्ला प्रतिपदा के उस अमृतयोग की चर्चा करना चाहूंगा। **इस अवसर पर राष्ट्रसंत पू. आचार्य श्री आनंदऋषि जी म. ने युवाचार्य पद पर साहित्य सेवी विद्वान एवं आगमोच्छारक** पू. श्री मिश्रीमल जी म. 'मधुकर' को श्रमण संघ का युवाचार्य घोषित किया।

मेरे आराध्य प्रवर्त्तक पू. श्री अम्बालाल जी म. भी इस अवसर पर अपनी शिष्य मंडली सहित समारोह स्थल जोधपुर में पधारे। जब पूज्य संत आपस में मिले तो प्रवर्त्तकश्री जी ने नव नियुक्त युवाचार्यश्री जी को आत्मीय बधाई एवं भावी जीवन की शुभकामनाएं दी। दोनों महापुरुषों में गहरी मित्रता पूर्व से ही थी। अतः विनोदवार्त्ता के मध्य युवाचार्यश्री जी ने पूज्य प्रवर्त्तकश्री जी को कहा कि **आपकी बधाई तभी स्वीकार करुंगा जब आप अपने योग्य शिष्य युवा मुनि सौभाग्य को मेरा सचिव बनाने का वचन दें।** पूज्य प्रवर्त्तकश्री जी ने तत्काल 'हाँ' या 'ना' कहना उचित नहीं समझा और मौन रहे। इस पर धर्म संकट में ड़ालते हुए युवाचार्यश्री जी बोले - मैं तब तक चादर नहीं ओढूंगा जब तक आप मुक्त हृदय से अपना सौभाग्य मुझे सौंप नहीं देंगे।

**यह अवसर जन्मजात 'सुजान' के 'सौभाग्य' बनने का प्रथम अवसर था।** एक सितारा उस दिन श्रमण संघ के 'नाश्वत-गगन' में तेजी से उभरा और प्रणम्य भूमिका प्रतिष्ठित हो गया। पीछे जाए तो सादड़ी सम्मेलन में भी आप पू. गुरुदेव श्री अम्बालाल जी म. के साथ पधारे थे। इसके बाद तो कोई ऐसा साधु-सम्मेलन हुआ ही नहीं जहाँ आपने अपनी छाप न छोड़ी हो।

चार वर्ष तक पू. युवाचार्यश्री जी के सचिव के रुप में आप सर्वप्रिय बने रहे, तत्पश्चात् पुणे के साधु-सम्मेलन में आपकी योग्यता, प्रतिभा और पुरुषार्थ को पुनः सम्मान प्राप्त हुआ, जो इंदौर और आज तक बरकरार है।

राष्ट्रसंत आचार्य पू. श्री आनंदऋषि जी म. ने अपना मन्तव्य प्रकट करते हुए 'लोकमान्य 'संत, 'शेरे राजस्थान', अहिंसा भूषण' पू. श्री रुपचंद जी म. 'रजत' का नाम महामंत्री के रुप में प्रस्तावित किया, लेकिन पू. गुरुदेव श्री रुपचंद जी म. ने पू. श्री सौभाग्यमुनि जी म. 'कुमुद' का नाम सुझाया और इस पर सर्वसम्मति बन गई। तब से लेकर आज तक श्रमण संघीय महामंत्री के रुप में पू. श्री सौभाग्य मुनि जी म. 'कुमुद' 'श्रमण संघ' के पर्याय बने हुए हैं।

राष्ट्रसंत आचार्य सम्राट् पू. श्री आनंदऋषि जी म,. साहित्य मनीषी आचार्य सम्राट पू. श्री देवेन्द्र मुनि जी म. एवं वर्तमान पट्टधर ध्यानयोगी युग प्रधान आचार्य पू. डॉ. श्री शिवमुनि जी म. के साथ आपने जिस प्रकार से संगठन, कौशल, संघीय प्रबंध, समाचारी अनुशासन, भविष्य की योजना, श्रमण संघ के विस्तार एवं असंख्य श्रद्धालुओं के साथ ताल-मेल बना कर श्रमण संघ एवं स्थानकवासी जैन समाज की इस सरल एवं आड़म्बर मुक्त साधना पद्धति की सेवा की है, वो अक्षुण्ण बनी रहे।

**आपकी छत्र-छाया हम पर बनी रहे इसी मंगल कामना के साथ जन्मदिवस की हार्दिक शुभकामना, वंदन-अभिनंदन।**

✧✧

# (GST) वस्तु एवं सेवा कर में प्रस्तावित बदलाव की विस्तृत जानकारी

डॉ. अशोक्कुमार एन. पगारिया जैन, C. A.
अध्यक्ष - प्रत्यक्ष कर समिति महाराष्ट्र चेंबर्स ऑफ कामर्स, मुंबई

The recommendations from the 23rd GST council meeting held at Guwahati on 10th November 2017 are given below: as to be effective from 15.11.2017.

**Filing of returns to be simplified**

- Taxpayers should file the returns on Form GSTR-3B with the payment of tax by 20th of every month till March 2018.
- Filing of form GSTR-2 and GSTR-3 suspended from the current financial year. However, filing of GSTR-1 will continue for the entire period.
- Taxpayers will be divided into two categories for filling of details in the Form GSTR-1with invoices.
- **They are:**

1. Taxpayers with annual turnover up to or below Rs.1.5 core need to file GSTR-1 on a quarterly basis as per following dates:

Period

Revised dates
July-September> December 31,2017
October-December> February 15, 2017
January-March>April 30, 2018

1. Taxpayers with annual turnover more than Rs.1.5 crore need to file GSTR-1 on a monthly basis as per following dates:

Period>Revised dates
July-October>December 31, 2017
November>January 10, 2018
December>February 10, 2018
January>March 10, 2018
February>April 10, 2018
March>May 10, 2018

- Facility for the manual filing of the application for the advance ruling introduced for the time being.

Penalties/fees reduced

- A large number of taxpayers were unable to file their returns in Form GSTR-3B within due date of July, August, and September 2017.Late fee waived in all such cases. It has been decided that where such late fee was paid, it will be re-credited to their Electronic Cash Ledger under "Tax" head instead of "Fee" head so as to enable them to use that amount for the discharge of their future tax liabilities. The software changes for this would be made and thereafter this decision will be implemented.
- For the succeeding months i.e. October 2017 onwards, the amount of late payable by a taxpayer whose tax liability for that month was "NIL" will be Rs.20 per day (Rs. 10 per day each if it is under CGST AND SGST Acts). Earlier it was Rs.200 per day(Rs. 100 per day each if it is under CGST AND SGST Acts).
- For the succeeding months i.e. October 2017 onwards, the amount of late payable by a taxpayer whose tax liability is payable (other than NIL )for that month will be Rs.50 per day (Rs. 25 per day each if it is under CGST AND SGST Acts). Earlier it was Rs.200 per day (Rs. 100 per day each if it is under CGST AND SGST Acts).

*Composition scheme*

- Threshold limit for composition scheme to be increased to Rs.1.5 crores.
- Uniform GST rate of 1% applicable for traders and manufacturers.
- Composition dealers will not have any inter-state taxes and input tax credit.
- Supply of services up to Rs. 5 lakhs per annum for the taxpayers registered under the GST Composition Scheme.

***Further benefits for service providers***

- Exports of services to Nepal and Bhutan exempted from GST. It has now been decided that such exporters will also be eligible for claiming Input Tax Credit in respect of goods or services used for effecting such exempt supply of services to Nepal and Bhutan.
- In an earlier meeting of the GST Council, it was decided to exempt those service providers whose annual turnover is less than Rs. 20 lakhs (Rs. 10 lakhs in special category states except for J &K).
- They are exempted from obtaining registration even if they are making inter-State taxable supplies of services. As a further measure towards taxpayer facilitation, it has been decided to exempt such suppliers providing services through an e-commerce platform from obtaining compulsory registration. As a result, all service providers, whether supplying intra-State, inter-State or through e-commerce operator, will be exempt from obtaining GST registration, provided their aggregate turnover does not exceed Rs. 20 lakhs (Rs.10 lakhs in special category States except for J & K).

***Extension of due dates***

- Taking into consideration the late availability or unavailability of forms on the portal. The due dates are extended for the following forms

Month Form
Original due dates>New due dates

**July-September**

***GST ITC-04***

October 25, 2017(original)

December 31, 2017(Revised)
July-September
***GSTR-4***
October 18, 2017(Original)
December 24, 2017(Revised)

**July**

***GSTR-5***
August 20, 2017(original)
December 11, 2017(revised)

**July**

***GSTR-5A***
August 20, 2017(Original)
December 15, 2017 (Revised)

**July**

***GSTR-6***
August 13, 2017(Original)
December 31, 2017(Revised)
***TRAN-01***
September 30, 2017(Original)
December 31, 2017(Revised)

- One time option to be given till this date) Onetime option of revision also to be given till this date*

***Tax for restaurant***

- Taking into consideration the tax rate slashed from 18% to 5% on all outlets, exept those in high end hotel with daily tariff of over Rs.7500/-.The input tax credit for restaurant has also been scrapped.

✧✧

दीक्षा जयंती पर विशेष

# युग निर्माता दो महापुरुषों का श्रद्धास्पद संयमी जीवन

**- पारस मोदी जैन,** राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य, जैन कॉन्फ्रेंस

जब जब हम राष्ट्र संत आचार्य देव पू. श्री आनंदऋषि जी म. एवं मेवाड़ प्रवर्त्तक समता और साधना के संगम पू. श्री अम्बालाल जी म. के महान जीवन चरित्र से मंडित स्वर्ण पृष्ठों को पढ़ने में तल्लीन होते हैं, तो दीक्षा और शिक्षा की सार्थकता स्मरण में आती है।

जिनशासन में दीक्षा का महत्व बताते हुए कहा गया है- **'न दैन्यम न पलायनम'** इस कथन से स्पष्ट है कि -

**यह रास्ता सपाट नहीं शूल भरा है,**
**लेकिन क्या कोई वीर शूलों से डरा है?**

वैसे भी वैराग्य वो चन्दन है, जिसे बिरले ही माथे पर सजाते हैं। ये चंदन कुछ ऐसा गजब का है। जैसे पारस पत्थर। जो स्वयं तो अटल अडिग है। लेकिन जिसे भी छू देता है, उसे सोना बना देता है। यही बात पूज्य संतों के संदर्भ में भी स्टीक है। संत-सत्संग भी सौभाग्य का जनक है।

वहीं यह सर्व ज्ञान है कि परम पू. श्री आनंदाचार्य का जीवन दुख दर्द पीड़ा के अलाव में तपकर कुंदन बना। भूख गरीबी, मृत्यु दुर्घटना हर कोण से दर्द मिला मगर हर चोट ने उन्हें ओर-ओर-ओर सहने और सहनशील होने की क्षमता दी। हर पीड़ा ने प्रेम में परिणित हो आपको साक्षात आनंद बना दिया।

आचार्य श्री ने त्याग ही त्याग की ऐसी यशगाथा रच दी कि बड़े से बड़ा पद आपके चरणों में लौट आया। आपने भी हर दायित्व के साथ न्याय किया। आप सम्प्रदाय के आचार्य बने फिर छः सम्प्रदायों के प्रमुख बने शांति रक्षक बने, प्रधानमंत्री बने, फिर आचार्य बने। हर पद आप से गौरवांवित हुआ। यह आपके चारित्र की महानता है। आपके संयम जीवन की सार्थकता है

**श्रमण संघ का स्वर्णकाल**

सन् 1964 से 1991 तक आप श्रमण संघ के द्वितीय पट्टधर आचार्य रहे। आपने संघशास्ता की भूमिका को एक नया आयाम दिया। आपने छोटो को प्यार दिया, समकक्षों को अपनी बात खुलकर कहने का अवसर दिया। बड़ों को आदरास्पद सम्मान दिया। इससे सकल संघ की श्रद्धा दृढ़तर बनी। श्रावकों के चहेते बनकर श्रद्धा का ऐसा उज्जवल व्यौम रच दिया कि अनेक क्षेत्रों में आपके मंगल आशीर्वाद से कई प्रतिभाएं समाज के फलक को सुशोभित करने लगी। विवादों के भी कतिपथ अवसर आएं मगर, अपने शील संस्कार और साधना से सबका शमन हो गया।

जो हस्तियाँ विद्रोह कर के मार्गच्युत हो गई आज उनका अस्तित्व नाम मात्रा को रह गया मगर आप जब तक रहे प्रभाव और प्रभुत्व सम्पन्न रहे। आज आप देह मुक्त है मगर यश युक्त है। आपने अपने व्यक्तित्व और कृतित्व से दिखा दिया कि -

**सूर्य दमका तो आपके ही तपोबल दम से**
**चाँद रोशन था आपके ही शील संयम से**
**धरा के लाल ने 'आनंद' कर दिया सार्थक,**
**दसो दिखाएं बुझ गई थी आपके गम से**

**ऐसे महान आचार्य श्री आनंदऋषि जी म. सा. की 'दीक्षा जयंती' पर कोटि-कोटि वंदन नमन।** इसी क्रम में दूसरे महापुरुष मेवाड़ प्रवर्त्तक पूज्य गुरुदेव श्री अम्बालाल जी म. की दीक्षा जयंती का

पावन प्रसंग इस पखवाड़े में आ रहा है।

पूज्य मेवाड़ प्रवर्त्तक गुरुदेव श्री अम्बालाल जी म. ने भी ने अनगढ़ पत्थर से कोहेनूर बनने की कहानी स्वयं रची है। आप मोह कारा से राज्य के कारागार तक यातना और पीड़ा में झुलसे, मगर सोना तो तपकर ही कुन्दन बनता है। यह तथ्य प्रचंड रुप से सिद्ध हुआ।

सारे प्रसंगों में तपकर आप अम्लान-अग्लान होकर मुस्कुराते हुए संयम मार्ग में प्रव्रजित हुए। अपनी शांत प्रशांत साधना से आपने अपने आप को वह बनाया जो बन पाना हरेक के बस की बात नहीं है। आज मेवाड का गांव गांव **गुरु अम्बेश** के गुण गाते नहीं अधता है। क्योंकि आपने गरीब अमीर सबको अपनी समदृष्टि से गले लगाया व अपना बनाया। हजारों लोगों के लिए आपका नाम उद्धारक मंत्र के समान संकटमोचक बन गया।

**आज मेवाड़ का युवा हो या बुर्जुग एक समान श्रद्धा रख कर आपको अपना भगवान मानता है। यह भगवदता यह देवत्व आपके शुद्ध चरित्र का पर्याय है।** आपने संगठन, शिक्षा व सेवा की अलख जगाते हुए श्रमण संघ की कीर्ति में चार चाँद लगाएं। अनेक संस्थानों के माध्यम से सामाजिक सुधर को गति दी, दलित-पतित जनों को महावीरीय मार्ग का पथिक बनाकर व्यसन मुक्त किया। 'संवर-साधना' का अलख जगाकर सद्मार्ग और सद्धर्म का ध्वज फहराया। यह आपके जीवन की बहुमुखी उपलिब्ध है।

**मधुर संबंधों की मनोहारी समाज रचना -**

आपने श्रमण संघ निर्माण में अपनी समन्वयी भूमिका से अपने समकक्ष महापुरुषों के साथ संघ समर्पित योजना की ऐसा रचना की कि क्या पू. श्री मरुधर केसरी म. सा., क्या पू. श्री पन्नालालजी म. सा., क्या पू. श्री पुष्करमुनि जी म. सा., क्या पू. श्री प्रतापमलजी म. सा., क्या पू. श्री हस्तिमलजी म. सा. , क्या पू. श्री मोहनलालजी म. सा. सबको अपना प्रिय बना लिया। सबके हृदय में आपके लिये महान आदर भाव था।

जब आचार्य के रुप में पू. श्री आनंदऋषि जी म. सा. का राजस्थान प्रवास चल रहा था तब आपने राजस्थान के अनेक अंचलों में आचार्य श्रीजी के साथ सघन प्रवास करके उसे सफल बनाया। आपने सदैव संयम, समता साधना को प्राथमिकता देते हुए अपना साध्वाचार सुरक्षित रखा, मगर मेवाड़ के ग्राम ग्राम में लोक चेतना जागरण को संबल बनाए रखा। **एकता एवं सामाजिक सुधर आपके जीवन लक्ष्य रहे। जिसका परिणाम आज मेवाड़ के देशभर में फैले श्रद्धालु स्वयं हैं।**

यही कारण है कि पू. प्रवर्त्तक गुरुदेव श्री अम्बालाल जी म. के हजारों भक्त आज भी आपको अपना आराध्य मानते हैं। आपकी प्रेरक स्मृति को शत् शत् प्रणाम। ✧✧

## !! जिन वाणी !!

### शास्त्र - ज्ञान

**जैसे धागा पिरोई हुई सुई गिर जाने पर भी गुम नहीं होती, वैसे ही शास्त्र-ज्ञान युक्त व्यक्ति संसार में रहने पर भी नष्ट नहीं होता।** ✧✧

### स्वाध्याय सिद्धि

**ज्ञान से ध्यान की सिद्धि होती है। ध्यान से सभी कर्म नष्ट हो जाते हैं। निर्जरा का फल मोक्ष है। अतः सतत् ज्ञानाभ्यास करना चाहिए।** ✧✧

# जैन मुनि चर्या की विशेषता पद विहार एवं शास्त्रीय उपमाएं

- **शेर सिंह जैन,** सम्पादन सहयोगी, दिल्ली

हॉल ही में चातुर्मास विविध अनुष्ठानों के साथ जप-तप साधना सेवा सह सम्पन्न हुए, कार्तिक पूर्णिमा को चातुर्मास कल्प सम्पन्न होने के साथ ही ईर्या समिति के पालन हेतु विहार होने लगे हैं।

श्री संघों ने शुभकामना सहित मुनि भगवंत एवं महासतियाँ जी को विदाई दी। चार माह तक धर्मध्यान कराने का आभार मानते हुए गुणगायन भी किया गया।

हमारे आराध्य त्यागी वर्ग ने अनेक प्रत्याख्यान कराए एवं ध्यान में अनेंको आत्माओं को संलग्न किया।

इसी तथ्य को ध्यान रखकर त्यागी वर्ग ने धर्मस्थानों को धर्म प्रचार हेतु छोड़ दिया। **वहीं अणगार धर्म संकल्पी पू. संत-साध्वी जी म. ने चार माह में प्रगाढ़ हो चले स्नेह संबंधों को क्षण भर में भूला कर पुनः अपना प्रधान कर्त्तव्य धर्म प्रचार करने का बीड़ा उठा लिया है।** यही कारण है कि आगम शास्त्रों में ईर्या समिति के अन्तर्गत अनेक उपमाओं से पद विहार की खूबी को अनेक विशेषणों, अनेक संज्ञाओं से अभिहीत किया गया है।

**विहार दृष्टि से मुनि की विविध उपमाएँ**

**अनुयोगद्वार सूत्र में मुनि को द्वादश उपमाओं से सुशोभित करते हुए कहा गया है-**

**उरग-गिरी-जलण-सागर-नहतल-तरु गणसमो अ जो होई।**
**भ्रमर-मिय-धरणि-जलरुह-पवण समो अ जो समणो।**

अर्थात् मुनि को सर्प, पर्वत, अग्नि, सागर, आकाश, वृक्ष, भ्रमर, हिरण, पृथ्वी, कमल, सूर्य और पवन की उपमा दी गई है। आईए, हम संक्षेप में विहार की दृष्टि से इन उपमाओं के स्वरुप को समझने का प्रयास करें-

1. **सर्प समान मुनिः-** (i) जैसे सर्प अपने रहने के लिए स्वयं बिल नहीं बनाता किन्तु चूहे आदि के बनाये बिलों में रहता है। उसी प्रकार साधु भी अपने रहने के लिए न तो स्वयं घर बनाता है, न ही बनवाता है और न ही अपने निमित्त बनाये हुए घर की अनुमोदना करता है, बल्कि गृहस्थ के लिए बनाए हुए घर में ही उनकी आज्ञा लेकर संक्षिप्त आवास बनाता करता हैं।
   (ii) जैसे सर्प काँटे आदि से ड़रता नहीं है और एकाग्र दृष्टि से देखकर चलता है, उसी प्रकार मुनि भी परिषद- उपसर्ग से डरे बिना ईर्या समिति का पालन करते हुए विहार करते हैं।
2. **पर्वत के समान मुनिः** (i) जिस प्रकार पर्वत प्रचण्ड पवन से भी चलित नहीं होता है, उसी प्रकार मुनि भी भयंकर परिषह- उपसर्गे से चलित नहीं होते हैं तथा निरन्तर **चरेवैति-चरैवेति (विहार)** गतिशील रहते है।
   (ii) पर्वत में देवतागण भी आकर क्रीड़ा करते है, उसी प्रकार मुनि भी शिष्यादि भव्य जीवों के ज्ञान क्रीड़ा के स्थान होते है।
3. **अग्नि के समान मुनिः-** जिस प्रकार अग्नि अंधकार को दूर कर प्रकाश फैलाती है। उसी प्रकार मुनि भी ग्राम-ग्राम, नगर-नगर भ्रमण करते हुए जगत के मिथ्यात्व रुपी अंधकार को दूर कर सम्यक्त्व रुपी दीपक से ज्ञान का प्रकाश फैलाते हैं।

4. **समुद्र की तरह मुनिः-** जैसे समुद्र अपनी मर्यादा को नहीं छोड़ता है, उसी प्रकार मुनि भी तीर्थंकर भगवन्त की आज्ञानुसार विचरण कर जन-जन में धर्मदेशना का शंखनाद फूंकते हैं तथा स्व-पर कल्याण में तत्पर रहते हैं।

5. **आकाश की तरह मुनिः-** आकाश निरालंबन है, उसी प्रकार मुनि भी किसी की अपेक्षा के बिना स्वावलम्बी होकर विचरण करते हैं।

6. **वृक्ष के समान मुनिः-** मुनि भी वृक्ष की भांति शीत-ताप आदि कष्टों को सहन करते हुए, अनुकूलता-प्रतिकूलता में समभाव रखते हुए अपने आश्रितों के कषायों का शमन करते हुए सतत् विचरण करते हैं।

7. **भंवर के समान मुनिः** (i) जिस प्रकार भंवर गुंजन करता है, उसी प्रकार मुनि ग्रामानुग्राम विचरण कर धर्मदेशना का गुंजन करते हैं। (ii) जिस प्रकार भंवर सुंगंध लेने के लिए बिन बुलाये पुष्प पर जाता है, उसी मधुकरी वृत्ति से मुनि भी बिना किसी आसक्ति या राग भाव के गृहस्थ के बिना बुलाये गोचरी हेतु भ्रमण करते हैं।

3. भंवर, केतकी, मालती आदि के फूलों पर बार-बार जाता है। इसी प्रकार मुनि, श्रद्धालु, धर्मी पुरुष के पास बार-बार जाते हैं, उन क्षेत्रों में विहार करते हैं, जहाँ धर्म व जिनशासन की प्रभावना की अधिकतम संभावना हो।

8. **हिरण के समान मुनिः-**

(i) मुनि हिरण की तरह सदैव एक स्थान में नहीं रहते है।

(ii) जैसे जंगल में हिरण अकेला घूमता है। उसी प्रकार मुनि भाव से एकाकी विचरण करते हैं।

3. जिस प्रकार हिरण मांस की अपेक्षा निर्दोष तृण आदि से अपना जीवन यापन करता है। उसी प्रकार मुनि भी बयालीस दोषों से रहित भिक्षा ग्रहण करने के लिए घर-घर, द्वार-द्वार जाकर अपना जीवन निर्वाह करते है।

9. **पृथ्वी के समान मुनिः-** जिस प्रकार पृथ्वी, अग्नि, वायु, तिर्यंच, मनुष्य आदि के कृत्य-छेदन- दहन- शोषण आदि को सहन करती है। उसी प्रकार मुनि परिषह-उपसर्गों को सहन करते हुए भू-मण्डल पर विचरण करते हैं।

10. **कमल के समान मुनिः-** कमल कीचड़ में पैदा होता है, जल में बढ़ता है और कीचड़ व जल से अलिप्त रहता है, उसी प्रकार कर्म रुप कीचड़ में पैदा होते हैं, भोग रुप जल में बढ़त है, पिफर भी दोनों को छोड़कर निर्लिस होकर ग्रामानुग्राम विचरण करते हैं।

11. **सूर्य के समान मुनिः-** सूर्य मेरु के नित्य प्रदक्षिणा देता है तथा निरन्तर गतिशील रहता है, उसी प्रकार मुनि भी वीतराग की आज्ञा के अनुकूल विचरण करते हुए आत्म साधना में डूबे रहते हैं।

12. **पवन के समान मुनिः-**

(i) पवन अप्रतिबद्ध होकर बहता है, उसी प्रकार मुनि जी अप्रतिबद्ध विहारी होते है।

(ii) पवन सतत बहता है, उसी प्रकार मुनि भी मोक्षमार्ग में सदा प्रवृत्त होते हैं। वास्तव में हमारे पूज्य संत साध्वी जी म. इन्हें अपनी संयम यात्रा से नित्य सिद्ध करते हैं। धर्म प्रभावना करते हुए सतत उपकार करते हैं।

✧✧

आवरण कथा

# जन्मजात साधुत्व से समृद्ध थे युवाचार्य श्री मिश्रीमलजी म. सा. 'मधुकर'

– **मोहनलाल बी. लोढ़ा जैन,** राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य, जैन कॉन्फ्रेंस

तिंवरी (राजस्थान) में घाडीवाल (कोठारी) परिवार में श्रीयुत जमनालाल जी एवं उनकी धर्मपत्नी तुलसी बाई के सबसे छोटे सुपुत्र थे श्री मिश्रीमल जी। परिवार में तीन पुत्र होने के बावजूद माता पिता के हाथों में सिर्फ अकेले मिश्रीमल जी ही रह गये थे, क्योंकि ताऊ जी को पुत्र न होने से उनका एक भाई उनका दत्तक पुत्र बन गया था और बीच वाले भाई का बचपन में ही स्वर्गवास हो गया था। बचपन में श्री मिश्रीमल जी को कहानियों, गीत, गायन से बहुत लगाव था और उनके इसी लगाव ने उन्हें आचार्य पू. श्री जयमल जी म. के संप्रदाय के पूज्य गुरुवर स्वामी श्री जोरावरमलजी म. एवं उनके शिष्य पू. श्री हजारीमल जी म. के चरणों में लाकर उपस्थित कर दिया था। दोनों ही संतों की आवाज में गजब की मिठास थी और बच्चों को भजन, कहानियाँ स्तोत्र गाकर भी सुनाते थे। जब भी दोनों महान संत तिंवरी में विराजमान रहते तब युवा श्री मिश्रीमलजी घूम फिरकर उनके पास आ जाते थे।

उनकी 7 वर्ष की आयु में भी अनुकरण वृति अधिक एवं बहुत तेज थी इसी वजह से उच्च संस्कार बचपन से ही उनमें जगने लग गये थे। कालांतर में जब पिताजी का साया सर से उठ चुका था। माताजी की भी वैराग्य की भावना बनने महासती सरदारकुंवरजी जो कि स्वामी पू. श्री जोरावरमल जी म. की प्रमुख शिष्या थी के संसर्ग में आने से दीक्षा लेने की दृढता तक जा पहुंची और वे अपने छोटे पुत्र श्री मिश्रीमल जी म. की बातों को सुनकर उनको हतोत्साहित न करके उल्हासित ही होती थी। उसका एक कारण और भी था। बचपन में एक अल्हड़ फकीर आया था और उसने श्री मिश्रीमल जी को देखकर कहा था कि यह बालक बहुत होनहार है। किसी साधु संन्यासी के पास चला गया तो साधु ही बनेगा एवं साधु समाज में चमकता हुआ सितारा बनेगा। इसके लक्षण बहुत ही उज्जवल हैं। वास्तव में हुआ भी यही जो सर्व ख्यात है।

**वैराग्य भाव एवं दीक्षा-** वि. संवत् 1977 में गुरुदेव स्वामी पू. श्री जोरावरमल जी म. का चातुर्मास तिंवरी में ही था एवं तभी से पू. श्री मिश्रीमल जी म. उनके साथ ही रहने लग गये थे। तिंवरी में लोगों में चर्चा होने लग गयी कि श्री मिश्रीमल तो अब साधु बनेगा। कुछ लोगों को यह सुनकर अच्छा लगता था तो कुछ लोगों को यह बिल्कुल पसंद नहीं था।

इन सब बातों से पूज्य गुरुदेव स्वामी जी सतर्क हो गये एवं जो प्रमुख श्रावक थे वे भी, क्योंकि उन्होंने बचपन में ही श्री मिश्रीमल की जो गुरुदेवों के प्रति लगन देखी थी। वे जानते थे कि यह बालक निश्चित ही दीक्षा ही लेगा। इसलिए उन्होंने सोचा कि चातुर्मास समाप्त होते ही श्री मिश्रीमल जी को तिंवरी के बाहर भेज दिया जाये एवं दीक्षा भी करा दी जाये।

घर पर उन्होंने श्री मिश्रीमल जी एवं उनके माताजी से काफी पूछताछ की एवं सारी ऊँच नीच को समझाया। माताजी को कहा कि आप तो दीक्षा ले रही हैं मगर अपने छोटे बच्चे को क्यो दीक्षा दिलवा रही हैं? इस पर मिश्रीमल जी ने कहा कि मुझे साधुओं का जीवन बहुत अच्छा लगता हैं एवं मैं तो साधु ही बनना चाहता हूँ। उनके सरल एवं स्पष्ट उत्तर को ऊपर बैठे लोगों पर बहुत प्रभाव पड़ा। वे उनके एवं उनके माता जी के विचारों से पूर्णतया सहमत हो गये, मगर उन्होंने यहीं कहा कि अभी एक दो वर्ष श्री मिश्रीमल जी को शिक्षित करो भविष्य में दीक्षा दिला देना, जब तक वातावरण भी शांत हो जायेगा।

स्वामी जी ने वि. संवत् 1978 का चातुर्मास हरसोलाव में संपन्न करके 1978 का चातुर्मास ब्यावर में संपन्न किया। यहां पुनः दीक्षा की बातें होने लगी, श्री मिश्रीमल जी की माताजी अब देरी नहीं कराना चाहती थी। श्री मिश्रीमल जी अध्ययन कर ही रहे थे। मरुधरा का वातावरण अनुकूल कम था इसीलिए गुरुदेव उधर दीक्षा नहीं दिलवाना चाहते थे। इस प्रकार बात आगे बढ़ गई लेकिन अजमेर में उस समय स्वामी जी नानक राम जी म. के संप्रदाय के स्वामी पू. श्री धूलचंद जी म. एवं स्वामी पू. श्री पन्नालाल जी म. काफी प्रभावशाली एवं वर्चस्वी संत थे। उनका स्वामी पू. श्री जोरावरमलजी म. के साथ विशेष स्नेह था, उनके विशेष आग्रह से ही अजमेर का भिणाय क्षेत्र दीक्षा के लिए निश्चित किया गया था।

इस तरह श्री मिश्रीमल जी की दीक्षा शांति, प्रेम और अभय के वातावरण में हजारों के जनसमूह के बीच वैशाख शुक्ल दशमी वि. संवत् 1980 तारीख 26.4.1923 को संपन्न हुई। आपने पूज्यवर स्वामी श्री जोरावरमल जी म. के श्रेष्ठतम शिष्य बनकर उनका नाम रोशन किया और जैन संत समाज में एक उच्च कोटि के संतो की श्रेणी में कोई भी आज उनको भूला नहीं सकता। आपश्री की जन्म जयंती पर कोटिशः वंदन नमन। ✧✧

## 365 दिन पालन योग्य श्रावकाचार

- श्रावक नवतत्व और धर्म क्रिया के जानकार हों।
- श्रावक सहायता के अभाव में धर्मकरणी छोड़े नहीं।
- श्रावक देव आदि के डिगाने पर भी धर्म से डीगे नहीं।
- श्रावक जैन धर्म में शंका रखे नहीं, श्रद्धा अखंड रहे।
- श्रावक जो सूत्रों का अर्थ प्राप्त है, उसके निर्णय में प्रमाद नहीं करें।
- श्रावक मेरा आयुष्य अस्थिर है, ऐसा चिंतन अवश्य रखें।
- श्रावक स्फटिक रत्न जैसे निर्मल चरित्र होवो।
- श्रावक के घर द्वार, दान के लिए हमेशा खुले रहें।
- श्रावक प्रतिमाह में 2-4-6 पौषध करें।
- श्रावक चाहे जहाँ जाएं, परन्तु उनके प्रति अविश्वास उत्पन्न नहीं हो ऐसे सदाचारी रहे।
- श्रावक लिये गए व्रत-पच्चखान को निर्मल भाव से पाले।
- श्रावक 14 प्रकार का निर्दोष और प्रासुक आहार दान बहरावे।
- श्रावक धर्म उपदेश सुनें और दूसरे को सुनाये।
- श्रावक तीन मनोरथ का चिंतन करें।
- श्रावक चार तीर्थ के गुणगान सेवा भक्ति आदि करें।
- श्रावक नया-नया ज्ञान नित्य सीखें, स्वाध्याय करें
- श्रावक कोई असहाय मनुष्य या सहधर्मी आया हो तो उसकी सहायता करें।
- श्रावक दोनों समय प्रतिक्रमण करें, श्रावक सभी जीवों के साथ मैत्रीभाव रखें, श्रावक यथाशक्ति तपस्या करें। ✧✧

स्मृति दिवस विशेष

# मृत्यु को महोत्सव बनाने वाले, अनुयोग द्वार प्रवर्त्तक, उपाध्याय श्री कन्हैयालाल जी म. 'कमल'

– **लादूलाल बाफना जैन,** राष्ट्रीय मंत्री, जीवन प्रकाश योजना, जैन कॉन्फ्रेंस

मृत्यु को महोत्सव बनाने वाले, उपाध्याय श्री जी अनुयोग द्वार प्रवर्त्तक, चरम विद्वान योगेश्वर उपाध्याय श्री कन्हैयालाल जी म. 'कमल' एक विशिष्ट संत थे। आप श्री ऐसे श्रुतजीवी महात्मा थे जो आगम शास्त्रों के अमर अक्षर ज्ञान में रम गए थे। आप कहा करते थे कि ज्ञानावर्णीय कर्म के पांच प्रकार हैं। मति, श्रुत, अवधि और मनः पर्यव के साथ केवल्य ज्ञानावर्णीय कर्म है। '**इनमें अंतराय आने पर कर्म क्षय के हेतु मन, वाणी और काया को संयम से विजय करना चाहिये। यदि अंतराय अत्यंत गहरी हो तो आतापना या निर्जल तप करना चाहिये। ह्रदय में दया भाव रख कर, भोग विलास से उदासीन रहना चाहिये।**'

**उपकारी के उपकार और शत्रु को भी द्वार पर आने पर आदर देना भी कर्मक्षय का कारक बनता है। दानी को दान करते समय रोकना व धर्म प्रचार के कार्य में लगे साधक को अवरोध करना घोर कर्म बंध कराता है।**

ऐसे गहन ज्ञानी, तत्वज्ञ सतत् स्वाध्यायी लेखक विचारक, सिद्धहस्त व्याख्याता उपाध्याय श्री का सम्पूर्ण जीवन मनन, चिन्तन, अणुवेषण को समर्पित रहा। वास्तव में आप ज्ञानी थे, ज्ञान मय थे, ज्ञान लय थे। ये अपने आप पर आपका प्रयोग था, अनुयोग था

आपने अनुयोग द्वार सूत्र को आत्मसात् कर जन जन को चरण करण और योग का ज्ञान गणित पढ़ाया। आपने आधुनिक युग में जैन विद्या और विधा को ऐसे प्रस्तुत किया कि सभी धन्य धन्य कह उठे। आपका जन्म वि. सं. 1970 की चैत्र शुक्ल नवमी को हुआ। इस दिन मरुधरा के केकिन्द की धरती पवित्र हो गई। वि. सं. 1988 में वैशाख शुक्ल छट्ट को सांडेराव में दीक्षा लेकर '**अमर-कोष**' जैसे श्रेष्ठ ग्रंथ का पारायण किया। आप इतने महान विद्वान थे कि आपसे कोई प्रश्न अनुत्तरित नहीं होता था। लेकिन जब आप पर कुछ लेखन कार्य प्रारंभ हुआ तो आपने कहा– **मेरी सुरुचि साहित्य सम्पादन से जुडी है। मेरे अपने बारें में नहीं। यह थी आपकी असंगता, ज्ञान का तलस्पर्श कर्त्ता ही ऐसा कर सकता है और ऐसा वहीं कह सकता है जो ज्ञानाराधन में पगा हो। जिसने शब्द के कलेवर को नहीं अर्थ को जीया हो।** ऐसी महान आत्मा का पुण्य स्मरण करते हुए एक ही संकल्प जगता है कि– "हम भी उन जैसे बने, **निर्स्पह-अंकिचन आत्मलीन!** पौष कृष्ण अष्टमी को आपका देवलोक गमन हो गया। लेकिन आप अजर अमर हैं। शत् शत् वंदन, शत् शत् प्रणाम। ✧✧

## !! आगम !!

आ+गम, शब्द ऐसा महत्वपूर्ण शब्द है जो स्वयं आव्हान करता है कि – "आओं रमें जिन वाणी में, आओ गुम हो जाएं उन आप्त वचनों में जो साधना से उपजे हैं। जिनका चिन्तन, मनन, स्वाध्याय कल्याणकारी है, मार्गदर्शक है, पथ प्रदर्शक है। संभवत् यह शब्द संज्ञा उपनिषद के समानार्थी है जो कहता है, आओ, बैठों, स्वयं को जानों, क्या हम इसकी उपयोगिता अनुभव करेंगे ? ✧✧

# श्रद्धा ही सही कसौटी

– **अतुल जैन,** अध्यक्ष जैन कॉन्फ्रेंस, दिल्ली प्रदेश

पाँचों पाण्डव एक दिन विहार के लिए जंगल गए। साथ में शिकारी कुत्तों का झुण्ड भी चल रहा था। एक कुत्ता जंगल में दूर तक अकेला निकल गया। लौटा तो उसके होंठ बाणों से भरे हुए थे। भौंक नहीं पा रहा था। कुत्ते की दुर्दशा देख पाण्डवों का क्रोध के साथ-साथ आश्चर्य भी उमड़ा। किसने कुत्ते को सताया, यह बात तो गौण हो गयी। चिंता इस बात की हुई कि जिसे हमें नहीं सिखाया गया, उस बाण विद्या का ज्ञाता और कौन है? खोज के लिए वे निकले। कुत्ते के मुँह से लपटे खून के निशान को सुराग मानकर वे चले। वे निशांत उन्हें एक भील युवक के झोंपड़े तक ले गए। देखा तो सामने अकेला बैठा धनुर्विधा का अभ्यास कर रहा था।

पाण्डव बंधु एकटक हो उसका कौशल देखते रहे, उसकी प्रवीणता सराही तथा पूछा किस गुरु की छत्रछाया में इतनी प्रगति की? उसने द्रोणाचार्य का नाम लिया। पाण्डव सन्न रह गए। गुरुदेव ने हमसे छिपया और यह रहस्य भी पुत्र को सिखा दिया। अपने गुरु के प्रति उपजे क्रोध के कारण तत्काल लौट पड़े और डेरे पर पहुंचते ही अपना आक्रोश भी प्रकट कर दिया।

द्रोणाचार्य ने जब सारी घटना सुनी तो अपने इस अनजान शिष्य को देखने स्वयं साथ चल पड़े। एक लव्य अपनी बाण साधना में मग्न था। ध्यान बंटते ही उसने आगंतुकों से सत्कार पूर्वक आगमन का कारण पूछा। चर्चा वहां से आरंभ हुई, जिसमें उसे प्रवीणता प्रदान करने वाले गुरू का शिक्षण और अनुग्रह जानना था। एक लव्य ने मिट्टी की द्रोणाचार्य की प्रतिमा की और इंगित कर कहा – मैंने प्रत्यक्षतः तो उन्हें देखा नहीं, कल्पना के आधार पर उनकी प्रतिमा बनाकर उसे प्रत्यक्ष गुरु के समान माना है।

द्रोणाचार्य स्वयं एवं पाण्डव आश्चर्यचकित थे कि श्रद्धा किस प्रकार प्रत्यक्ष से अधिक सामर्थवान सिद्ध हो सकती है जब जीवित द्रोणाचार्य ने श्रद्धा की कठिनतम परीक्षा लेनी चाहीं उन्होंने एक लव्य से गुरु दक्षिणा में अंगूठ मांगा, ताकि पाण्ड़ों को किसी भी तरह प्रतिद्वंद्वी का भय न रहे। शासन-सत्ता के प्रति समर्पित द्रोणाचार्य का उनकी स्वयं की दृष्टि से यह कृत्य अनुचित भी नहीं था। एक लव्य ने सबको स्तब्ध करते हुए तुरंत अंगूठा काटकर गुरुदेव के चरणों में रख दिया। मंडली लौटते हुए यही विश्वास के साथ चल रही थी कि श्रद्धा यदि सच्ची और गहरी हो तो बडा चमत्कार दिखा सकती है। मिटटी से भी शक्तिशाली देवता प्रकट हो सकते हैं।

एक व्यक्ति इस बात के लिये प्रसिद्ध था कि उसके पास ऐसा रसायन है जिसकी एक बूँद पानी में मिला देने पर रोगी अच्छे हो जाते हैं, हजारों व्यक्ति लाभ लेने लगे। इस व्यक्ति के गुरु को भी अनायास कई व्याधियों ने आ घेरा। शिष्य की यश चर्चा ने उन्हें भी आकर्षित किया। उनके आगमन पर शिष्य ने अपने भाग्य को सराहा और सम्मान दिया। उसकी एक ही खुराक ने उनकी व्याधियां मिटा दीं। गुरु बड़े प्रसन्न हुए। चलते समय धीरे से पूछा बेटा! इस रसायन का नुस्खा मुझे भी बता दे ताकि आगे तकलीफ होने पर प्रयोग कर सकूं। शिष्य एकांत में ले गया और बोला हे देव! यह आपका चरण प्रक्षालन से जो जल जाता है, उसी की एक बूंद सबको देता हूँ। वहीं आपको भी दिया।

गुरु ने शिष्य से शपथपूर्वक दिये गए कथन पर विश्वास करके घर पहुंचते ही मुनादी करवा दी कि ये सब सिद्ध रसायन द्वारा किसी भी असाध्य रोगी को स्वस्थ कर सकते हैं। अपने पैर धोकर घड़ों में पानी एकत्रित कर लिया। रसायन पिलाई जाती रही। लाभ किसी को न हुआ। उल्टे पाखण्ड बताकर लोगों की मारपीट, गाली गलौंच ही पल्ले पडछी। चारों और अपयश फैल गया।

गुरु अपने शिष्य के पास पहुंचे व दुर्दशा बतायाी, उसे खरी खोटी सुनाई। नम्र भाव से शिष्य ने कहा– मात्र चरणोदक नहीं, मेरी गहन श्रद्धा का पुट भी इसमें रहता है। जबकि आपकी धोवन में आपके अहंकार का विष उसमें घुल गया। फलतः वह उपहास का ही कारण बना। गुरु न श्रद्धा और अहंकारिता का मध्यवर्ती अंतर समझा और समाधान लेकर आत्म-शोधन की साधना हेतु हिमालय की ओर प्रस्थान कर दिया। ✧✧

आवरण कथा

# जैन दिवाकर जी का आदर्श जीवन एवं श्रमण संस्कृति

**- वीरेन्द्र कुमार धाकड़ जैन,** वरिष्ठ मार्गदर्शक, जैन कॉन्फ्रेंस

जैन दिवाकर पू. गुरुदेव श्री चौथमल जी म. एक महान संत होने के साथ-साथ बहुआयामी प्रतिभा के धनी संत थे। प्रभावक वक्ता, साहित्य सेवी, संगठक होने के साथ ही महान धर्म प्रणेता संत थे। हजारों आत्माओं का उद्धार करने वाले करुणानिधान थे। दलित पतित जन समाज को जैन समाज से जोड़ कर आपने व्यापक धर्म क्रांति की। वहीं अनेक राजा महाराजा को व्यसन मुक्त बना कर आपने समान दृष्टि से राजा-प्रजा को धर्ममय बनाने में योगदान दिया।

यही कारण है कि आपको नीमच के पास धर्म दिवाकर मानते हेतु **'जैन दिवाकर प्रसिद्ध वक्ता'** आदि उपाधियों से अलंकृत किया। **आपने अत्यंत सादगी से दीक्षा लेकर संवत 2007 तक 54 चातुर्मासों में व्यापक धर्म प्रभावना की। रतलाम से कोटा पधार कर आपने अपना अन्तिम चातुर्मास पूर्ण होने के मात्र 15 दिन पूर्व नयापुरा के नंदभवन में कुछ समय को विश्राम किया।** नाभी के नीचे फुंसी होने से आप पीड़ा अनुभव कर रहे थे। पीड़ा बढ़ती गई एवं ज्वर ने भी अपना प्रकोप बढ़ा दिया। निश्रायी संत चंदन मुनिजी ने लघुशंका परठते समय कुछ रक्त बिन्दु देखे व उपाध्याय श्री प्यारचंद जी म.को सूचित किया। उपाध्याय श्री ने तुरंत डॉक्टर बुलाएं, जांच प्रारम्भ हुई। डॉक्टर मोहन लाल जी ने पेट में फोड़ा होने का अंदेशा व्यक्त किया तो कोटा श्रीसंघ चिन्ता में पड़ गया। निश्रायी संत मंडल भी चिन्तित था। सेवा करने की होड लग गई। भारत भर से श्रद्धालु कोटा के लिए चल पड़े।

**पू. गुरुदेव श्री चौथमल जी म. ने स्वविवेक से देवलोक गमन के तीन दिन पूर्व ही दवाई लेना बंद कर दिया। अंततः मार्गशीर्ष शुक्ल नवमी रविवार को प्रातःकाल पू. श्री पं. रत्न मुनि प्रताप मल जी म. , प्रवर्त्तक पं. पू. श्री हीरालाल जी म. के परामर्श पर उपाध्याय श्री प्यारचंद जी म. ने संथारा करवा दिया।**

देखते देखते दिवाकर अस्त हो गया, एक गहरा शून्य गहरा गया। श्रमण जगत ने एक ज्ञान पुंज आत्मा को खो दिया तो जैन समाज ने जैन एकता के आव्हानकर्त्ता महासंत को खो दिया। पार्थिव देह की महाप्रयाण यात्रा नंदभवन से प्रांरभ होकर नयापुरा, लाडपुरा, सदर बाजार, घंटाघर आदि स्थानों से होते हुए श्री केसरी सिंह जी की बगीची के निकट चम्बल नदी के पास पहुँची अंतिम यात्रा में हजारों की संख्या में लोगों ने भाग लिया। इस अपूर्ण रह जाने वाली क्षति से सम्पूर्ण जैन समाज आहत हो गया। ऑल इण्डिया रेडियों से यह समाचार प्रसारित हुआ। इस क्षति से देह गत दिवाकर तो अस्त हुआ किन्तु यश दिवाकर न कभी अस्त होगा, न कभी ओझल होगा। श्रमण संस्कृति का तो मूल स्वर यही है कि

**इहं सि उत्तमो भन्ते! पच्छा होहिसी उत्तमो।**
**लोगुत्त मुत्तमं ठाणं, सिद्धिं गच्छसि नीरओ।।**

यहाँ स्पष्ट भाव है कि - त्यागात्मा तपोमूर्ति संत-जीवन इहलोक में भी उत्तम है, मंगलमय है। परलोक में भी उत्तम है, उत्तमोत्तम है।

संत जीवन का उदय हो या अस्त सर्वथा कल्याण कारक है। जहाँ कि संलेखना का प्रश्न है संलेखना वैसे भी असंग मनोदशा है, **जिस आत्मा में किसी भी प्रकार की कामना, भय, वांछा या स्नेहगत वासना नहीं होती वहीं आत्मा संकल्प-विकल्प मुक्त** होती है। **यही असंग भाव, यही निर्वेग स्थिरता श्रमण संस्कृति का मूल स्वर है।** पूज्य प्रवर महान संतों का जीवन इसी स्वर की साक्ष है, प्रत्यक्ष प्रयोग है। इसी मंगल भाव के साथ शत् शत् नमन। ✧✧

## जैन इतिहास कथा

# आचार्य श्री वृद्धिवादी महाराज का अलौकिक प्रसंग

प्रस्तुति - हुकमचंद जैन 'मेघ', दिल्ली

मुनि मुकुन्द की जन्मस्थली गौड़ देश के कोशलग्राम में थी। वे एक धनाढ्य परिवार में जन्मे थे। प्राचीन समय में आ. स्कन्दिल विद्याधरवंशीय आचार्य के पावन उपदेश को सुनकर प्रौढ़ वय में उन्होंने प्रवज्जित ग्रहण की। प्रवजित होते ही गहन अध्ययन प्रारम्भ किया। वे जब अध्ययन करने बैठते तो उच्च्व स्वर में अध्ययन करते थे। उनके उच्च्व स्वर के कारण अन्य श्रमणों को स्वाध्याय और चिन्तन करने में बाधाएँ उपस्थित होती थी। अतः उन सन्तों ने उन्हें स्नेह से समझाया कि- "उच्च्व स्वर से अभ्यास न करो भाई।" पर मुनि मुकुन्द पर उसका कोई प्रभाव न पड़ा।

एक दिन एक साधु ने उन्हें उपालम्भ देते हुए कहा- **तुम इतने उच्च्व स्वर से अभ्यास कर रहे हो। हमारे मना करने पर भी ध्यान नहीं देते। क्या तुम मूसल में फूल उगाना चाहते हो?**

मुनि की वह व्यंग्यपूर्ण की गई वक्रोक्ति से उसका कोमल हृदय बिंध गया। उन्होंने यह दृढ़ संकल्प किया कि **"मैं इस असम्भव कार्य को भी सम्भव करके बताऊँगा।"** मुनि मुकुन्द गुरु के सन्निकट पहुँचे, नमस्कार कर उन्होंने गुरुदेव से निवेदन किया-**"गुरुदेव! मैंने प्रौढ़ वय में दीक्षा ग्रहण की है जिसके कारण स्मृति इतनी दुर्बल है कि पाठ स्मरण करने पर भी स्मरण नहीं हो पाता। यदि मैं उच्च्व स्वर से अभ्यास करता हूँ तो अन्य सन्त-भगवंतों की बाधाएँ उपस्थित होती हैं। अतः आपश्री ऐसा कोई उपाय बताईये जिससे अन्य संतों को बाधाएँ भी उपस्थित न हों और मेरी ज्ञान सीखने की जो उत्कट इच्छा है वह भी पूर्ण हो जाये।"**

आचार्य स्कंदिल कुछ क्षणों तक सोचते रहे। अन्त में उन्होंने कहा- "वत्स! मैं तेरे पर प्रसन्न हूँ। मैं तुझे एक महान् प्रभावशाली सरस्वती मंत्र देता हूँ। जिसके दिव्य प्रभाव से तुझे सभी विद्याएँ प्राप्त हो जाएँगी। इस मंत्र को सिद्ध कर ले। फिर किसी बात की दिक्कत नहीं है?

मुनि मुकुन्द ने गुरु के चरणों में झुककर कहा- गुरुदेव! सरस्वती मंत्र विधि-विधन सहित मुझे बताइये। मैं उसे अवश्य ही सिद्ध करुँगा!।

गुरु ने कहा - **"वत्स! इक्कीस दिन तक निरन्तर आचाम्ल व्रत करना होगा और साथ ही सविधि मंत्र की साधना भी करनी होगी।"**

गुरु के आदेश-निर्देश के अनुसार मुनि मुकुन्द ने मंत्र की साधना की। माँ सरस्वती ने प्रकट होकर कहा- मैं प्रसन्न हूँ। वर माँगो।

मुनि मुकुन्द ने कहा- देवी माँ, यदि तुम प्रसन्न हो तो जिस भावना से मैंने मंत्र की साधना की है, मेरी वह भावना पूर्ण हो। देवी ने कहा- "सर्वविद्यासिद्धो भव"। अर्थात् सभी विद्याएँ तुम्हें सिद्ध हों।

वरदान प्राप्त कर मुनि मुकुन्द का चेहरा बहुत ही प्रसन्न था। वे उपाश्रय में आये। सभी सन्तों को बुलाकर कहा कि जो सन्त-भगवंत मेरा उपहास करते थे कि वृद्धावस्था में क्या मैं मूसल से फूल उगाऊँगा? मैं उन सन्त-भगवन्तों से नम्र निवेदन करना चाहता हूँ कि संकल्प-बल से असम्भव कार्य भी सम्भव हो सकते हैं, उसके लिये दृढ़ संकल्प शक्ति चाहिए। देखिए, मूसल में भी फूल उग सकते हैं। उन्होंने एक गृहस्थ के यहाँ से मूसल लाकर अचित्त जल से मूसल पर छींटे मारे। सभी ने आश्चर्य से देखा कि कुछ ही क्षणों में मूसल पर फूल महकने लगे।'

मुनि मुकुन्द ने अपने दृढ़ संकल्प से असंभव

कार्य को भी संभव कर दिया। पहले वे वय से प्रौढ़ थे, पर अब वे विद्या की दृष्टि से भी प्रौढ़ हो गये जिससे सभी उन्हें 'वृद्धिवादी' कहने लगे। उनकी अप्रतिम विद्वता, अकाट्य तर्क-शैली के सामने कोई भी व्यक्ति उन्हें प्रतिवाद में परास्त नहीं कर सकता। वे 'वृद्धिवादी' के नाम से विश्रुत हो गये। अन्त में आचार्य स्कंदिल ने उन्हें आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किया। विक्रम की प्रथम शताब्दी के प्रभावक आचार्यों में उनका स्थान है।

महान प्रतिभा-सम्पन्न सिद्धसेन दिवकार को आपने शास्त्रार्थ में पराजित कर उन्हें अपना शिष्य बनाया था। आचार्य सिद्धसेन दिवाकर का नाम महान् तार्किक विद्वानों में आता है। श्री सिद्धसेन दिवाकर जी ने कल्याण मंदिर जैसे महान स्तोत्र की रचना कर जैन धर्म संस्कृति को समृद्ध किया है। ऐसे शिष्य के गुरु बनने का गौरव आचार्यश्री वृद्धिवादी जी को प्राप्त हुआ था।

✧✧

# आओं जुड़ें जैन प्रकाश से ...

**लगभग एक शताब्दी से अधिक समय हो गया जब से "जैन प्रकाश" लगातार प्रकाशित हो रहा है। क्या आप जानते हैं कि यह पत्र जैन पत्रकारिता की शब्द यात्रा में एक ऐसा मुकाम हासिल कर चुका है, जिसमें इतिहास, परम्परा, संस्कृति, सभ्यता और जैनत्व के उल्लेखनीय अध्यायों ने परिचय प्राप्त किया है। जैन कॉन्फ्रेंस की लाइफ लाइन यदि कहीं दिखती है तो वह जैन प्रकाश ही है, जिसे आप प्रति पखवाड़ें में पढ़ते हैं, अनुभव करते हैं। हमारे महापुरुषों के स्वर्णिम विचारों को जैसी अभिव्यक्ति इस पत्र ने दी है वह अपने आप में अद्वितीय है। ऐसा महत्वपूर्ण पत्र समय की चाल से चले, संघ समाज की धड़कन बन धड़के, क्या ये आप भी चाहेंगे ? यदि हाँ तो जुड़िये जैन प्रकाश से !**

## आप क्या क्या कर सकते हैं ?

◆ **महत्वपूर्ण नेटवर्क - व्यापक सम्पर्क :** आप अपने संस्थान-प्रतिष्ठान, उत्पाद का विज्ञापन दे सकते हैं, क्या आप जानते हैं ये पत्र प्रति 15 दिनों में 40 हजार से अधिक छपता है। लगभग 5 लाख लोगों तक पहुंचता है। यानि प्रतिमाह 10 लाख लोगों से मुलाकात। है ना बड़ा नेटवर्क ?

◆ **प्रतिभा का सम्मान, खुला आव्हान :** आप नवोदित या स्थापित लेखक, कवि, वक्ता, समालोचक, विचारक हैं तो उठाईये कलम! लिखिये 'जैन प्रकाश' में अपने 'मन की बात'- यहाँ न तो अभिव्यक्ति का संकट है और न ही कोई असहिष्णुता। जैन प्रकाश तो संवाद का मंच है, जहां आप स्वयं जज हैं, खुद ही पंच है तो जुडिये स्वयं को।

◆ **ये आपकी जिम्मेदारी है :** यदि आप 'जैन प्रकाश' को अपना मानते हैं तो एकाधिकार से बचें ! अपने संघ, समाज की प्रतिभा को प्रोत्साहन दें। 'सबका पत्र, सबके लिए' ये व्यवहार में आए, यह आपकी जिम्मेदारी हैं।

**- प्रधान सम्पादक**

प्रभावक चरित्र

# वास्तु एवं पर्यावरण हरा-भरा पेड़ देता है धन-धन्य

– **मनोज जैन,** वास्तु विशेषज्ञ, दिल्ली

भारतीय संस्कृति में वृक्षों का अपना महत्वपूर्ण स्थान रहा है। आयुर्वेद के जनक महर्षि चरक ने भी वातावरण को शुद्धता के लिए विशेष वृक्षों का महत्व बताया है। हमारी भारतीय संस्कृति में पेड़ों को देवता के रुप में पूजने की परंपरा रही है। पौराणिक ग्रंथों में बताया गया है। कि प्रत्येक व्यक्ति की राशि में एक प्रतिनिधि वृक्ष होता है और उसके सान्निध्य और रोपने से शुभफल की प्राप्ति होती है। प्राचीनकाल में ऋषि-मुनियों ने ऐसे पेड़-पौधें को लगाने की सलाह दी थी, जिनसे वास्तुदोष का निवारण हो साथ ही पर्यावरण संतुलन भी बना रहे।

- ☐ **तुलसीः-** तुलसी को जीवनदायिनी और लक्ष्मी स्वरुपा बताया गया है इसे घर में लगाने से और इसकी पूजा अर्चना करने से महिलाओं के सारे दुःख दूर होते हैं, साथ ही घर में सुख-शान्ति बनी रहती है। इसे घर के अंदर लगाने से किसी भी प्रकार की अशुभ ऊर्जा नष्ट हो जाती है।
- ☐ **अश्वगंधः** इसके बारे में कहा गया है कि यह वास्तु-दोष समाप्त करने की क्षमता रखता है और शुभता को बढ़ाकर जीवन को अधिक सक्रिय बनता है।
- ☐ **आंवलाः** आंवले का वृक्ष घर की चारदीवारी में पूर्व व उत्तर में लगाया जाना चाहिए, जिससे यह शुभ रहता है। साथ ही इसकी नित्य पूजा-अर्चना करने से सभी प्रकार के पापों का शमन होता है।
- ☐ **केलाः** घर की चारदीवारी में केले का वृक्ष लगाना शुभ होता है इसे भवन के इशान कोण में लगाना चाहिए, क्योंकि यह बृहस्पति ग्रह का प्रतिनिधि वृक्ष हैं केले के समीप यदि तुलसी का पेड़ भी लगा लें तो अधिक शुभकारी रहेगा।
- ☐ **शतावरः** शतावर को एक बेल बताया गया है। इसे घर में लगाना शुभ फलदायी होता है। बशर्ते इसे घर में कुछ इस तरह लगाएं कि यह ऊपर की ओर बढ़े।
- ☐ **अनारः** इससे वंश वृद्धि होती है। आग्नेय में अनार का पेड़ अति शुभ परिणाम देने वाला होता है।
- ☐ **बेलः** भगवान शिव को बेल का वृक्ष अत्यंत प्रिय है, इसको लगाने से धन संपदा की देवी लक्ष्मी प्रसन्न होती है।
- ☐ **बरगदः** यह वृक्ष पूर्व दिशा में लगाना शुभ बताया गया है। इसे लगाने से सभी प्रकार के वास्तु दोष नष्ट हो जाते हैं, साथ ही इसके लगाने से धन-धन्य और मान-सम्मान में भी वृद्धि होती हैं इसे पश्चिम दिशा में मत लगाएं।
- ☐ **अशोकः** अशोक के वृक्ष को हिन्दू धर्मावलंबी शुभ वृक्ष मानते हैं। इसे घर में लगाने से अशुभ दोष समाप्त हो जाते हैं।
- ☐ **नारियलः** जिस घर में नारियल का वृक्ष होता हैं वहां रहने वाले के मान-समान में वृद्धि होती है।
- ☐ **नीमः** घर के बाहर के वायव्य कोण में नीम का वृक्ष रहना अत्यंत शुभ फलदायी माना गया हैं शास्त्रों के अनुसार इस वृक्ष को लगाने से मोक्ष की प्राप्ति होती है। ✧✧

---

**शक से भी अक्सर खत्म हो जाते हैं, कुछ रिश्ते**
**मधुर रिश्ते ही हमें खास बनाते हैं,**
**रिश्ते निभाईये जीते जाईये**

## समाचार - प्रकाश

# कृतज्ञ इंदौर वासियों ने दी आचार्यश्री जी युवाचार्यश्री जी को भावभीनी विदाई

**इंदौर (मध्य प्रदेश) :** 3 नवम्बर 2017 चातुर्मास का अंतिम दिवस अभय प्रशाल शिवाचार्य समवसरण में इंदौर निवासियों ने आचार्यश्री जी युवाचार्यश्री जी प्रवर्तकश्री जी को श्रद्धा सहित विदाई दी। इस मौके पर हर कोई उदास था कि चार महीने निरंतर अभय प्रशाल में लगने वाले मेले समाप्त होने वाले हैं, यही सोचकर लोगों की आँखो से अश्रुधारा सावन की तरह बरस रही थी। युवाचार्यश्री जी के मंगलाचरण के साथ कृतज्ञता एवं विदाई के कार्यक्रम की शुरुआत हुई। श्रावक एवं श्राविकाओं ने भजनों के माध्यम सें विदाई के गीत गाए, किसी ने शब्दों से विदाई दी। महासाध्वीवृंद ने भी इस अवसर पर उद्‌बोधन प्रदान किया। संतवृंद में पू. श्री शौर्य मुनि जी म., पू. श्री शुद्धेष मुनि जी म., पू. श्री शमित मुनि जी म., पू. श्री हितेन्द्र ऋषि जी म., पू. श्री शुभम मुनि जी म. ने भी सभा को सम्बोधित किया। श्रीसंघ ने चातुर्मास में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए चातुर्मास समिति के सदस्यों का स्वागत शील्ड, शॉल और माला से किया गया।

श्रमणसंघीय प्रमुखमंत्री पू. श्री शिरीष मुनि जी म. ने संघ के सभी कार्यकर्ताओं को सफल चातुर्मास के लिए बधाई दी। पूज्य प्रवर्तक श्री प्रकाश मुनि जी म. 'निर्भय' ने कहा कि "ऐसा चातुर्मास फिर कभी शायद ही होगा, यह एक ऐतिहासिक चातुर्मास था।" पूज्य युवाचार्यश्री जी ने इंदौर की भक्ति भावना, श्रृद्धा भावना की अनुमोदना करते हुए कहा कि इस चातुर्मास में मैंने प्रवचनों और ध्यान के माध्यम से लोगों के जीवन को बदलते हुए देखा हैं। इस चातुर्मास में आचार्यश्री जी एवं प्रवर्तकश्री जी का जो वात्सल्य मिला है वह मेरे लिए अनूठी निधि हैं। छोटे संतो की सेवा, सहयोग प्रशंसनीय हैं। इस अवसर पर आचार्य भगवन् ने श्रावक-श्राविकाओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि लालाजी श्री नेमनाथजी जैन की अटल भावना के कारण यह चातुर्मास हुआ। हमारी भावना नही थी, क्योंकि साधु-सम्मेलन का बड़ा लाभ इंदौर नगर को मिला था, लेकिन लालाजी जब भी आते चातुर्मास-चातुर्मास कहते। उनकी श्रृद्धा भावना संघ की भावना को देखते हुए चातुर्मास हुआ। युवाचार्यश्री बैंगलोर से 2000 कि.मी. की यात्रा करके आये। प्रवर्तकश्री जी का साथ में चातुर्मास सोने पे सुहागा साबित हुआ। समस्त इंदौर नगर निवासियों की सेवा भावना प्रशंसनीय रही हैं। डॉ. राजीव चौधरी, डॉ. अर्पित चोपड़ा, डॉ. रुचि चोपड़ा की सेवा अनुमोदनीय रही। आप सभी की श्रृद्धा भावना आस्था प्रेम और स्नेह हमारे स्मृति पटल पर हमेशा बना रहेगा।

इस अवसर पर श्री प्रकाशजी भटेवरा जैन ने विदाई गीत प्रस्तुत किया। आदर्श ज्योति बहुमण्डल एवं पंजाब जैन महिला मण्डल की सौ. वंदना जैन एवं सौ. संगीता चौधरी ने समधुर विदाई गीत से श्रोताओं को भाव-विभोर कर दिया। समारोह में प्रबुद्ध वक्ता श्रीमती अनिताजी चौधरी एवं जैन कॉन्फ्रेंस महिला शाखा की पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षा सौ. रेणुजी डिपिनजी जैन ने अपने उद्‌बोधन से चातुर्मास की उपलब्धियों का दिग्दर्शन कराया। चातुर्मास में श्रेष्ठ उपलब्धि के रुप में आत्म-ध्यान शिविरों के अंतर्गत स्थानीय एवं देश के विभिन्न नगरों से पधारे साधकों ने शरीर और आत्मा के भेद के माध्यम से आत्मा के अस्तित्व का बोध प्राप्त किया तथा ध्यान की गहराई में उतरकर अपने भीतर में ज्ञान, शांति, आनंद की प्रत्यक्ष अनुभूति प्राप्त की। इन आत्म-ध्यान शिविरों से एक लाख से अधिक लोगों ने लाभ प्राप्त किया।

इस प्रकार देश हृदय स्थल मध्य प्रदेश में औद्योगिक एवं सांस्कृतिक नगरी इंदौर का यह मंगलमय वर्षावास श्रमण संस्कृति के आध्यात्मिक महापर्व के रुप में प्रख्यात हुआ है। इसे ऐतिहासिक और गौरवशाली चातुर्मास की सफलता में श्रद्धेय आत्मज्ञानी ध्यान गुरु परम पूज्य आचार्य भगवंत डॉ. शिवमुनिजी म. एवं सभी श्रद्धेय संत व साध्वीवृंद की मंगल प्रेरणा, उनके अंतरमन के शुभ के आशीर्वाद का सुफल रहा है। आचार्य भगवंत का सभी का मंगल हो, सभी का शुभ हो, सभी का कल्याण हो का मंगल उद्घोष सभी श्रद्धालुओं के जीवन में सुख, शांति और आनंद का निर्झर प्रवाहित करता रहेगा।

4 नवम्बर को शिवाचार्य समवसरण में मंगलपाठ सुनाकर आचार्यश्री जी, युवाचार्यश्री जी, प्रवर्तकश्री जी ने विहार किया। जिस श्रृद्धा भावना के साथ श्रावक-श्राविका आचार्यश्री जी की आगवानी की थी उसी श्रृद्धा के सैलाब के साथ विदाई भी देने श्रावक लोग विदाई यात्रा में शामिल हुए। विहार करके आचार्यश्री जी श्रीसंघ के महामंत्री श्री रमेशजी भण्डारी जैन के निवास स्थान श्री नगर कॉलोनी में हुआ। जहाँ प्रवचन भी हुआ, प्रवचन में विशेष नये और विशाल स्थानक भवन के लिए 5 करोड़ के लगभग दान राशि की घोषणा हुई। प्रवचन के पश्चात विहार करके श्रमणवृंद सौ. माधवी संदीपजी पारख जैन के निवास स्थान पर आहार, विहार, विश्राम हुआ। सायं को अनुराग नगर में विराजमान महासाध्वी पू. श्री ललितप्रभा जी म. को दर्शन देने हेतु अनुराग नगर पधारना हुआ, रात्रि विश्राम अनुराग नगर स्थानक में रहा।

5 नवम्बर को दिव्यांग अंध छात्र-छात्राओं को धर्म संदेश हुआ। जहां से आचार्यश्री जी का प्रेस्टिज परिवार ने स्वागत अभिनंदन किया गया। 2 दिन के विश्राम के पश्चात् पत्थर गोदाम गुजराती स्थानक में प्रवचन हुआ। 8 नवम्बर का प्रवचन पार्श्वनाथ नमकीन के यहाँ लोधीपुरा में हुआ। 9 नवम्बर को बड़ी दीक्षा जंगमपुरा स्थानक में संपन्न हुई। 10 नवम्बर को प्रवचन आई.पी.एस. स्कूल प्रांगण में हुआ। आचार्यश्री जी रतलाम, नीमच, मंदसौर, चितौड़गढ़ होते हुए 22 दिसम्बर को फतेहनगर में पहुंचेगें। 28 दिसम्बर को उदयपुर पहुंचने के भाव हैं।

**ध्यान प्रभावना:-** 11 अक्तूबर जैन कॉन्फ्रेंस के विशेष आग्रह पर चार दिवसीय ध्यान-साधना गंभीर शिविर का आयोजन हुआ। जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलालजी चोपड़ा जैन, राष्ट्रीय प्रमुख मार्गदर्शक श्री अविनाश जी चोरड़िया जैन, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री बालचंदजी खरवड़ जैन, राष्ट्रीय महामंत्री श्री अशोककुमार जी एन. पगारिया जैन, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य श्री सुनीलजी चोपड़ा जैन, श्री पारसजी मोदी जैन, राष्ट्रीय युवाध्यक्ष श्री शशिकुमारजी पिन्टू कर्नावट जैन के अलावा श्री गणेशजी सांखला जैन आदि ने भाग लेकर आचार्य भगवन् की ध्यान-साधना को जाना तथा शिविर के सुन्दर अुनभव को प्राप्त किया।

**जप-तप और साधना के साथ दीपावली का मंगल पाठ:-** दीपावली पर तीन दिवसीय तेला तप आराधना हुई, जिसमें 53 के लगभग भाई-बहनों ने तेला तप किया। आचार्यश्री जी एवं युवाचार्यश्री जी ने भी तीन दिवसीय मौन ध्यान तप आराधना के बाद दीपावाली का महामंगल पाठ हुआ, जिसमें भारी संख्या में लोगों ने आकर मंगल पाठ का श्रवण किया।

25 नवम्बर हितमितभाषी पू. श्री हितेन्द्रऋषि जी म. के जन्म दिवस पर पू. श्री शुभम मुनि जी म. ने भजन गाकर शुभ जन्मदिवस की बधाई एवं स्वस्थ रहते हुए युवाचार्यश्री जी की सेवा करते रहे ऐसी मंगल भावना की। युवाचार्यश्री जी ने भी अपने प्रिय शिष्य को जन्मदिवस की बधाई दी। आचार्य भगवन् ने जन्म दिवस

पर अपना आशीर्वाद देते हुए कहा कि हितेन्द्रऋषि एक दस संतो के बराबर है और हमेशा मुस्कुराते हुए युवाचार्यश्री की सेवा में संलग्न रहते है। इस शुभ अवसर पर आचार्य भगवन् ने चादर प्रदान की जिसे साथी मुनिवृंद ने हितेन्द्रऋषि जी को ओढ़ाई।

11 दिवसीय गंभीर ध्यान-साधना शिविर 22 अक्तूबर को आंरम्भ हुआ। भारत भर से 125 लोगों ने भगवान महावीर की कठिन भेद विज्ञान की साधना के रहस्य आचार्य भगवन के आशीर्वाद से एवं प्रमुख मंत्री पू. श्री शिरीष मुनि म. के निर्देशन और वीतराग साधिका पू. श्री निशाजी के अथक पुरुर्षाथ से जाना। ध्यान साधकों के अनुभव लाजवाब थे और सभी ने जीवन में हर परिस्थिति में आनंद में रहना सीखा। श्री सरस्वती विद्या केन्द्र, नाशिक में आचार्य श्री के आशीर्वाद से प्रतिमाह आत्म-ध्यान साधना शिविर संचालन एवं समस्त धार्मिक गतिविधियों के संचालन हेतु निम्न कमेटी बनाई गई : -

**1.** श्री रविन्द्रनाथ जैन, दिल्ली, **2.** श्री सुशील जैन, करनाल, **3.** श्री जसवंत भाई कोठारी, मुंबई, 4. श्री तुलसी भाई चपलोत, सूरत, **5.** श्री तिलक जैन, सूरत, **6.** श्री अशोक जैन, घाटकोपर, मुंबई, **7.** श्री राजु भाई धाड़ीवाल, नाशिक, **8.** श्री रमेश चण्डालिया, नाशिक, **9.** डॉ. सुषमा दुगड़, नाशिक, **10.** श्री गौकुलचन्द पारख, पुणे, **11.** श्री प्रवीण जैन, रहाता एवं सक्रिय कार्यक्रताओ को सम्मिलित किया जायेगा। महाराष्ट्र के सभी ध्यान साधक साधना के लिए सम्पंर्क करे साधु-साध्वीवृंद अपनी व्यक्तिगत साधना के लिए अवश्य पधारे। अधिक जानकारी के लिये श्री सुशील जैन : 9416034463 से संपर्क करें। **प्रेषक : कपिल जैन**

## उपाध्याय प्रवर पूज्य श्री प्रवीणऋषि जी म. सा. का चातुर्मास समापन

**सिकन्दराबाद (आन्ध्र प्रदेश) :** आचार्य भगवंत पू. श्री आनंदऋषि जी म. सा. के सुशिष्य उपाध्याय प्रवर, प्रज्ञा प्रदीप पू. श्री प्रवीणऋषि जी म., हेमकुल दिवाकर पू. श्री ऋषभ मुनि जी म., उप-प्रवर्तक पू. श्री आशीष मुनि जी म., मधुर गायक पू. श्री तिर्थेश ऋषि जी म. तथा तप गंगा महासती पू. श्री संतोषश्री जी म., साध्वी पू. श्री सुनिधी जी म., विद्याभिलाषी पू. श्री सुप्रतिभा जी म. के नेश्राय में श्री सिकंदराबाद संघ के अंतर्गत भलगट परिवार द्वारा निर्माणाधीन कॉम्प्लेक्स टॉवर, 19, रानीगंज, सिकंदराबाद में ऐतिहासिक एवं भव्य चातुर्मास संपन्न हुआ।

महाराज सा. का नगर प्रवेश 26 फरवरी 2017 चैतन्यपुरी जैन मंदिर में बहुत ही भव्य रुप से हुआ। त्रयनगर से अनेक भाई-बहन गुरु दर्शनार्थ पधारे एवं प्रवचन का लाभ लिया। चैतन्यपुरी संघ की ओर से गौतम प्रसादी का आयोजन रखा गया। होली चातुर्मास पद्‌माशाली भवन मारेडपल्ली में बहुत ही सुचारू रूप से संपन्न हुआ। मारेडपल्ली जैन संघ ने इस का लाभ लिया। 28 मार्च को कांचीगुडा स्थानक में आचार्य भगवंत पू. श्री आनंदऋषिजी म. की 25वीं पुण्यतिथि संपन्न हुई। श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ ग्रेटर हैद्राबाद के तत्वावधान में तेला तपोत्सव का आयोजन किया गया। इसमें 650 से अधिक श्रध्दालुओं ने तेले किये। आनंद गाथा प्रतिदिन शाम को कांचीगुडा जैन मंदिर में संपन्न हुई। महाराज सा. ने आचार्य पू. श्री आनंदऋषि जी म. के जीवन चरित्र पर प्रकाश डाला।

श्रमणोपासक संघ के अंतर्गत हनुमान व्यायमशाला रामकोट में महावीर जन्म कल्याणक निमित्त अष्ट दिवसीय महावीर गाथा का आयोजन हुआ। इसमें प्रतिदिन हजारों की संख्या में श्रावक-श्राविकाएं पधारी। पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में महावीर जन्म कल्याणक कार्यक्रम जैन सेवा संघ के अंतर्गत नुमाईश मैदान में संपन्न हुआ।

अक्षय तृतीया का पारणा कोरा संघ के तत्वावधान में क्लासिक गार्डन में संपन्न हुआ। महावीर जीवन कथा का समारोह कोरा संघ के अंतर्गत भेरूलाल रांका एस. एस. जैन स्कूल में सम्पन्न हुआ।

8 जुलाई 2017 को चातुर्मास प्रारंभ हुआ। चातुर्मास दौरान गुरु पूर्णिमा, कवि कुलभूषण पूज्यपाद श्री तिलोकऋषिजी म. की पुण्यतिथि मनाई गई। राष्ट्रसंत आचार्य आनंदऋषिजी म. का 118वाँ जन्मोत्सव सप्ताह दिनांक 16 से 24 जुलाई को संपन्न हुआ। इसमें जैन सेवा संघ द्वारा आयोजित 36 लाख नवकार महामंत्र जाप में हजारों श्रृदालु उपस्थित रहे। 17 जुलाई से 1008 अठाई तप महोत्सव आरंभ हुआ। अष्ट दिवसीय समारोह में आनंद सामायिक दिवस, आनंद एकासना दिवस, स्वाध्याय दिन, नमोत्थुणं जाप साधन, ओम आनंद गुरुवे नमः का जाप, आंनद तेला, आयंबिल दिवस आदि समारोह संपन्न हुई।

19 से 26 अगस्त तक पर्युषण महापर्व में खूब धर्म आराधना हुई। चातुर्मास के अन्य समारोह में नवपद एकासन ओली, 24 सितंबर से **ओम असिआउसा नमः** जाप आरंभ हुआ। 27 सितंबर से 5 अक्टूबर को आयंबिल ओली, 29 सितंबर को उपाध्याय प्रवर पू. श्री पुष्कर मुनि जी म. की 108वीं जन्म जयंती तथा उत्तराध्ययन श्रुतदेव भक्ति यात्रा भव्य जुलूस के रुप में सिकंदराबाद स्थानक से चातुर्मास स्थल पहुंची। 30 सितंबर को दशहरा एवं 21 दिवसीय श्रीमद् उत्तराध्ययन श्रुतदेव आराधना आरंभ हुई। 2 अक्तुबर को गांधी जयंती एवं अहिंसा दिन मनाया गया। 19 अक्तुबर भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक, 20 अक्तुबर को श्री सर्वार्थ सिद्ध मुहुर्त में प्रातः 5 बजे से गौतम स्वामी केवलज्ञान महोत्सव, श्रुत आराधना समापन एवं श्री सुधर्मा स्वामी पाटोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर गौतम लब्धी अक्षय भंडार से सुका मेवा की प्रभावना दी गई। उपाध्यायश्री जी के नेश्राय में अर्हम विज्जा फाउंडेशन द्वारा अखिल भारतीय आनंदतीर्थ धर्मसंघ ने चातुर्मास दौरान विविध शिविर का आयोजन किया, इसमें 72 घंटे के पुरस्कार, पराक्रम तथा अष्ट मंगल ध्यान-साधना, गर्भ-संस्कार शिविर, कपल शिविर, अर्हम पैरेंटिंग शिविर, डिस्कव्हर युअर सेल्फ शिविर संपन्न हुए। त्रयनगर के साथ बाहर गांव से पधारे हजारों शिविरार्थी एवं प्रशिक्षक शामिल हुये। **प्रेषक : डायचंद दक**

# आचार्य श्री मानजी स्वामी के स्मृति दिवस पर चित्तौड़गढ़ में श्रद्धा एवं भक्ति का सैलाब उमडा

**चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) :** श्रमण संघीय महामंत्री पू. श्री सौभाग्य मुनि जी म. 'कुमुद', प्रवर्तक पू. श्री मदन मुनि जी म. आदि ठाणा एवं उपप्रवर्तिनी पू. डा. रविरश्मि जी म. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में मेवाड़ आचार्य पूज्य श्री मानजी स्वामी की स्मृति एवं श्रद्धार्पण को चित्तौड़गढ़ श्रीसंघ द्वारा सामूहिक तेलातप (22-23-24 अक्टूबर) एवं पारणोत्सव (25 अक्टूबर) को असीम श्रध्दा, भक्ति एवं आस्था से हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया। चित्तौड़गढ़ सहित मेवाड़ अंचल, गुजरात मुंबई आदि अनेक स्थानों के लगभग 2200 से अधिक गुरु भक्तों ने तेलातप की अराधना की। जिनमें से लगभग 1180 आराधक चित्तौड़गढ़ पहुंचकर सामूहिक पारणोत्सव एवं श्रद्धार्पण कार्यक्रम में भाग लिया। ज्ञान पंचमी 25 अक्टूबर को खातरमहल में आयोजित गुणानुवाद सभा को संबोधित करते हुए पुज्य गुरुदेव श्री सौभाग्य मुनि जी म. 'कुमुद' ने कहा कि मेवाड़ आचार्य श्री मानजी स्वामी एक ऐसे चमत्कारिक महापुरुष हुए जिनके नाम की मेवाड़ में **"आण"** लगती है। वे एक ऐसे युगपुरुष थे जिनका जन्म, दीक्षा व स्वर्गवास एक ही दिन कार्तिक शुक्ला पंचमी को हुआ। हम उनके जीवन से प्रेरणा लेकर तप,

त्याग, और साधना से इस छोटे से जीवन को सार्थक करें। प्रवर्तक पू. श्री मदन मुनि जी म. ने कहा कि महापुरुषों की जीवनगाथा में श्रद्धा एवं आस्था रखते हुए साधना कर के अपनी आत्मा का कल्याण करें। सभा को पू. श्री कोमल मुनि जी म., पू. श्री संभव मुनि जी म. व साध्वी पू. डा. रविरश्मि जी म. ने श्री मानजी स्वामी जी के चमत्कारिक जीवनवृत की घटनाओं पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर पू. गुरुदेव श्री सौभाग्य मुनि जी. म. द्वारा सम्पादित श्री स्थानांग सूत्र का श्री सम्पत लाल जी खाब्या जैन अहमदाबाद, जैन कान्फ्रेन्स के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री औंकार सिंह जी सिरोया जैन, प्रान्तीय अध्यक्ष श्री नेमीचन्दजी धाकड़ जैल, श्री कंवरलालजी सुरिया जैन, श्री बलवंत सिह जी हिंगड जैन, श्री हिम्मत जी सिंह बड़ाला जैन द्वारा विमोचन किया गया। इसी तरह श्री सौभाग्योदय पंचाग 2018 व आगमवाणी समाचार पत्र का विमोचन पुष्पा राजेन्द्र गोखरुजी, श्री नवरतन जी बम्ब-भीलवाडा, श्री भीमराज जी मेहता-उदयपुर, संघ संरक्षक श्री इन्द्रमलजी लोढ़ा जैन, अध्यक्ष श्री मनसुखजी पटवारी, श्री अम्बेश गुरु सेवा समिति अध्यक्ष श्री हस्तीमल जी चोरड़िया जैन द्वारा किया गया। इस अवसर पर लीलाजी सोनी के मासखमण तप एवं अंजना बोकड़िया जी के 16 उपवास के लिए अभिनन्दन किया गया। संघ अध्यक्ष श्री मनसुखजी पटवारी ने सभी का स्वागत किया। इस अवसर पर विनिताजी लोढ़ा जैन को बाल संस्कार पाठशाला संचालित करने के लिए संघ की ओर से अभिनन्दन पत्र संघ संरक्षक श्री नवरतन जी पटवारी, उपाध्यक्ष श्री सी. एम. राकाजी, कोषाध्यक्ष श्री गणपतजी डागलिया द्वारा प्रदान किया गया। सभा में श्री ओमजी समदर्शी ने काव्य पाठ किया। भीलवाड़ा, खमनोर, कपासन आदि कई स्थानों से आगामी चातुर्मास के लिए विनतियाँ प्रस्तुत की। गुरु सौभाग्य दीक्षा स्थली कड़िया संस्थान के महामंत्री श्री ओमप्रकाश जी मांडोत ने अक्षय तृतीया पारणोत्सव की विनती रखी। संचालन हस्तीमलजी चंडालिया ने किया। पारणोत्सव एवं श्रद्धार्पण कार्यक्रम बहुत ही सुंदर व्यवस्थित ढंग से आयोजित हुआ।

**प्रेषक : डा. रतन लाल मारू**

## एनसीसी का शाकाहारी शिविर लगाया गया

**चेन्नई (तमिलनाडु) :** चेन्नई में रिसर्च फाउंडेशन फॉर जैनोलोजी के द्वारा संचालित जैन विद्याश्रम सीनियर सेकण्डरी स्कूल में 5 से 14 अक्टूबर 2017 तक दस दिवसीय राष्ट्रीय केडेट कोर (एन.सी.सी.) के वार्षिक प्रशिक्षण शिविर 2017 में पूर्णतः शाकाहारी व्यवस्था रखी गई। इसमें तमिलनाडु के स्कूल-कॉलेजों के 500 केडेट्स ने भाग लिया। महासचिव डॉ. एस. कृष्णचंद चोरड़ियाजी ने बताया कि जैन विद्याश्रम परिसर पूर्ण निरामिष क्षेत्र (वेज ज़ोन) घोषित है। अतः शाकाहार की शर्त पर ही स्कूल में शिविर की अनुमति दी गई। सभी केडेट्स, अधिकारियों और प्रशिक्षकों ने शिविर अवधि में सहर्ष पूर्ण शाकाहार ही ग्रहण किया। कमांडिंग ऑफिसर लेफ्टीनैंट कर्नल एस. पी. सिंह जी ने कहा कि एनसीसी का यह पहला शिविर है, जिसमें सिर्फ शाकाहार ही परोसा जा रहा है। यह हमारी संस्कृति का हिस्सा है। इसका हमें तथा सारे केडेट्स को गर्व है।

**प्रेषक : डॉ. दिलीप धींग**

## जैन महिलाओं ने श्री गुरु नानक देव जी जयंत पर किया राशन वितरण

**लुधियाना (पंजाब) :** महिला शाखा भगवान महावीर सेवा सोसायटी रजि. द्वारा राशन वितरण समारोह सिविल लाईन्स के जैन स्थानक में आयोजित किया गया। समारोह का शुभारंभ महामंत्र नवकार के सामूहिक

उच्चारण से शुरु किया गया। सिक्खों के प्रथम गुरु नाककदेव जी की जन्म जयंती के उपलक्ष में जरुरतमंद 33 परिवारों को राशन वितरण किया गया।

महिला शाखा भगवान महावीर सेवा सोसायटी की चेयरपर्सन सौ. आदर्शजी जैन, महामंत्री सौ. रीचाजी जैन ने बताया कि श्री गुरु नानक देव जी की जन्म जयंती एवं जैन समाज में चल रहे चातुर्मास के अंतिम दिन के उपलक्ष में जरुरतमंद परिवारों के लिए राशन वितरण का आयोजन किया गया। इसी के साथ-साथ सकल जैन समाज के लिए खुशी का दिन है कि आज श्री गुरु नानक देव जी की जयंती पर हम मानव सेवा का आयोजन कर रहे है।

सिक्ख समाज से हमारा सैकड़ों वर्षों से अटूट रिश्ता है, इसके कई कारणों में से एक जैन समाज के प्रसिद्ध सुश्रावक दानवीर भामाशाह, दिवान टोडरमल जैन, जिन्होंने छोटे साहिबजादों की कुरबानी के लिए न गिने जाने वाली रकम की जगह ले के दी थी। श्री गुरु नानक देव जी ने सदा जरुरतमंद की सेवा के लिए हमेशा मानव जाति को प्रेरित किया। आज उन्हीं के बताये हुए मार्ग पर चलते हुए हमारी संस्था न जाने कितने मानव सेवा के कार्य कर रही है। कार्यकारिणी सदस्य सौ. विनोदजी सुराना ने कहा असहाय व जरुरतमंद भाई-बहनों की मदद करना हमारी सामाजिक जिम्मेदारी भी है जो परिवार आज असहाय महसूस कर रहे है। उनकी सहायता कर हम पुण्य का उपार्जन करें।

इस अवसर पर महिला शाखा भगवान महावीर सेवा सोसायटी की चेयरपर्सन सौ. आदर्शजी जैन, सह-प्रधान सौ. सोनियाजी जैन, महामंत्री सौ. रीचाजी जैन, कार्यकारिणी सदस्य सौ. रमाजी जैन, सौ. विनोद देवीजी सुराणा जैन, सौ. मंजूजी सिंघी, प्रचार सचिव डॉ. बबिताजी जैन, सौ. पूनमजी जैन, सौ. भानूजी जेन, सौ. निराजी जैन, सौ. सुषमाजी जैन, भगवान महावीर सेवा संस्थान प्रधान श्री राकेशजी जैन, उप-प्रधान श्री राजेशजी जैन, श्री सुनीलजी गुप्ता, रिधीजी जैन, सलोचनाजी जैन, फूलचंदजी जैन शाही लिवास इत्यादि गणमान्यजन उपस्थित थे। **प्रेषक : रीचा जैन, महामंत्री**

## नाभा में चातुर्मास की रौनक

**नाभा, पटियाला (पंजाब) :** नाभा में जैन समाज को वर्ष 2017 में जैन भारती कोकलकंठी उपप्रवर्तनी पू. श्री मीना जी म. की सुशिषया रत्न प्रवचन प्रभाविका महासाध्वी पू. श्री महक जी म., महासाध्वी पू. श्री समन्वय जी म. आदि ठाणा का प्रथम स्वतंत्र चातुर्मास मिला। चातुर्मास में श्री महक जी म. के प्रवचन बड़े ही गम्भीर, जिनवाणी पर आधारित, जीवन शैली को बदलने वाले होते थे बड़ा ही ओजस्वी प्रवचन दिल को छूने वाला होता था, हर कोई आनंद से भावभोर हो जाता है। कोई राजनीति, इधर-उधर की बात नहीं करते समय बांध देते थे। महासाध्वी पू. श्री महक जी म. की प्रेरणा से जैन सभा प्रधान जी.सी. अगुराई में भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण दिवस दीपावली से पहले पर्यावरण को साफ सुथरा रखने, जीवों की रक्षा व रुपयों की फिजूलखर्ची रोकने के लिये पटाखे-आतिशबाजी के नुकशान बताकर उन्हें न चलाने की शहर के सभी 61 सरकारी, प्राईवेट कॉलेज, स्कूलों में बच्चों को प्रेरणा दी गई। महापर्व पर्युषणों में महाराज श्री जी द्वारा अंतगड़दस सूत्र सी वांचना भेजनों द्वारा बड़े ही रोचक ढंग से पहली बार सुनी। चातुर्मास के आरंभ से ही 12 घंटे का रोजना नवकार महामंत्र का अखण्ड पाठ चला। चातुर्मास काल की पूरी अवधि में उत्तरी भारत से श्रद्धाजन भाईयों व बहनों का महाराज श्रीजी के दर्शन व प्रवचन हेतु आगमन हुआ। श्रीसंघ को दर्शनार्थियों की सेवा का लाभ मिला। सारे चातुर्मास में अच्छी रोनक रही। यह एक ऐतिहासिक व आदर्श चातुर्मास रहा जो नाभा के इतिहास में अविस्मरणीय रहेगा। **प्रेषक : नरेन्द्र कुमार जैन (गोयल)**

# पूज्य प्रवर श्री आशीष मुनि जी म. आदि ठाना का नेपाल की ओर प्रस्थान

**मेरठ (उत्तर प्रदेश):** श्रमण संघीय भीष्मपितामह तपस्वी रत्न पू. श्री सुमति प्रकाश जी म. के सुशिष्य प्रवर गुरुदेव पू. श्री आशीष मुनि जी म. आदि ठाणा-5 का जैन नगर मेरठ में धर्मजागृतिमय ऐतिहासिक चातुर्मास संपन्न होने के पश्चात पू. गुरुदेव श्री जी म. व श्री उत्तम मुनि जी म. एवं पू. श्री विराग मुनि जी म. आदि ठाणा-3 एवं तपचन्द्रिका महासाध्वी पू. श्री मोक्षिता जी म. आदि ठाणा-4, उपप्रवर्तनी श्रमणी शिरोमनी पू. श्री कौशल्या जी म. की सुशिष्याएं महासाध्वी पू. श्री नंदनी जी म., पू. श्री प्रियदर्शना जी म. आदि ठाणा-5 का पड़ौसी मित्र राष्ट्र नेपाल की ओर प्रस्थान करेंगे। पंडित रत्न शास्त्री, श्रमण संघीय मंत्री पू. श्री आशीष जी म. का नेपाल की ओर प्रस्थान करेंगे। पण्डित रत्न शास्त्री, श्रमण संघीय मंत्री श्री आशीष मुनि जी म. अपनी दीक्षा के बाद प्रथम बार कर्मभूमि से जन्म भूमि की ओर विहार करेंगे।

**गुरुदेवों का नेपाल में संभावित कार्यक्रमः-** पण्डित रत्न शास्त्री, श्रमण संघीय मंत्री पू. श्री का नेपाल में संभावित प्रवेश जनवरी 2018 में रहेगा।

**होली चातुर्मासः-** काठमांडू में होने की संभावना है कुछ समय वहां विचरने के पश्चात पोखरा पधारने के भाव है। पोखरा में 28 मार्च को आचार्य भगवान् पू. श्री आनंदऋषि जी म. पुण्योत्सव एवं गुरु आशीष जन्मोत्सव मनाया जायेगा। इस अवसर पर नेपाल में प्रथम श्वेताम्बर जैन स्थानक का उद्घाटन भी होगा। 8 अप्रैल को नेपाल केसरी श्री मणिभद्र मुनि जी म. का जन्मोत्सव मानव मिलन द्वारा विविध सेवा कार्यक्रमों के माध्यम से मनाया जायेगा। इसके पश्चात् पण्डित रत्न शास्त्री श्रमण संघी मंत्री पू. श्री आशीष मुनि जी म. का भारत में प्रवेश होगा और आपश्री का वर्ष 2018 का चातुर्मास कानपुर में होने की संभावना है। **प्रेषक : पुष्कर जैन**

## उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु छात्र-छात्राएं संपर्क करें

## भगवान महावीर अंतर्राष्ट्रीय शोध परियोजना से जुड़ने का सुनहरा अवसर

भगवान महावीर अंतर्राष्ट्रीय शोध केन्द्र, जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म दर्शन विभाग, **जैन विश्व भारती संस्थान** (मान्य विश्वविद्यालय), लाडनूं के अंतर्गत विभिन्न शोध परियोजना का आयोजन किया जा रहा है। यह शोध केन्द्र जैन विद्या के वैज्ञानिक अनुसंधान और जैन सिद्धांतों के व्यापक सामाजिक अनुप्रयोग के क्षेत्र में कार्य करने वाला विश्व का अद्वितीय शोध केन्द्र है। जैन विद्या के क्षेत्र में कार्य करने वाले देश-विदेश के शिक्षा संस्थानों, विद्वानों और शोधार्थियों के लिए एक मुख्य केन्द्र है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने जैन विद्या की विभिन्न विद्या शाखाओं में विशिष्ट विद्वानों के निर्माण हेतु चार विद्यापीठों की स्थापना की है। इन्हीं चार विद्यापीठों के विभिन्न विषयों पर एक से दस लाख तक की शोध परियोजनायें आमंत्रित की जा रही हैं। विस्तृत जानकारी के लिए वेबसाईट www.jvbi.ac.in तथा ई-मेल jvbi.bmirc@gmail.com के माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं।

इस हेतु सम्माननीय विद्वानों, अध्येताओं एवं जैन दर्शन के विषय-विशेषज्ञों से अनुरोध है कि शोध परियोजना की प्रविष्टिया प्रोफेसर समणी ऋजुप्रज्ञा, निदेशक-भगवान महावीर अंतर्राष्ट्रीय शोध केन्द्र, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं 341306 (राजस्थान) मो. : 90204408922 के पते पर अंतिम तिथि दिनांक 31.12.2017 तक प्रेषित करें। **प्रेषक : शरद कुमार जैन, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं**

# जैन सोश्यल ग्रुप द्वारा निःशुल्क आयुर्वेदिक चिकित्सा परामर्श शिविर आयोजित

**बदनावर (मध्य प्रदेश)** : जैन सोशल ग्रुप के तत्वावधान एवं समाजसेवी शैतानमल विन्यायक्या की स्मृति में निःशुल्क आयुर्वेदिक चिकित्सा परामर्श शिविर का भव्य आयोजन किया गया। गौरतलब है कि ग्रुप द्वारा प्रतिवर्ष विभिन्न सोश्यल व रचनात्मक गतिविधियाँ की जाती हैं। इसके तहत कई लोग लाभांवित होते हैं। शिविर का शुभारंभ अतिथि वैद्यजन ने भगवान महावीर स्वामी एवं स्व. शैतानमल विन्यायक्या की तस्वीर पर माल्यार्पण करके किया। शिविर में बड़ी संख्या में लोगों ने पंजीयन करवाया। वृद्ध, महिला पुरुष भी परामर्श हेतु शिविर में पहुंचे। सुबह से देर शाम तक कुंदकुंद सभागृह में मरीजों ने इंदौर के प्रसिद्ध वैद्य स्व. गोविंदराम बाबूजी की शिष्या कविता मोरवाल, उषा जैन, इंदिरा जैन एवं सुमति देशपांडे से स्वाइन फ्लू, चिकनगुनिया, कमरदर्द, घुटने दर्द, दमा, शुगर, टीबी, गठिया वादी, साइटिका, सर्दी, खांसी, बुखार, वायन आदि विभिन्न बीमारियों के लिए परीक्षण करवाया। शिविर में 200 से भी अधिक रोगी लाभांवित हुए हैं। शिविर के प्रति मरीजों में इतनी उत्सुकता थी कि मरीज कतार में बैठकर अपनी बारी आने का इंतजार करके परीक्षण करवाकर ही घर गए। शिविर लाभार्थी विन्याक्या परिवार की ओर से निःशुल्क औषधी वितरित की गई साथ ही वैद्य द्वारा कई महत्वपूर्ण नुस्खे भी बताए गए। समापन सत्र में शिविर में अमूल्य सेवा देने वाली वैद्यजन को ग्रुप की ओर से ग्रुप संस्थापक अध्यक्ष श्री विजयजी बाफना, अध्यक्ष पवनजी पाटोदी व लाभार्थी परिवार के श्री प्रवीणजी विन्यायक्या ने स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। **प्रेषक : दिलीप दर्डा**

# गुरुदेव चौथमल जी महाराज की जयंती मनाई गई

**कानपुर (उत्तर प्रदेश)** : जैन दिवाकर गुरुदेव पू. श्री चौथमल जी म. की 141वीं जन्म जयंती राष्ट्रसंत पू. श्री कमल मुनि जी म. 'कमलेश' के पावन सान्निध्य में अखिल भारतीय जैन दिवाकर विचार मंच, नई दिल्ली की ओर से एक अद्भुत, अलौकिक ऐतिहासिक रूप से मनाई गई, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में वीआईपी अथवा मंत्री महोदय का स्वागत किया जाता है। इस अवसर पर सफाई कर्मचारी, हरिजन बंधुओं को सभा में शॉल ओढ़ाकर श्रावक मंच के सभी पदाधिकारियों ने उनका आत्मीय अभिनंदन किया। इस पर अभिभूत होकर हरिजन बंधु की आंखें खुशी के मारे छलक पड़ी इस प्रकार का सम्मान पाकर इस तरह स्थानक में काम करने वाले भाईयों का सम्मान किया गया। मैनेजर एवं रसोई में काम करने वाले सभी कर्मचारियों को इस प्रकार का सम्मान देखकर उपस्थित जनता को आश्चर्य सा हो रहा था। सभी ने इस कार्यक्रम की मुक्त कंठ से प्रशंसा की। गौरक्षा में समर्पित भाई और बहनों का भी अभिनंदन किया गया। 1,40,000 की कंबल दिवाकर मंच की ओर से पूरे देश में प्रतिभाओं का सम्मान करने में उपयोग किया जाएगा, जिसमें उपेक्षित दबे कुचले भाई-बहनों को उनके कार्यों का बहुमान किया जाएगा। पू. श्री कौशल मुनि जी म. ने मंगलाचरण किया एवं पू. श्री घनश्याम मुनि जी म. ने भी इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किए। **प्रेषक : भीकमचंद चोरड़िया**

**डूंगला (राजस्थान)** : जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. अशोककुमारजी एन. पगारिया जैन, जैन दिवाकर गुरुदेव चौथमल जी महाराज की जयंती के पावन प्रसंग पर राष्ट्रसंत पू. श्री कमलमुनि जी म. की प्रेरणा से निर्मित महावीर एलवा माँ गौशाला जैन दिवाकर कमल तीर्थ डूंगला, जोकि राष्ट्रसंत जी की जन्मभूमि भी है वहां पर समारोह की अध्यक्षता करते हुए कहा कि इस पावन माटी को चंदन समझकर उसे माथे पर लगाने

के लिए यहां आकर अपने आप को सौभाग्यशाली मान रहा हूँ। श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ डूंगला में भी आपका अभिनंदन किया गया। अखिल भारतीय जैन दिवाकर विचार मंच शाखा राजस्थान के अध्यक्ष श्री बाबूलालजी सामर, राजस्थान शाखा के श्री सिद्धार्थजी कुमार तातेड़, गौशाला के प्रमुख श्री रमेश कुमार जी मेहता, श्री उत्सव कुमार जी भानावत, जैन कॉन्फ्रेंस के पूर्व मार्गदर्शक श्री शौकीनजी कुमार जी भानावत ने गौशाला परिसर में पगारिया जी का अभिनंदन और स्वागत किया। साधु-साध्वी सेवा के लिए बनने वाले कमरों के लिए पगारियाजी ने 1 लाख 8 हजार रुपये की राशि तत्काल प्रदान की और कहा कि जैन कॉन्फ्रेंस का पूरा-पूरा सहयोग हमेशा के लिए आपकी योजनाओं के लिए मिलता रहेगा। आने वाले समय में यह स्थल देश के मानचित्र पर उभरकर आस्था का केन्द्र बनेगा।

**प्रेषक : बाबूलाल सामर जैन**

## तप-जप एवं जन्मोत्सव श्री सिद्धी पार्श्व तप अभिनंदन समारोह सानंदन संपन्न

**बैंगलोर (कर्नाटक) :** श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, हनुमंतनगर के तत्वावधान में तथा श्रमण संघीय उप-प्रवर्तक पू. श्री श्रुतमुनि जी म., तपस्वीरत्न पू. श्री अक्षर मुनि जी म. के पावन निश्रा में गोमटेश्वर विद्यापीठ में गुरु श्रुत जन्मोत्सव एवं तपस्वीरत्न श्री अक्षर मुनि जी के 42 उपवास की सुदीर्घ तपस्या का सिद्धि पार्श्वतप 51 दिवसीय नवकार महामंत्र जाप श्री पैंसठिया मंत्र जाप का पूर्णाहूति सह श्री सिद्धि पार्श्व तप आराधकों, तपस्वियों का भव्य तपोभिनंदन समारोह का विशाल जनमेदिनी की उपस्थिति में भव्य आयोजन किया गया। हनुमंतनगर संघ द्वारा समस्त श्री सिद्धि पार्श्व तप तपस्वी आराधकों का तप अनुमोदना बहुमान सम्मान किया गया। पू. श्री श्रुतमुनि जी ने कहा कि आज वे अक्षरमुनि जी के समान शिष्य रत्न को पाकर धन्य हो गये, जिन्होंने उनके जन्मोत्सव को महा उत्सव बना दिया और 42 उपवास की अमूल्य भेंट अर्पण की। पू. श्री अक्षरमुनि जी म. ने गुरुदेव को जन्मदिवस की शुभकामनाएं दी।

इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस के विश्वस्त मण्डल के चेयरमैन एवं पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री केसरीमलजी बुरड़ जैन, संघ अध्यक्ष श्री कल्याणसिंह जी बुरड़ जैन, संघमंत्री श्री भंवरलाल जी गादिया जैन, कोषाध्यक्ष श्री सज्जनराज जी बाफना जैन, श्री कमलजी सिपानी, श्री पदमराजजी मेहता जैन, श्री रणजीतमलजी कानूगो आदि जैन समाज के अनेक गणमान्य व्यक्ति, संघ प्रमुख पदाधिकारीगण श्री संपतराजजी कोठारी जैन, श्री मदनलालजी पोरवाल जैन, श्री कैलाशचंद जी बोहरा जैन समारोह में पहुंचे। कार्यक्रम का संचालन हनुमंतनगर संघ उपाध्यक्ष श्री अशोककुमार जी गादिया जैन ने किया। संघमंत्री श्री भंवरलालजी गादिया जैन ने धन्यवाद अर्पित किया।

**प्रेषक : अशोककुमार गादिया जैन**

## जैन अल्पसंख्यक महासंघ के डॉ. चोरड़िया एवं सदस्य सम्मानित

**चेन्नई (तमिलनाडु) :** अखिल भारतीय जैन अल्पसंख्यक महासंघ (एआईजेएमएफ) की सुगन हाउस, साहुकारपेट, चेन्नई शाखा की विशिष्ट जनसेवा तथा सतत् सक्रियता के लिए चेन्नई जिला कलक्टर अन्बुसेल्वन ने महासंघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ. एस. कृष्णचंदजी चोरड़िया जैन को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। राजाजी सालै स्थित कलक्टर कार्यालय के कॉन्फ्रेंस हॉल में आयोजित सम्मान समारोह में जिला कलक्टर ने प्राज्ञसंघ के चेयरमैन विजयराजजी खाबिया, जयप्रकाशजी ललवाणी, अमृतलालजी डागा, हँसमुखजी रांका, सुभाषजी चोरड़िया, सुमेरजी वैद, कमलजी खाबिया, देवेन्द्रजी बेताला, राकेशजी खाबिया, तेजराजजी पुनमिया, संजयजी खाबिया, राहुलजी कोठारी आदि को उनकी समर्पित सेवाओं के लिए प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया।

**प्रेषक : संपत बागमार**

## कासरवाड़ी चातुर्मास हर्षोल्लास तथा मंगलमय वातारण में सम्पन्न

**कासरवाड़ी, पुणे (महाराष्ट्र):** कासरवाड़ी चातुर्मास हर्षोल्लास, मंगलमय वातावरण में अनेकों धार्मिक एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं के संपन्न विदाई समारोह पर श्रावक हुआ माहौल।

कासरवाडी में साध्वी पू. श्री किरणप्रभा जी म. की सुशिष्या प्रखर वक्ता पू. श्री विपुलदर्शना जी म, प.पू. श्री रूजुदर्शननाजी म., प.पू. श्री रूचिदर्शना म., प.पू. श्री पावनदर्शना जी म., प.पू. श्री मधुरदर्शना जी म., प. पू. श्री काव्यदर्शना जी म., आदि साध्वियों का चातुर्मास अध्यात्मिक रुपस से ऐतिहासिक हुआ। चातुर्मास विदाई समारोह दिनांक ४ नवम्बर २०१७ को हुआ। इस विदाई समरोह के प्रमुख अति के रूप से अखिल भारतीय स्वाध्याय संघ के अध्यक्ष श्री सोभाचंद जी उपस्थित थे। लगभग २५ से अधिक भाई बहनों ने चातुर्मास के बारे में अपना वक्त देकर महासभा की भूरी-भूरी प्रशंसा कर एक संस्कार यज्ञ के रूप में चातुर्मास को सम्बोधित किया। चातुर्मास की सफलता के लिए संघ के अध्यक्ष श्री बसंतलाल जी बोरा, कार्याध्यक्ष श्री विलासजी पगारिया, कोषाध्यक्ष श्री रमणलाल जी कर्नावट के सथ श्री पार्श्वनाथ युवक मंडल, सुशील बहुत मंडल के सदस्यों अपना पूर्ण योगदान दिया। कार्यक्रम का सूत्र संचालन डॉ. प्रो. डॉ. अशोककुमार पगारिया ने किया तथा महामंत्री जी पू. श्री विपुलदर्शना जी को 'प्रवचन प्रभाविका' की उपाधि से श्रीसंघ ने गौरवान्वित किया।

**प्रेषक : विलास पगारिया**

## जैन दिवाकर पू. श्री चौथमल म. की जन्म जयंती एवं चातुर्मासार्थ विदाई का भव्य आयोजन

**पनवेल (महाराष्ट्र) :** वर्धमान स्थानक वासी जैन श्रावक संघ के तत्वावधान में डॉ अक्षय ज्योति के सान्निध्य में पनवेल के फडके ऑडीटोरियम में जैन दिवाकर पू. श्री चौथमल म. की जन्म जयंती एवं चातुर्मासरत विदाई का भव्य आयोजन किया गया। समारोह में पूज्य श्री डॉ अक्षय ज्योती म. एवं साध्वी पू. श्री कीर्ति म. साध्वी पू.श्री उपासना म. के सान्निध्य में भक्तिमय वातावरण में संपन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरुवात मंगलाचरण की साथ की गई इसके साथ ही समारोह में गुरुवर के संगीतमय भजन से उपस्तिथ श्रावक गण भाव विभोर हो गए। कार्यक्रम में गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड से सम्मानित प्राप्तीशाह एवं साथी कलाकारों ने भरत नाट्य की सुन्दर प्रस्तुति दी। विदाई समारोह के अवसर पर साध्वी पू.श्री डॉ अक्षय ज्योति म. ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा कि जैन दिवाकर पू. श्री चौथमलजी म. जैन शासन के सितारे थे। उनके गुणों को शब्दों में बयां करना बहुत मुश्किल है। यदि मैं पनवेल संघ समिति 2017 की बात करे तो जब-जब तीर्थांकरो की बात चलेगी तो पनवेल संघ 2017 का ये चातुर्मास याद आएगा। पनवेल संघ के सदस्यों ने भी अपने म. के समक्ष भावपूर्ण अपने विचारो की प्रस्तुति दी। इस भव्य आयोजन के समारोह अध्यक्ष दिलीप पगारिया में मुख्य अतिथि के रुप जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मोहनलाल चोपडा जैन, श्री पारस मोदी जैन, श्री बालचंद खरवड जैन, श्री सागरमल सांखला जैन, श्री सागर कोठारी जैन, श्री पंकज टुकलिया जैन,श्री महेंद्र पगारिया जैन, श्री आदेश खिंवसरा जैन, श्री दिलीप पगारिया जैन, श्री ललित कोठारी जैन, श्री दिनेश सिंघवी जैन, श्री विजय पगारिया जैन, श्री राजमल मोगरा जैन, श्री प्रकाश दोषी जैन, श्री नरेंद्र बांठिया जैन, श्री विजय बोहरा जैन, श्री मनोज बांठिया जैन, श्री बालासाहेब विक्की ओसवाल जैन, श्री राकेश सिघवी आदि की उपस्थिति रही।

इस अवसर पर पनवेल संघ के अध्यक्ष श्री राजेश बांठीया जैन, श्री नितिन मुणोत जैन, श्री संतोष मनोज बांठिया जैन, श्री आनंदीलाल सुराणा जैन, श्री अनूप मुथा जैन, श्री ललित कोठारी जैन, श्री नीरज

कोठारी, श्री मनोज मुणोत, श्री माणक चोरड़िया रहे। समारोह में जैन दिवाकर फाउण्डेशन नाशिक की ओर से भामाशाह लाभार्थी रहे श्री चंद्रकांतजी, श्री नीतिनजी, श्री बिपीन मुनोथ, श्री पारसमलजी, श्री कालूलालजी रांका, श्री महेंद्रजी, श्री मोतीलालजी बांठिया, श्री विलासजी, श्री संतोषजी मुनोथ, श्री पंकजजी, श्री परसमलजी सिंयाल, श्री शैलेशजी, श्री राजेशजी बांठिया, श्री विलासजी, श्री मदनलालजी कोठारी, श्री पंकजजी, श्री गेहरीलालजी टुकल्या, श्री माणकचंदजी, श्री मनोजजी मुनोत, श्री रणजीतजी सिंहजी, श्री राजेन्द्रसिंहजी कागरेचा, श्री वीरेन्द्रकुमारजी, श्री रतनचंदजी बांठिया, श्री दिलीपकुमारजी, श्री फतहलालजी खेरोदिया, श्री रोशनलालजी, श्री इन्द्रमलजी पगारिया, श्री अनुपजी, श्री रमेशजी मुथा, श्री राजेन्द्रजी, श्री नरेन्द्रजी बांठिया, श्रावकरत्न श्री पन्नालालजी, श्री केशरचंदजी बांठिया, नारीरत्न श्रीमती सरलाबाई रमणलालाजी बालड, नारीरत्न सौ. विमलबाई सुमतीलालजी कोठारी को पुरष्कार से सम्मानित किया गया आदेश खिवसरा को युवा रत्न से।

पनवेल संघ से श्री मनोज मुणोत महाराजजी ने चातुर्मास में प्रवचन के द्वारा बहुत अल्प समय में ही हमे सक्षम बना दिया है। अध्यक्ष श्री राजेश बांठिया ने कहा चातुर्मास में बहुत युवा संघ से जुड़े जो की धर्म के लिए सकारत्मक है। मंत्री श्री रणजीत कागरेचा ने साध्वीश्रीजी के प्रति श्रद्धा अर्पित की एवं पनवेल वासियो सफल चातुर्मास के लिए आभार प्रकट किया पनवेल संघ के अध्यक्ष श्री राजेश बांठिया मेवाड़ मण्डल के श्री महावीर कुमठ, श्री महेन्द्र कुकडा, श्री मनीष सुराना, श्री ललित चण्डालिया, श्री जयन्ती परमार, श्री ऋषभ लाल सांखला, श्री गौरव बांठीया, श्री निखिल मुणोथ, श्री प्रितेश, श्री वैभव, श्री सुनील लोढा, श्री गौरव मुणोत, श्री प्रकाश कर्नावट, श्री पारस हिंगड़, ज्योति बांठीया, संगीता संचेती, कन्या मंडल, रिचा चंडालिया, इशिता, अनु वही अम्बेश पाठशाला की शिक्षका पिंकी जैन, श्रुति निसर गरिमा चपलोत, प्राप्ति सायन ग्रुप ने अपनी उपस्तिथि दर्ज कराई। कार्यक्रम में लाभार्थी भोजन माणकचंद, मनोज, मनीष, राज मुणोत। वही कार्यक्रम का कुशल संचालन रणजीत कागरेचा जी ने किया।

**प्रेषक : पारस मोदी जैन**

## पू. श्री सरिताजी म. की जीवनी पर संपादित पुस्तिका का विमोचन

**राहाता, अहमदनगर (महाराष्ट्र) :** राहाता जैन स्थानक में प. पू. श्री सरिताजी म. सा की जीवनी पर आसंपादित विशेष पुस्तिका का विमोचन महामंत्री डॉ. अशोकुमार पगारिया के कर-कमलों द्वारा किया गया। इस शुभ अवसर पर प. पू. श्री परागमुनि जी म., प. पू. श्री गौतममुनि जी म. प. पू. श्री संयममुनि जी म. तथा साध्वी प. पू. श्री विरक्तीश्रीजी के सान्निध्य में महासती जी उप-प्रवर्तनीजी प.पू. श्री सरिताश्री म. की जीवन पर 'सरित सुगंधा' पुस्तिका का विमोचन जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय महामंत्री डॉ. प्रो. अशोककुमार एन पगारिया जैन, महिला शाखा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष प्रो. सरिताजी बंब तथा स्थानीय संघ के अध्यक्ष श्री खुशालचंद जी रूपसोनी आदि के हाथों हाल ही में सम्पन्न हुआ।

महासती जी पू. श्री सरिताश्री अत्यंत मिलनसार तथा सरल, अध्ययनशील तथा संयमी व्यक्तित्व के धनी थी। उनका गतवर्ष विहार में दुर्घटना से निधन हुआ। उनके जाने से श्रमण संघ को बहुत बड़ी क्षति पहुंची है। ये उदगार डॉ. पगारिया ने अपने सम्बोधन में व्यक्त किये। इस पुसतिका का संपादन पू. श्री विरक्तीश्री जी ने किया। इसी दिन श्रमण संघीय सलाहाकर पू. श्री सुमतिप्रकाश जी म. का जन्मोत्सव भी मनाया गया।

**प्रेषक : आतिश भंसाली**

## पू. श्री सत्यसाधना जी म. का 44वां दीक्षा दिवस तप त्याग के साथ मनाया गया

**इंचलकरंजी, पुणे (महाराष्ट्र) :** उपप्रवर्तिनी संथारा प्रेरिका सत्यसाधना जी म. तपचक्रेश्वरी पू. श्री अरुण प्रभाजी म., साध्वी पू. श्री अर्हतज्योति जी म., साध्वी पू. श्री तन्मयदर्शना जी म., साध्वी पू. श्री. हितसाधना जी म., साध्वी हर्षप्रज्ञा जी म., साध्वी सौम्य पू. श्री ज्योति जी म. आदि ठाणा 9 के सान्निध्य में उप-प्रवर्तिनी संथारा प्रेरिका पू. श्री सत्यसाधना जी म. का 44वाँ दीक्षा दिवस तप त्याग के साथ मनाया गया। 200 के करीबन सामायिक के तेले हुए, पार्श्व पदमावती अनुष्ठान के 16 एकाशन किया। सभी महासतियों जी ने गुरु गुणानुवाद किया। इस अवसर पर श्री रमेश कुमार जी खिंवसरा की तरफ से 44 लक्की ड्रा एवं प्रभावना, संसारिक पक्षीय भाई गौतमचंद जी भूरावत एवं श्रीसंघ की तफर से प्रभावना रखी गयी। इस अवसर पर हैदराबाद, सिकन्दराबाद, चेन्नई, औरंगाबाद, अहमदाबाद, नाशिक, नीमच, पुणे, कराड, कपासन, केडगांव, जयसिंगपुर, माधवनगर आदि शहरों से लोग उपस्थित हुए। ये समाचार इंचलकरंजी श्रीसंघ के अध्यक्ष श्री पदमचंद जी जैन खाबिया ने दिये।

**प्रेषक : आदित्य डागा**

## आचार्य हस्ती सेवा सम्मान कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

**सिकन्दराबाद (आन्ध्र प्रदेश) :** आचार्य हस्ती फाउंडेशन हैदराबाद के तत्वावधान में 7वाँ आचार्य हस्ती सेवा सम्मान 2017 अहिंसा रत्न मूक पशुओं के मसीहा श्री जसराज जी श्रीश्रीमाल को जैन स्थानक कांचीगुड़ा में आचार्य प्रवर परम श्रद्धेय पू. श्री हीराचन्द्र जी म. की आज्ञानुवर्ती सुशिष्य परम विदुषी पू. श्री विमलेश प्रभा जी म. आदि ठाणा 7 के पावन सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। समारोह सम्मानीय अतिथि राजीव त्रिदेवी प्रिंसिपल सेक्रेट्री तेलंगाना सरकार ने बताया कि त्यागी संतों के सान्निध्य में किया गया। सम्मान कार्यक्रम त्यागमय जीवन की प्रेरणा देता है। संतों ने अपना सर्वस्व जीवन **'अहिंसा एवं सत्य'** के लिए बलिदान कर दिया उन्हीं के पद चिन्हों पर जैन समाज के लोग चल रहे हैं। जसराज श्रीश्रीमाल ने अपना जीवन पशुओं की सुरक्षा के लिए समर्पित किया। आचार्य हस्ती फाउण्डेशन के अध्यक्ष श्री हस्तीमल गुंदेचा जी ने आगंतुक सभी अतिथियों को शाल, माला एवं भावों से स्वागत किया। समाज में उत्कृष्ट कार्यों का सम्मान करना हमारी नैतिक जिम्मेदारी बनती हैं। विभिन्न संघों, संस्थाओं ने उनका अभिनंदन किया।

समारोह में चातुर्मास 2017 में उत्कृष्ट सेवा कार्यों के लिए विभिन्न संघ सेवियों का सम्मान किया गया। युवारत्न सज्जन गुन्देचा जी को दिया। पुरस्कार प्रायोजक दलपतराज मिलापचंद संदीपकुमार छाजेड़ परिवार को धन्यवाद एवं सम्मान किया गया। श्री जैन सेवा संघ के पूर्व अध्यक्ष समाजसेवी निर्मल कुमार सिंघवी ने विशिष्ठ व्यक्तियों परिचय एवं अपने उदगार व्यक्त किये। कार्याध्यक्ष तेजराज जैन ने **'प्रशस्ति पत्र'** प्रस्तुतिकरण किया। श्राविका मण्डल, युवक परिषद के सभी सदस्य उपस्थित हुए। विजयवाज, गुन्टूर, कालहस्ती, कम्मारेडी, चितुर इत्यादि से अतिथियों ने भाग लिया। समारोह में सम्पूर्ण चातुर्मास 2017 भोजन लाभार्थी वीरपिता सुकनराज, श्री गौतमचंद, श्री राजेशकुमार, श्री सज्जनराज गुन्देचा परिवार का संघ द्वारा स्वागत किया गया।

**प्रेषक : श्रीपाल देशलहरा**

## दीक्षा दिवस हर्षोल्लास से मनाया

**करेडा (राजस्थान) :** वर्धमान स्था. जैन श्रावक संघ राजाजी का करेडा के तत्वावधान में युवाचार्य पू. श्री 'मधुकर' मुनि जी म., साध्वी श्री सुदर्शन प्रभा जी म. साध्वी पू. श्री मणि प्रभा जी म., साध्वी पू. श्री लब्धिप्रभाजी म आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में जिनशासन प्रभाविका पूज्या गुरुमाता श्री सोहनकुंवर जी म. की

95वीं जन्म जयंती एवं मधुकर सौरव साध्वी श्री कमलप्रभा जी म. का 44 वां दीक्षा दिवस दो दिवसीय कार्यक्रम के साथ मनाया गया। गुणानुवाद समारोह साध्वीवृंद के मंगलाचरण मेहता आसीन्द एवं श्री शांतीलाल जी मूलचंद जी नहार समाजसेवी, श्री कंवरलाल जी सूर्या, राष्ट्रीय मंत्री जैन कॉन्फ्रेंस मुख्य अतिथि रहे। साध्वी पू. श्री कमल प्रभा ने कहा पू. श्री सोहनकुंवर जी म ने त्याग तप, स्वाध्याय मौन, ध्यान आदि से साधना करके एक सफल जीवन जीया। इस अवसर पर तेरापंथ संघ के शासन श्री हर्षलाल जी स्वामी एवं तत्वाज्ञाता श्री दर्शनकुमार जी म. का सुन्दर समागम हुआ। तत्वज्ञाता श्री दर्शनकुमार जी म. ने कहा कि पू. श्री सोहनकंवर जी म. गुणों के पुंज थे एवं साध्वी पू. श्री कमलप्रभा जी म. की सरलता, मृदुभाषी मिलनसरिता को अनेक उदाहरणों से प्रस्तुत किया। इस अवसर पर जैन कॉन्फ्रेंस दिल्ली के पदाधिकारीगण श्री महेन्द्र पगारिया जैन, श्री गौतमजी बाफणा जैन, श्री मनीष जी टुकलिया जैन आदि ने पू. श्री सोहन गुरुणी गुणगमान करते हुए साध्वीवृंद से गुरु अम्बेश नमन यात्रा में पधारनेकी विनती रखी। महिला शाखा में सौ. लाड़जी जैन मेहता, सौ. प्रेमिलाजी जैन सूर्या, सौ. निर्मलाजी जैन सिंघवी आदि ने शुभकामना व्यक्त की। खेड़ब्रह्म उत्तर गुजरातसे विनोदजी सूर्य ने साध्वीवृंद के चातुर्मास की विनती की। कार्यक्रम का सफल संचालन श्री निखिल कुमार जी जैन ब्यावर एवं श्री सम्पतराजजी गुगलिया जैन जसनगर ने किया। कार्यक्रम का समापन शासनमुनि श्री हर्षलाल जी स्वामी एवं मधुकर सौरभव साध्वी पू. श्री कमलप्रभा जी म. के मांगलिक से हुआ।

**प्रेषक : दीपक कोठारी**

## राजाजी नगर में पू. श्री गणेशीलाल जी म. की 138वीं पुण्यतिथि मनाई गई

**राजाजीनगर (कर्नाटक) :** राजाजी नगर स्थानक में उपप्रवर्तक श्री विनयमुनिजी म. 'वागीश' के सान्निध्य में उप प्रवर्तक पू. श्री गौतममुनिजी म. 'गुणाकर' ने धर्म सभा को सम्बोधित किया। महान तपस्वी कर्नाटक गज केसरी पूज्यश्री गणेशलालजी म. की 138वीं एवं वचनसिद्ध योगी तपस्वी वक्तावरमलजी म. की 88वीं पुण्यतिथि के प्रसंग पर कहा कि परमात्मा की वाणी के प्रति रुची करने का कार्यगुरु करते है। एक तपनिष्ठ एवम सम्यक् के प्रति प्रेरणा प्रदान करने वाले श्री गणेशलालजी म. जो एक महान उपकारी संत थे। किसी भी प्रकार की मिथ्यात्व की बात जिनके जीवन में नहीं थी। जिन्होंने अपने जीवन में कभी उपवास नहीं किया उन्होंने गुरु गणेश के आशीर्वाद से कई तपस्याएँ अपने जीवन में की। जिन्होंने कर्नाटक की धरती पर अनेक उपकार किए है जिन्हें कभी नहीं भुलाया जा सकता है।

इस अवसर पर पूज्य गुरु भगवंतो के माँगलिक के पश्चात अन्नदानम का कार्यक्रम श्री संघ के तत्वावधान में रखा गया। जिसमें लगभग 2000 लोग लाभान्वित हुए। इसके पूर्व लोकमान्य संत श्री रुपचंदजी म. 'रजत' के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ हेतु गुरुभगवंतो के माँगलिक के पश्चात कई गायों को घास, चारा, इंडी व भूसा वितरित किया गया। इस पावन पर्व पर मेहसाणा, हुबली, चेन्नई, सूरत, मुंबई, सांडेराव व अन्य क्षेत्रों से बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित हुए। सभा का संचालन श्री नेमीचंद जैन दलाल ने किया। श्री महावीरचंद जैन धोका, श्री ज्ञानचंद जैन लोढ़ा ने सभी का आभार व्यक्त किया।

अन्नदानम के कार्यक्रम में श्री गौतमचंद जैन भंडारी, श्री समर्थमल श्री कोठारी, श्री नेमीचंद जैन कोठारी, श्री पारस भलगट जैन, श्री धीरज जैन नाहर, श्री रमेश श्री पिपारिया, श्री मिलाप जैन धारीवाल, श्री राकेश जैन लोढ़ा, श्री राकेश जैन दलाल, श्री मनीष जैन बोहरा, श्री नरेश जैन लूँकड, श्री कैलाश जैन गांची, श्री सिद्धार्थ जैन रेडासनी, श्री आनंद जैन नाहर, मयंक तुरकिया, श्री पंकज जैन मारु, श्री राकेश जैन छाजेड, सौ. ललिताबाई जैन रेडासनी, सौ. कमलाबाई जैन भलगट, सौ. हँसाबाई जैन गन्ना, सौ. संगीता जैन नाहर व अन्य ने अपनी सेवाएं प्रदान की।

**प्रेषक : अशोक जैन**

## महावीर लिंब सेंटर को दिव्यांग सेवाओ के तहत प्रो वज्रकुमार पुरस्कार से सम्मान

**हुबली (कर्नाटक) :** गत 20 वर्षो से अंग विकलांगो की सेवा में समर्पित संस्था आल इंडिया जैन युथ फेडरेशन महावीर लिंब सेंटर को वर्ष 2016 के समाजसेवा के लिए प्रो वज्रकुमार अभिनन्दन पुरस्कार से विकलांगो की सेवा में समर्पित सेवा में सन्मान एवं पुरस्कार से समान्नित करने के लिए चुना गया है, यह पुरस्कार आगामी दिनों में आयोजित समारोह में संस्था के सरंक्षक मार्गदर्शक धर्मस्थल के धर्माधिकारी पद्मविभूषण डह्न वीरेंदर हेगड़े प्रदान करेंगे, इस पुरष्कार में नकद राशि व स्मृति चिन्ह दिया जायेगा, पुरस्कार चयन समिति के कार्यदर्शी डह्न अजित प्रसाद ने बताया की आल इंडिया जैन युथ फेडरेशन महावीर लिंब सेंटर दिव्यांगों की सेवा में समर्पित है, अब तक पिछले बीस वर्षो में दक्षिण भारत के आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटका, गोवा, महाराष्ट्र सहित देश के अनेक भागो में 130 से ज्यादा कैंप कर 31000 से ज्यादा विकलांगो को निःशुल्क कृत्रिम पैर हाथ लगाकर मानवीय सेवा करने वाले आल इंडिया जैन युथ फेडरेशन महावीर लिंब सेंटर को यह अत्युत्तम पुरस्कार देने का निर्णय लिया गया है

ऑल इंडिया जैन युथ फेडरेशन की स्थापना संस्थापक अध्यक्ष महेंद्र सिंघी, चौयरमेन वीरेंदर जैन, एवं जैन समाज के उत्साही युवाओ द्वारा हुयी। इस संस्था के साथ जुड़े युवाओ ने निर्णय लिया की देश भर पोलियो व अन्य बीमारियों की वजह से दिव्यांगता बढ़ती ही जा रही है इसको ध्यान में रखते हुए संस्था के सदस्यों ने हुबली में जयपुर फुट सेंटर की स्थापना करने का निर्णय लिया क्योंकि जरूरतमंद दिव्यांगों को कृत्रिम पाँव के लिए जयपुर जाना पड़ता था परन्तु आवागमन की सुविधा नहीं होने के कारन दिव्यांगों के परिजनों को अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ता था, इसी को ध्यान में रखते हुए हमारे संस्था के संस्थापक अध्यक्ष महेंद्र सिंघी, चेयरमैन वीरेंद्र जैन ने आवश्यक कार्यवाही कर किम्स परिसर में एक सेंटर की स्थापना की जो की आज महावीर लिंब सेंटर के नाम से दक्षिण भारत के हर कोने-कोने में जाना जाता है, इस सेंटर प्रतिदिन 5 से 10 दिव्यांग आते है और अपने कृत्रिम हाथ पाँव प्राप्त करते है और अपने पाँवो पर खड़े होते है, लिंब सेंटर के सुभाष डंक ने बताया की यह वर्ष सेंटर के लिए विशेष है क्योंकि पद्मविभूषण डह्न हेगड़े का धर्माधिकारी पद पर सुशोभित होने के 50 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष में इस वर्ष आल इंडिया जैन यूथ फेडरेशन महावीर लिंब सेंटर को इस पुरस्कार से चुना जाना अपने आप में विशेष है, यह यूथ फेडरेशन के सदस्यों व पदाधिकारियों के सिर पर एक और तमगा लगा है।

**प्रेषक : सुभाष डाक**

## ज्ञानपंचमी के महत्व को समझकर आराधना का लाभ लिया

**बखतगढ़ (मध्य प्रदेश) :** ज्ञानपंचमी पर्व बखतगढ़ सहित क्षेत्र के श्रीसंघों में धर्म स्थानों पर जप, तप, त्याग एवं विभिन्न धर्म आराधना करके मनाया जाएगा। इस प्रसंग पर आराधना के साथ आराधकों ने एकासन तप, केवल अचित पानी का उपयोग कर निराहार उपवास आदि तपाराधना की। श्रावक-श्राविकाओं ने श्री वर्धमान स्थानक भवन धर्म स्थान पर पहुंचकर ज्ञान पंचमी की कथा का एक श्राविका ने वाचन किया। शेष ने इसके महत्व एवं इससे होने वाले लाभ की जानकारी को एकाग्रतापूर्वक श्रवण किया। जैन धर्म संस्कृति 'तप प्रधान संस्कृति' हैं। आगम शास्त्र के अनुसार पू. संयमी आत्माएं फरमाते हैं कि यह संस्कृति अनादि काल से तप को विशेष महत्व देती आ रही हैं। धर्म की साधना में और आत्मा की तेजोमय बनाने में तप का बहुत बड़ा योगदान रहा हैं। तप साधना आराधना के माध्यम से उत्तरोत्तर बढ़ते हुए सिद्ध पथ को साधा जा सकता हैं।

इसीलिए तप के साथ इस दिन ज्ञानपंचमी की कथा का वाचन भी किया जाता हैं। आगम में यह भी दर्शाया गया हैं कि श्रद्धा व समता भाव से इसकी आराधना करने से कई रोग खत्म हो जाते हैं। ज्ञानपंचमी का मुख्य समारोह मेघनगर में वर्षावास हेतु विराजित गणाधीश भगवंत पूज्य गुरुदेव श्री उमेशमुनिजी म. 'अणु' के प्रथम शिष्य धर्मदास गणनायक प्रवर्तक पू. श्री जिनेंद्रमुनिजी म., पू. श्री संदीपमुनिजी म., पू. श्री दिलीपमुनिजी म., पू. श्री आदित्यमुनिजी म. ठाणा 4 एवं साध्वी पू. श्री निखिलशीलाजी म., पू. श्री दिव्यशीलाजी म., पू. श्री प्रियशीलाजी म., पू. श्री श्रीकांताजी म., पू. श्री प्रशमप्रभाजी म., पू. श्री दीप्तिजी म., पू. श्री शंमप्रभाजी म. ठाणा 7 के सान्निध्य में हुआ। क्षेत्र एवं दूरदराज से भी कई श्रावक-श्राविकाओं ने मेघनगर पहुंचकर पूज्य चारित्र आत्माओं के दर्शन, मांगलिक, व्याख्यान के साथ ज्ञानपंचमी की आराधना के विशेष महत्व व प्रभाव को समझकर अर्न्तहृदय में उतारा व आराधना का भरपूर लाभ लिया। **प्रेषकः दिलीप दरड़ा**

## पू. श्री कमलेश मुनि जी म. ने विराट संत-सम्मेलन में क्रांति का शंखनांद किया

**कानपुर (उत्तर प्रदेश) :** विश्व प्रसिद्ध स्वामी नारदानंद सरस्वती जी म. की स्मृति में जो कि जगदाचार्य पद से विभूशित थे उनकी स्मृति में वृन्दावन लान कानपुर के भव्य मैदान में राष्ट्रीय स्तरीय विराट संत सम्मेलन का आयोजन हुआ। जिसमें जगद्गुरु शंकराचार्य, क्रांतिकारी राष्ट्र संत श्री कमल मुनि 'कमलेश', अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष महंत श्री नरेन्द्र गिरि जी म. दिगम्बर अखाड़ा के महंत स्वरमी सुरेश दास जी म. जगदाचार्य उपेन्द्रानंद जी म. महामंडलेश्वर जयगिरि जी म. कई मान इक्कयावन हस्तियों ने भाग लिया। स्वामी चिन्मयानंद जी, पूर्व सांसद स्वामी रामविलाश वेदांती विशेषरुप से उपस्थित थे, इनके अलावा सैंकड़ो संत देश के कौने-कौन से पधारे और हजारों की जनसंख्या उपस्थित थी।. सम्मेलन को सम्बोधित करते हुये राष्ट्रसंत पू. श्री कमलमुनि जी म. ने कहा कि जब केन्द्र सरकार चार घंटे में नोट बंदी करसकती है तो फिर राम मन्दिर का निर्माण अयोध्या में एवं गाय रक्षा के लिये प्रस्ताव क्यों नहीं ला रहे हैं। उनको कौन रोक रहा है, जहां पूर्ण बहुमत है अब कोई बहाना नहीं चलेगा।

कार्यक्रम के आयोजक नारदानंद आश्रम के चेयरमैन स्वामी विद्या चैतन्य जी ने अपनी समिति से सभी पधारे हुये गुरु भगवंतां का शॉल-माला और स्मृति चिन्ह् भेंट कर आत्मीय अभिनंदन किया। महंत हरिचेतन पू. श्री डॉ. साध्वी प्राची जी म., महामंडलेश्वर संतोषदास जी, स्वामी नारायण नंद जी ने भी विचार व्यक्त किये। मुख्यमंत्री श्री आदित्यनाथ योगी, उत्तर प्रदेश ने अपने प्रतिनिधि के साथ संदेश भेजकर सम्मेलन के प्रति मंगलकामना करते हुये कहलाये कि गंगा, गौमाता, राममन्दिर आदि की रक्षा सरकार को कुर्बान करके भी करूंगा। सम्मेलन को सफल बनाने में पं. विमलेश मिश्रा, दिनेश सिंह, पप्पू, प्रिंस, मोनू पाण्डे, कुलदीप सिंह यादव, बृजेन्द्र सिंह कालिन्द्री, मृत्युंजय यादव, अन्नू यादव नवाब, पी एन तिवारी,, सुरेन्द्र सिंह यादव, मधु मिश्रा, वंदना गुप्ता, सौरभ शुक्ला ने सम्मेलन को सफल बनाने में दिन रात प्रयास किया।

**प्रेषकः पं. विमलेश मिश्रा**

## श्रमण भगवान महावीर स्वामी निर्वाण कल्याण के उपलक्ष्य में फ्री नेत्र जाँच कैम्प

**नई दिल्ली :** 22 अक्टूबर 2017 को श्रमण भगवान महावीर स्वामी निर्वाण कल्याणक के उपलक्ष्य में शक्ति नगर एक्स. दिल्ली जैन स्थानक में सेवा श्रमणी महासाध्वी पू. श्री श्रेया जी म. की पावन प्रेरणा एवं उनके सान्निध्य में फ्री नेत्र जाँच एवं मोतियाबिन्द (लैंस मुक्त) आप्रेशन शिविर का आयोजन गुरु शुक्ल जैन चैरिटेबल ट्रस्ट (पंजी.) दिल्ली द्वारा किया गया। शिविर का उद्घाटन श्री पुनीत जैन (मियांवाली नगर) के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। इस कैम्प में लगभग 30-90 ने अपनी अपनी आँखों की जाँच करवाई। पश्चिम विहार श्रीसंघ द्वारा

संचालित स्वास्थ्य सेवाओं द्वारा डॉक्टरों की टीम ने इस शिविर में अपनी सेवाएं प्रदान की। जैन सभा शक्ति नगर एक्स. के प्रधान श्री मामनचंद जैन, महामंत्री श्री सुरेश जैन जी ने पधारे हुए सभी महानुभावों का सम्मान किया। गुरुणी जी श्री श्रेया जी म. ने इस प्रकार के सेवा कार्यों की अनुमोदना करते हुए ट्रस्ट के सभी पदाधिकारियों को मंगल आर्शीवाद प्रदान किया तथा भगवान महावीर का संदेश 'जीओ और जीने दो' का संदेश जन-जन तक पहुंचाने की प्रेरणा दी।

**प्रेषक : नरेन्द्र जैन**

---

## शोक समाचार

# जैन कॉन्फ्रेंस के पूर्व राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष परम गुरु भक्त श्रीमान् रोशनलाल जी जैन का दुःखद निधन

**नई दिल्ली :** पानीपत निवासी परम सेवाभावी, समाजसेवी श्रीमान् रोशनलालजी जैन सुपुत्र श्री हरीचंदजी जैन जो जैन कॉन्फ्रेंस के पूर्व राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष के रूप में संस्था को अपनी विपुल सेवाएं दे चुके हैं, उनका दिनांक 06 नवंबर 2017 की रात्रि को हृदय गति रूक जाने से दुःखद निधन हो गया। वैसे तो आपका संपूर्ण परिवार जैन कॉन्फ्रेंस का ऐसा सिपाही है, जिसने सदैव संस्था के दायित्वों को निभाते हुए हरियाणा में प्रमुखता से कार्य किया है। आपके छोटे भाई श्रीमान् जगदीशचन्द्रजी जैन राष्ट्रीय उपाध्यक्ष के रूप में जैन कॉन्फ्रेंस की अखिल भारतीय स्तर पर सेवाएं दे रहे हैं। वर्तमान में हरियाणा प्रांत के प्रांतीय अध्यक्ष के रूप में श्री विनयजी जैन कार्यरत हैं। गांधी मण्डी पानीपत में स्थानकवासी परंपरा से जुड़े प्रत्येक साधु-साध्वी जी महाराज की सेवा करने में आपका अग्रणी स्थान रहा हैं। महासाध्वी पूज्य श्री कैलाशवती जी म. एवम् उनके सिंघाड़े के प्रति तो जिस प्रकार से आपने सेवाएं प्रदान की हैं, वह अनुकरणीय है।

प्रसिद्धि परांगमुख रहते हुए मूक भाव से सेवा करना एवम् राष्ट्रीय स्तर के पदाधिकारी होने के बावजूद स्थानक में छोटी से छोटी सेवा देने के लिए भी तत्पर रहना आपके विनम्र स्वभाव का प्रतीक है। हँसमुख, मिलनसार, सबके दुःख-सुख में साथ देने वाले, सदैव संघ एकता एवं संगठन के लिए कार्य करने वाले इस जैन परिवार के प्रमुख व्यक्ति का ही समाज से विछोह नहीं हुआ है, बल्कि जैन कॉन्फ्रेंस के अखिल भारतीय परिवार की भी भारी क्षति हुई है। आपको शोक संवेदना प्रकट करते हुए जैन कॉन्फ्रेंस के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मोहनलालजी चोपड़ा जैन, प्रमुख मार्गदर्शक श्री अविनाशजी चोरड़िया जैन, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जे. डी. जैन जी, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री बालचंदजी खरवड़ जैन, राष्ट्रीय महामंत्री श्री अशोककुमार जी पगारिया जैन, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री महेन्द्रजी बोकरिया जैन, राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति सदस्य श्री पारसजी मोदी जैन, राष्ट्रीय मंत्री श्री विमलजी जैन-अम्बाला, पूर्व राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री शेर सिंह जी जैन सहित अनेक पदाधिकारियों ने आपके दुःखद निधन पर आत्मीय श्रद्धांजलि प्रदान करते हुए दिवंगत आत्मा के प्रति शुभ-चिंतन प्रकट किया है। जैन कॉन्फ्रेंस के प्रतिनिधि के रूप में श्री मानक शाह जी ने पानीपत जाकर जैन कॉन्फ्रेंस की ओर से आपको भावभीनी श्रद्धांजलि प्रस्तुत की।

**प्रेषक : विमल जैन**

## महासती पू. श्री चारित्रप्रभाजी म. का महाप्रयाण

**दसई, बदनावर (मध्य प्रदेश) :** आत्मार्थी संतरत्न, पूज्य गणाधीश श्री उमेश मुनि जी म. 'अणु' के अंतेवासी शिष्य, बुद्धपुत्र, पू. श्री जिनेन्द्र मुनि जी म. की आज्ञानुवर्ती विदुषी महासती पू. श्री मधुबालाजी के सांसारिक माताजी महासती पू. श्री चारित्रप्रभा जी (माताजी म. सा.) का सोमवार 13-14 नवंबर 2017 के मध्य रात्र करीब ढ़ाई बजे मध्य प्रदेश के धार जिले के बदनावर के समीप दसई गांव में देवलोक गमन हो गया।

आप अत्यंत सरलात्मा, तत्व जिज्ञासु, निरंतर स्वाध्यायलीन रहते हुए समता, समाधिभाव से संयम यात्रा को चरितार्थ कर रहे थे। आप मध्य भारत क्षेत्र में अपने यशस्वी संयम से जन-जन में अनंत श्रद्धा के पात्र थे। गुरुदेव पूज्य श्री उमेश मुनि जी म. 'अणु' के प्रति भी आपकी जिस प्रकार की श्रद्धा, निष्ठा एवं भक्ति रही है, वह निश्चित रूप से अनुकरणीय है।

पूज्या महासती श्री चारित्रप्रभा जी म. नागदा ग्राम, जिला धार के समृद्ध चौधरी परिवार से संबंधित थी। आज भी आपके सुपुत्र श्री सुनीलजी एवं श्री भूपेन्द्रजी चौधरी संघ की सेवाओं में निष्ठापूर्वक योगदान देते रहते हैं। लंबे समय से शारीरिक अशक्तता के बावजूद आप पूज्याश्री जी विहार रत रहे। आपके देवलोक गमन से जिन शासन व श्री धर्मदास गण संघ की ही नहीं श्रमण संघ की भी अपूरणीय क्षति हुई है। जैन कॉन्फ्रेंस परिवार दिवंगत महान आत्मा के प्रति श्रद्धा सुमन व्यक्त करते हुए विनम्र श्रद्धांजलि प्रदान करता है।

**प्रेषक : अविनाश चोरड़िया जैन**

## धर्मनिष्ठ साधिका सौ. केशरदेवीजी जैन बाफना का देवलोक गमन

**झबुआ (मध्य प्रदेश) :** साधिका सौ. केसरदेवीजी जैन बाफना धर्मपत्नी जैन रत्न स्व. श्री रणजीत सिंहजी जैन बाफना का तेले तप की अराधना के साथ-साथ प्रवर्तक पूज्य श्री जिनेन्द्र मुनि जी म. द्वारा प्रदत्त संथारे के साथ देवलोक गमन दिनांक 21-09-2017 को प्रातः 10:08 हो गया। गुणानुवाद सभा का आयोजन दिनांक 02.10.2017 को बाफना निवास पर सम्पन्न हुआ। गुणानुवाद सभा में आचार्य सम्राट पू. डॉ. शिवमुनि जी म., युवाचार्य पू. श्री महेन्द्र ऋषि जी म., पू. श्री संयतमुनि जी म., पू. श्री प्रकाशमुनि जी 'निर्भय', पू. श्री चेतन्यमुनि जी म., पू. श्री प्रवीणा जी म. महासति जी रमणीकुंवर जी म., पू. श्री सुमनप्रभा जी, पू. श्री सयम प्रभाजी म. आदि संत-सतियोगी के पत्रों का वाचन किया गयां

साथ-साथ विभिन्न संघों से पधारे पदाधिकारियों द्वारा केशर देवी बाफना के गुणानुवाद किये सर्व भाविनी बाफना श्रुती गादिया श्री थांदला संघ से श्री जितेन्द्रजी जैन घोड़ावत संघ अध्यक्ष श्री तेजमलजी जैन कावड़िया, त्रिस्तुति संघ अध्यक्ष। श्री सुरेध जी आर्य मंत्री मध्य प्रदेश शासर, श्री हिम्मत जी कोठारी पूर्व गृहमंत्री, म. प्र. शासन श्रीसंघ मेघनगर से श्री रवि जी सुराना, श्री महेश जी डोकलिया इंदौर, श्री सुजानमल जी कोचट्टा जावरा एसपी श्री महेशजी जैन हंसमुखलाल जी गोलेच्छा लिमड़ी, श्रीप्रकाशजी मुणत रतलाम, श्री मनोहरलाल जी काठेड नागदा, भरत जी भंसाली वैभव जी सुरंगे, बदनावर से कुशल जी बोकड़िया द्वारा मातुश्री केशरदेवीजी जैन बाफना का गुणानुवाद किया।

कार्यक्रम का संचालन श्री सुरेशजी जैन कांकरिया द्वारा किया गया आभार प्रदीप बाफना द्वारा किया गया पश्चात गौतम प्रसादी का आयोजन महावीर भवन में संपन्न किया गया। **प्रेषक : बाफना परिवार**

**दिवंगत आत्माओं के प्रति कॉन्फ्रेंस परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि**

एच एस रांका फॅमेली

द्वारा

स्थापित एवम संचालित

# रांका फेमेली फाउन्डेशन्स

आध्यात्म एवम संस्कृति विकास तथा स्वास्थ्य एवम शिक्षा सेवार्थ

## 25 वर्षों से समर्पित (1992-2017)

- आचार्य श्री नानेश सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल - बेलापुर, नवी मुंबई
- आचार्य श्री नानेश बॉयज हॉस्टल - पनवेल, नवी मुंबई
- आचार्य श्री रामेश गर्ल्स हॉस्टल - पनवेल, नवी मुंबई
- आचार्य श्री रामेश डायलिसिस सेंटर - अंधेरी, मुंबई
- महासतीश्री यश वर्किंग वूमन्स हॉस्टल - पनवेल, नवी मुंबई
- रांका भवन (आध्यात्म-विकास) - वर्ली सीफेस, मुंबई
- रांका सदन (जनसेवा-प्रकल्प) - वर्ली, मुंबई
- रांका निकेतन (संस्कृति-विकास) - वर्ली, मुंबई
- शंकर समता भवन (जैन-स्थानक) - भीलवाडा, राजस्थान-सहभागिता
- आचार्य श्री नानेश समता विकास ट्रस्ट - दांता, राजस्थान-सहभागिता
- अन्य समाज सेवी संस्थाओं में सहभागिता/ सहयोग एवम् संचालन

जनसेवा ही जिनेश्वर की सेवा है - स्वर्गीय आचार्य श्री नानेश

RNI NO. - 2123/57
Date of Posting 23-24/11/2017
at Lodhi Road, H.O. New Delhi-110003
नवम्बर 2017, द्वितीय पक्ष

Postal Regn. No. DL(ND) 11/6156/2015-16-17
U(C) 66/2015-17 Licenced to Post
Without Pre-Payment
Date of Printing 20 November, 2017

पधारिये। ।। चिचोंडी (शिराल) – आनंद जन्मभुमि ।। पधारिये।

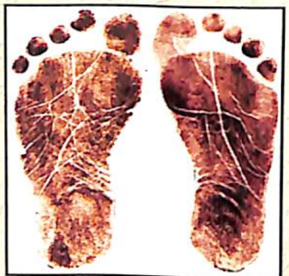

# आनंद चरण तीर्थ

## समर्पण समारोह – रविवार दि. १७ दिसंबर २०१७

### पावन सान्निध्य एवं आशिर्वाद

आनंद तीर्थ प्रेरक पू. श्री. प्रवीणऋषिजी म.सा. आदि ठाणा एवं श्री चरणों में आस्थाशील श्रमण श्रमणी वृंद

जिनके आचरण के चरण से युग पावन बना,
जिनकी दृष्टी से धर्म अध्यात्म की सृष्टी हुअी ।
जिनके वचन वरदान के साथ प्रबोधक थे,
उन्होंने जिस भूमिपर जन्म लिया वह भूमि
भक्तों के लिये ''आनंद तीर्थ'' है ।

उसी भूमि में युगों युगों तक निर्मल, पवित्र, दिव्य आचरण के शक्ति प्रदाता की अनुभूती करने के लिये आपको आमंत्रण!
आनंद चरण के साथ ही व्यक्ति, परिवार एवं समाज में आनंदमय जीवन व्यवस्था के
बहुविध प्रकल्प के प्रथम सोपान का गुरुचरणों में समर्पण समारोह ।

* आनंद चरण तीर्थ * आनंदालय (ज्येष्ठ श्रावकों के लिए)
* तपसाधनालय – सुधर्मा समवशरण सभागृह * भक्त निवास * गौतम प्रसादालय * सेवालय

आनंद तीर्थ के इस प्रथम चरण का समर्पण समारोह के साथ द्वितीय चरण का भूमि शुध्दीकरण कार्यक्रम के भव्य समारोह में आप सहपरिवार आमंत्रित है ! यह समारोह आपका है, भक्तोंकी भक्ती का है, आइए पधारिए सहपरिवार, सभी श्रीसंघ, नव युग निर्माण में सहभागी बनिए ।

* विनित *

## गुरू आनंद फौडेंशन

मोबाईल : ९९२२५८००००, ९३७१०००४०६, ९८५०७१४१६४
स्थान : आनंद तीर्थ, चिचोंडी (शिराल), ता. पाथर्डी, जि. अहमदनगर
टिप : चिचोंडी (शिराल) अहमदनगर से ३१ कि.मी, पूना से १५२ कि. मी. एवं औरंगाबाद से १०५ कि.मी. है।

Advt

मोहनलाल चोपड़ा जैन (राष्ट्रीय अध्यक्ष)
डॉ. अशोककुमार एन.पगारिया जैन (राष्ट्रीय महामंत्री)
महेन्द्र बोकरिया जैन (राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष)

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस
प्रधान कार्यालय : जैन भवन, 12, शहीद भगतसिंह मार्ग, गोल मार्किट, नई दिल्ली-110001

श्री ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस (रजि.) के लिए सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. अशोककुमार एन. पगारिया जैन द्वारा जय भारत प्रिंटिंग प्रेस, 1526, वेस्ट रोहतास नगर, शाहदरा, नई दिल्ली से मुद्रित एवं जैन भवन, 12-शहीद भगतसिंह मार्ग, नई दिल्ली- 110 001 से प्रकाशित